

# यूको पटना दर्पण

पटना अंचल की छमाही गृह पत्रिका (यूको परिवार हेतु)

अंक-5

## डिजिटल परिवर्तन विशेषांक

परंपरा, तकनीक और मानवीय मूल्यों का संगम

**यूको बैंक**

(भारत सरकार का उपक्रम)



**UCO BANK**

(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

## हमारे मुखपृष्ठ के बारे में: बापू टावर – विचारों की एक नई ऊँचाई

स्थान: गर्दनीबाग, पटना

इस अंक के मुखपृष्ठ पर बिहार की राजधानी पटना के गौरव, नवनिर्मित 'बापू टावर' को स्थान दिया गया है। यह संरचना केवल एक स्थापत्य उपलब्धि नहीं है, बल्कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों, आदर्शों और बिहार के साथ उनके ऐतिहासिक जुड़ाव को समर्पित एक जीवंत प्रतीक है। अपने भीतर यह टावर स्वतंत्रता संग्राम की स्मृतियों, नैतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना की वह ऊर्जा संजोए हुए है, जो आज भी हमारे वर्तमान और भविष्य को दिशा देती है।

लगभग 120 फीट की ऊँचाई और गोलाकार स्वरूप वाला यह टावर अपनी बाहरी तांबे की परतों के लिए विख्यात है। समय के साथ तांबे के रंग में होने वाला परिवर्तन इस बात का प्रतीक है कि विकास निरंतर है, फिर भी हमारी जड़ें अपने आदर्शों में गहरी जमी होनी चाहिए। इस टावर की तांबे की दीवारें न केवल सूर्य की रोशनी में दमकती हैं, बल्कि वे टिकाऊपन और सुरक्षा का भी अहसास कराती हैं। टावर के भीतर गांधीजी के जीवन और चंपारण सत्याग्रह की गाथाओं को आधुनिक 'डिजिटल तकनीक' और 'इंटरैक्टिव गैलरी' के माध्यम से जीवंत किया गया है।



जिस प्रकार बापू टावर गांधीजी की सादगी, सत्य और नैतिकता को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ते हुए आगे बढ़ रहा है, उसी प्रकार यूको बैंक भी अपनी समृद्ध विरासत, विश्वास और सेवा की परंपरा को संजोते हुए डिजिटल बैंकिंग के पथ पर अग्रसर है। यह मुखपृष्ठ इस बात का प्रतीक है कि आधुनिकता और परंपरा एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि सही संतुलन के साथ एक-दूसरे के पूरक बन सकते हैं। यह छवि हमें प्रेरित करती है कि नवाचार और प्रगति के शिखर पर पहुँचते हुए भी हम 'अंत्योदय' और 'मानवीय मूल्यों' के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सदैव अक्षुण्ण रखें। डिजिटल बैंकिंग की तेज गति के बीच भी विश्वास, पारदर्शिता और सामाजिक उत्तरदायित्व वही आधार हैं, जिन पर किसी वित्तीय संस्था की साख टिकती है।

इसी भावभूमि पर हमारी पत्रिका 'डिजिटल परिवर्तन विशेषांक' भी यूको बैंक की ऐतिहासिक यात्रा और भविष्य की डिजिटल क्रांति के बीच एक सशक्त सेतु का कार्य कर रही है। यह टावर हमें याद दिलाता है कि प्रगति के शिखर पर पहुँचकर भी हमें अपने मूल्यों और नैतिकता को कभी नहीं भूलना चाहिए। जैसे तांबा समय के साथ और भी निखरता है, वैसे ही हमारा यूको बैंक भी दशकों के अनुभव के साथ डिजिटल युग में और अधिक सुदृढ़ होकर निखरा है। बापू टावर की यह ऊँचाई हमें निरंतर ऊँचे लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने की प्रेरणा देती है। यह विशेषांक केवल तकनीकी प्रगति का दस्तावेज़ नहीं, बल्कि उस दृष्टि का प्रतिबिंब है जिसमें नवाचार को मूल्यों के साथ जोड़ा गया है। जैसे बापू टावर अपनी परंपरागत जड़ों को आधुनिक अभिव्यक्ति देता है, वैसे ही यह विशेषांक बैंकिंग के बदलते स्वरूप को मानवीय दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करता है।

**सच्ची प्रगति वही है, जो विचारों की ऊँचाई, मूल्यों की दृढ़ता और तकनीक की शक्ति—तीनों को साथ लेकर आगे बढ़े।**

सभी स्टाफ सदस्यों से अनुरोध है कि वे अपनी रचनाएँ यथा कविता, बैंकिंग संबंधी लेख, बैंकिंग समसामयिक घटनाक्रम या उत्कृष्ट कार्य संबन्धित जानकारी व तस्वीर पटना अंचल की गृह-पत्रिका में प्रकाशित कराने हेतु भेजें। शाखा प्रमुखों से निवेदन है कि उनकी शाखाओं में होने वाले कार्यक्रमों, ग्राहक बैठक, उच्च-अधिकारियों के दौरों की रिपोर्टिंग व तस्वीर अंचल कार्यालय को भेजें ताकि इसे पत्रिका के अगले अंक में शामिल किया जा सके।

## संपादक मण्डल

## सूची

### संरक्षक

श्री मोतीलाल बानोत  
उप महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख

### प्रधान संपादक

श्री श्रीकांत सिंह  
सहायक महाप्रबंधक व उप-अंचल प्रमुख

### परामर्श मण्डल

श्री रोहन कुमार, मुख्य प्रबन्धक  
श्री देवेन्द्र कुमार, मुख्य प्रबन्धक  
श्री मैनाक चटर्जी, मुख्य प्रबन्धक

### संपादक

श्रवण कुमार मिश्रा  
वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)

### संपादकीय पता

यूको बैंक  
राजभाषा विभाग,  
अंचल कार्यालय, पटना  
मौर्य लोको कॉम्प्लेक्स, पटना  
ई-मेल : zopatna.ol@uco.bank.in

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	अंचल प्रमुख का संदेश	2
2	उप अंचल प्रमुख का संदेश	3
3	मुख्य प्रबन्धक का संदेश	4
4	मुख्य प्रबन्धक का संदेश	5
5	मुख्य प्रबन्धक का संदेश	6
6	मुख्य प्रबन्धक का संदेश	7
7	मुख्य प्रबन्धक का संदेश	8
8	संपादकीय	9
9	बिहार सरकार और बैंकों के बीच ऐतिहासिक एमओयू	10
10	चनपटिया में यूको बैंक की नई शाखा का शुभारंभ	12
11	आरबीआई नामित विदेशक डॉ. एस. पी. मोहंती का प्रेरक दौरा	13
12	स्वतन्त्रता दिवस समारोह	14
13	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : भविष्य का बैंकर	15
14	व्यंग्य : जब बैंक 'बादलों' (क्लाउड) पर चला गया	16
15	व्यंग्य : जब मोबाइल बना 'बैंक बावू'	17
16	साइबर अपराध	18
17	स्क्रीन के उस पार छिपा अपराध	20
18	डिजिटल अरेस्ट: भय की अदृश्य हथकड़ियाँ	22
19	शब्दों से स्क्रीन तक: साहित्य का बदलता सफर	23
20	सुविधा से अति तक: स्मार्टफोन की कहानी	25
21	राजभाषा ज्ञान प्रश्नावली	27
22	छवि संग्रह	28
23	यूको बैंक :: समाचार पत्रों में	30
24	साइबर सुरक्षा: डिजिटल बैंकिंग युग की अनिवार्य ढाल	32
25	लघु कथा : दादी की डिजिटल दीवाली	34
26	प्रेरक प्रसंग : एक क्लिक से बदली किस्मत	35
27	ज्ञान-कोष : डिजिटल बैंकिंग शब्दावली	36
28	बैंकिंग डायरी : शून्य से शिखर का 'डिजिटल' सेतु	37
29	भाषा-सरोकार : मैथिली : एक समृद्ध विरासत	38
30	भाषा-सरोकार : डिजिटल दौर में पढ़ाइ-लिखाइ आ जीवनक संतुलन	39
31	भाषा-सरोकार : डिजिटल बैंकिंग: जब बैंक मोबाइल में समा गइल	40
32	अनुशासन और जिम्मेदारी : सशक्त संस्था की आधारशिला	41
33	आत्मीय संबंध : स्मृतियों का निवेश	42
34	जब बैंक बोलता है — डिजिटल युग में एक आत्मकथा	44
35	डिजिटल बैंकिंग : विश्वास के साथ बदलाव	45
36	उपन्यास की समीक्षा : 'पिंजर' - स्त्री अस्मिता और विभाजन	46
37	स्क्रीन के उस पार—ऋण वसूली का मानवीय पक्ष और डिजिटल	47
38	फाइलों से फोन और अब स्क्रीन तक	49
39	सुविधा से संतुलन तक: डिजिटल जीवन की नई समझ	52

## अंचल प्रमुख का संदेश



प्रिय साथियो,

अंचल की छमाही पत्रिका का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अवसर पर मैं आप सभी को पत्रिका के माध्यम से संबोधित करते हुए गर्व और संतोष का अनुभव कर रहा हूँ। किसी भी संस्था की सशक्त पहचान उसके विचार, उसके कर्म और उसकी अभिव्यक्ति से बनती है। बैंक केवल वित्तीय लेन-देन का माध्यम नहीं होता, बल्कि वह समाज के आर्थिक, सामाजिक और नैतिक विकास का सहभागी होता है। इसी भावभूमि पर हमारी यह पत्रिका न केवल अंचल की गतिविधियों का दस्तावेज है, बल्कि हमारे सामूहिक चिंतन और संकल्प का भी प्रतिबिंब है।

वर्तमान समय में बैंकिंग क्षेत्र तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। ग्राहक अपेक्षाएँ बदल रही हैं, तकनीक नई संभावनाएँ खोल रही है और प्रतिस्पर्धा पहले से कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण हो गई है। ऐसे समय में हमारा दायित्व केवल लक्ष्य प्राप्ति तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि हमें सतत, संतुलित और गुणवत्तापूर्ण कारोबार वृद्धि की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहना होता है। इसके साथ ही, आंतरिक प्रक्रियाओं की दक्षता, जोखिम प्रबंधन, एनपीए नियंत्रण और डिजिटल उत्पादों के प्रभावी उपयोग पर निरंतर ध्यान देना आवश्यक है। जब व्यवसायिक विवेक और अनुशासन साथ चलते हैं, तभी बैंक दीर्घकालिक सफलता की ओर अग्रसर होता है।

मैं हिंदी के प्रयोग को लेकर विशेष रूप से कुछ कहना चाहूँगा। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारे विचारों, भावनाओं और मूल्यों की संवाहक है। बैंकिंग जैसे तकनीकी और औपचारिक क्षेत्र में भी यदि हम सरल, सुस्पष्ट और प्रभावी हिंदी का प्रयोग बढ़ाते हैं, तो न केवल ग्राहकों से संवाद सहज होता है, बल्कि कार्यस्थल की आत्मीयता भी बढ़ती है। हमें यह समझना होगा कि हिंदी का प्रयोग किसी भाषा के विरोध में नहीं, बल्कि संपर्क और समावेशन के पक्ष में है। जब ग्राहक अपनी भाषा में बैंक को समझता है, तो उसका भरोसा स्वतः गहरा होता है।

अंत में, मैं यह कहना चाहूँगा कि हमारी वास्तविक शक्ति हमारी टीम है। जब उद्देश्य स्पष्ट हो, संवाद सशक्त हो और प्रयास ईमानदार हों, तो कोई भी लक्ष्य दूर नहीं रहता। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अंचल की समर्पित टीम अपने परिश्रम, नवाचार और सकारात्मक सोच से बैंक को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगी। इस पत्रिका के माध्यम से जुड़े सभी सहयोगियों को मेरी शुभकामनाएँ। यह मंच हमारे अनुभवों, विचारों और उपलब्धियों को साझा करने का सशक्त माध्यम बने।

शुभकामनाओं सहित,

**मोतीलाल बनोत**  
अंचल प्रमुख

## उप अंचल प्रमुख का संदेश



प्रिय साथियो,

अंचल की छमाही पत्रिका “यूको पटना दर्पण” के इस नवीनतम अंक के साथ मुझे यह कहते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि यह पत्रिका यूको परिवार की रचनात्मक चेतना, अभिव्यक्ति और भावनाओं का एक उत्कृष्ट प्रतिबिंब बन चुका है।

बैंकिंग केवल धन के प्रवाह की व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह विश्वास, सुविधा और समयबद्ध सेवा का संगठित रूप है। आज जब तकनीक जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है, तब बैंकिंग भी एक नए स्वरूप में हमारे सामने उपस्थित है—जहाँ शाखा, ग्राहक और प्रणाली के बीच की दूरी निरंतर कम होती जा रही है।

डिजिटल बैंकिंग अब भविष्य की अवधारणा नहीं, बल्कि वर्तमान की आवश्यकता है। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई, एटीएम, माइक्रो-एटीएम, डिजिटल ऋण प्रक्रियाएँ और ई-केवाईसी जैसी सुविधाओं ने बैंकिंग को अधिक सुलभ, पारदर्शी और त्वरित बना दिया है। अंचल की शाखाओं द्वारा डिजिटल उत्पादों को अपनाने और ग्राहकों तक पहुँचाने के लिए किए गए प्रयास प्रशंसनीय हैं, परंतु अभी संभावनाओं का क्षेत्र और भी विस्तृत है।

इसी संदर्भ में यह पत्रिका एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके लेख, अनुभव-साझा और विश्लेषणात्मक विषय ज्ञानवर्धन करते हैं। पत्रिका का विषयवस्तु बैंकिंग के व्यावहारिक पहलुओं, डिजिटल परिवर्तन, ग्राहक सेवा और संस्थागत मूल्यों को समाहित करता है, जो इसे मात्र एक प्रकाशन नहीं, बल्कि एक सीखने का मंच बनाता है। डिजिटल प्रगति के साथ-साथ भाषा का प्रश्न भी उतना ही महत्वपूर्ण है। तकनीक तभी प्रभावी होती है, जब वह ग्राहकों की भाषा में संवाद करे।

मुझे विश्वास है कि हम नवाचार, तकनीकी दक्षता और सकारात्मक सोच के साथ इस परिवर्तन को अवसर में बदलेंगे। यह पत्रिका उस सामूहिक यात्रा का साक्ष्य है, जिसमें हम सीखते भी हैं और सिखाते भी हैं। आप सभी को कारोबारी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अनंत शुभकामनाएँ !

श्रीकान्त सिंह  
उप अंचल प्रमुख

## मुख्य प्रबन्धक का संदेश



प्रिय सहकर्मियों,

किसी भी बैंकिंग संस्था की सुदृढ़ता केवल उसके व्यवसाय विस्तार से नहीं, बल्कि उसके अनुशासित संचालन से भी निर्धारित होती है। इस दृष्टि से ऋण निगरानी और अनुपालन बैंक के दो ऐसे स्तम्भ हैं जो संस्थान की विश्वसनीयता, स्थिरता और दीर्घकालिक विकास को सुनिश्चित करते हैं।

ऋण वितरण बैंकिंग गतिविधियों का महत्वपूर्ण अंग है, परंतु ऋण की गुणवत्ता बनाए रखना उससे भी अधिक आवश्यक है। प्रभावी ऋण निगरानी से न केवल परिसंपत्तियों की गुणवत्ता सुरक्षित रहती है, बल्कि समय पर सुधारात्मक कदम उठाकर संभावित जोखिमों को भी नियंत्रित किया जा सकता है। नियमित समीक्षा, समयबद्ध फॉलो-अप, दस्तावेजों की शुद्धता तथा खातों की सतत निगरानी—ये सभी पहलू बैंक को सुदृढ़ बनाते हैं और ग्राहक तथा बैंक दोनों के हितों की रक्षा करते हैं।

इसी प्रकार, अनुपालन बैंकिंग व्यवस्था की रीढ़ है। नियामकीय निर्देशों, आंतरिक नीतियों और प्रक्रियाओं का पालन केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि एक ऐसी संस्कृति है जो पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देती है। जब हम अनुपालन को अपने दैनिक कार्य व्यवहार का हिस्सा बना लेते हैं, तब संस्था की प्रतिष्ठा और भरोसा स्वतः सुदृढ़ होता है।

इन सभी कार्यों के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी का प्रयोग भी हमारी कार्यसंस्कृति का अभिन्न अंग है। राजभाषा का प्रयोग प्रशासनिक कार्यों को जनोन्मुख बनाता है तथा हमारे संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति में सहायक होता है।

आइए, हम सभी मिलकर ऋण अनुशासन, अनुपालना संस्कृति और राजभाषा हिन्दी के प्रयोग—इन तीनों को अपने कार्य व्यवहार में और अधिक सशक्त बनाएं। यही हमारी संस्था की मजबूती और प्रगति का आधार है।

आप सभी को शुभकामनाएँ।

**रोहन कुमार**  
मुख्य प्रबन्धक

## मुख्य प्रबन्धक का संदेश



प्रिय सहकर्मीयों,

वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य में खुदरा ऋण क्षेत्र बैंकिंग व्यवसाय का एक प्रमुख और गतिशील आयाम बन चुका है। बदलती आर्थिक परिस्थितियों, बढ़ती आय संभावनाओं तथा जीवन-शैली में आए परिवर्तनों ने लोगों की खपत प्रवृत्ति को भी प्रभावित किया है। आज उपभोक्ता केवल बचत पर ही नहीं, बल्कि अपनी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए योजनाबद्ध खर्च पर भी ध्यान दे रहे हैं। आवास, शिक्षा, वाहन, उपभोक्ता वस्तुएँ और डिजिटल सेवाएँ—इन सभी क्षेत्रों में खुदरा ऋण की भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है।

ऐसे समय में बैंकों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वे ग्राहकों को पारदर्शी, त्वरित और जिम्मेदार ऋण सेवाएँ प्रदान करें। खुदरा ऋण केवल व्यवसाय वृद्धि का साधन नहीं, बल्कि ग्राहकों के जीवन स्तर में सुधार और अर्थव्यवस्था की गति को बनाए रखने का भी एक प्रभावी माध्यम है। उचित आकलन, समयबद्ध प्रसंस्करण, ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण तथा जोखिम के संतुलित प्रबंधन से ही हम इस क्षेत्र को स्वस्थ और टिकाऊ बना सकते हैं।

इन सभी कार्यों के साथ राजभाषा हिन्दी का प्रयोग हमारी कार्यकुशलता और ग्राहक-संपर्क दोनों को सुदृढ़ बनाता है। जब हम ऋण संबंधी जानकारी, प्रपत्र और संवाद हिन्दी में भी उपलब्ध कराते हैं, तो ग्राहकों के लिए बैंकिंग प्रक्रिया अधिक सरल, सहज और भरोसेमंद बनती है। राजभाषा का प्रयोग न केवल हमारे संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करता है, बल्कि बैंकिंग सेवाओं को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आइए, हम सब मिलकर खुदरा ऋण क्षेत्र को और अधिक सुदृढ़, पारदर्शी और ग्राहक-हितैषी बनाएं तथा राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को अपनी कार्यसंस्कृति का स्वाभाविक हिस्सा बनाएं। यही हमारी संस्था की प्रगति और ग्राहकों के विश्वास की आधारशिला है।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

**मैनाक चटर्जी**  
मुख्य प्रबन्धक

## मुख्य प्रबन्धक का संदेश



प्रिय सहकर्मीयों,

भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना में एमएसएमई और कृषि ऋण दोनों ही ऐसे क्षेत्र हैं जो विकास की गति को निरंतर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक ओर एमएसएमई क्षेत्र रोजगार सृजन, नवाचार और स्थानीय उद्योगों के विस्तार का प्रमुख आधार है, तो दूसरी ओर कृषि हमारे देश की जीवनरेखा है, जो न केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सशक्त बनाती है।

वर्तमान समय में एमएसएमई क्षेत्र अर्थव्यवस्था की गति को बनाए रखने वाला इंजन बनकर उभरा है। छोटे और मध्यम उद्यमों को समय पर वित्तीय सहायता, कार्यशील पूंजी और तकनीकी उन्नयन के लिए ऋण उपलब्ध कराना बैंकिंग प्रणाली की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। जब हम इन इकाइयों को सुदृढ़ करते हैं, तब स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और आर्थिक गतिविधियाँ तेज होती हैं। इसी प्रकार, कृषि क्षेत्र को सुलभ और समयबद्ध ऋण उपलब्ध कराकर हम किसानों को आत्मनिर्भर बनने में सहयोग देते हैं तथा ग्रामीण विकास को गति प्रदान करते हैं।

एमएसएमई और कृषि ऋण के क्षेत्र में कार्य करते हुए यह आवश्यक है कि हम संवेदनशीलता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें। ऋण स्वीकृति से लेकर निगरानी और समय पर पुनर्भुगतान तक प्रत्येक चरण में संतुलित दृष्टिकोण अपनाना ही बैंक और ग्राहक—दोनों के हित में है।

आइए, हम सभी मिलकर एमएसएमई और कृषि ऋण के माध्यम से आर्थिक विकास को गति दें तथा राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को अपने दैनिक कार्यों का स्वाभाविक हिस्सा बनाएं। यही हमारी संस्था की प्रगति और सामाजिक उत्तरदायित्व की सच्ची अभिव्यक्ति है।

आप सभी को शुभकामनाएँ।

**देवेंद्र कुमार**  
मुख्य प्रबन्धक

## मुख्य प्रबन्धक का संदेश



प्रिय सहकर्मीयों,

बैंकिंग व्यवस्था की मजबूती केवल नए व्यवसाय के विस्तार से ही नहीं, बल्कि पहले से दिए गए ऋणों की स्वस्थ वसूली और सुदृढ़ प्रशासनिक प्रबंधन से भी निर्धारित होती है। फँसी हुई राशि की वसूली आज के बैंकिंग परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन गई है।

वर्तमान समय में एनपीए न केवल बैंक की वित्तीय स्थिति को प्रभावित करती हैं, बल्कि संस्थान के मनीबल और संसाधनों पर भी दबाव डालती हैं। अतः प्रभावी वसूली प्रयास बैंक की सेहत सुधारने और नए ऋण वितरण की क्षमता बनाए रखने के लिए अनिवार्य हैं।

वसूली की प्रक्रिया केवल कानूनी कार्रवाई तक सीमित नहीं है; इसमें नियमित फॉलो-अप, ग्राहक से संवाद, समझौता समाधान और समयबद्ध कार्रवाई जैसे अनेक आयाम शामिल हैं। जब हम संवेदनशीलता और दृढ़ता के संतुलन के साथ वसूली कार्य करते हैं, तब बैंक की परिसंपत्तियों की गुणवत्ता सुधरती है और संस्था की विश्वसनीयता मजबूत होती है।

इसी के साथ सामान्य प्रशासन का दायित्व भी उतना ही महत्वपूर्ण है। शाखाओं का स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित वातावरण, अभिलेखों का समुचित रख-रखाव तथा आंतरिक परिचालन व्यय पर नियंत्रण—ये सभी तत्व बैंक के कुशल संचालन के आधार हैं। जब शाखाएँ स्वच्छ, अनुशासित और संसाधन-संतुलित होती हैं, तब कार्यकुशलता बढ़ती है और ग्राहकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण तथा संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग संस्था को अधिक सक्षम और प्रतिस्पर्धी बनाता है।

आइए, हम सभी मिलकर वसूली प्रयासों को और अधिक प्रभावी बनाएं, एनपीए के बोझ को कम करें, सामान्य प्रशासन को सुदृढ़ रखें तथा राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को अपने दैनिक कार्यों में अपनाएं। यही हमारे बैंक की मजबूती और सतत प्रगति का आधार है।

आप सभी को शुभकामनाएँ।

**गजेंद्र कुशवाहा**  
मुख्य प्रबन्धक

## मुख्य प्रबन्धक का संदेश



प्रिय सहकर्मियों,

बैंकिंग बैंकिंग के बदलते परिवेश में संसाधनों का संतुलित प्रबंधन और आय के विविध स्रोतों को सुदृढ़ करना समय की प्रमुख आवश्यकता बन गया है। संसाधन संप्रभाग के अंतर्गत जमा राशि तथा बीमा व्यवसाय—दोनों ही बैंक की वित्तीय मजबूती के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं।

वर्तमान परिदृश्य में यह देखा जा रहा है कि विशेषकर बचत बैंक खातों में जमा राशि की वृद्धि की गति अपेक्षाकृत धीमी हो रही है। जबकि बैंक के लिए बचत एवं चालू खातों में उपलब्ध जमा राशि अत्यंत मूल्यवान होती है, क्योंकि यह अपेक्षाकृत कम ब्याज दर पर प्राप्त होती है और बैंक की निवल ब्याज आय को सुदृढ़ करती है। अतः ग्राहकों के साथ सक्रिय संपर्क, सेवा की गुणवत्ता और विश्वासपूर्ण संबंधों के माध्यम से कासा जमा को बढ़ाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। मजबूत जमा आधार बैंक की दीर्घकालिक स्थिरता और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को सुनिश्चित करता है।

इसके साथ-साथ बीमा उत्पादों का विपणन भी बैंक के लिए आय का एक महत्वपूर्ण और सतत स्रोत बनकर उभरा है। बीमा की बिक्री से प्राप्त होने वाला कमीशन बैंक की गैर-ब्याज आय को बढ़ाता है, जिससे संस्थान की समग्र लाभप्रदता में वृद्धि होती है। जब हम ग्राहकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप बीमा समाधान उपलब्ध कराते हैं, तब हम केवल उत्पाद नहीं बेचते, बल्कि उनके जीवन और संपत्ति की सुरक्षा का भरोसा भी देते हैं। इस प्रकार, बीमा व्यवसाय बैंक के लिए आय का स्रोत होने के साथ-साथ ग्राहक सेवा का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है।

आइए, हम सभी मिलकर जमा संसाधनों को सुदृढ़ करने, बीमा व्यवसाय को बढ़ावा देने और राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को अपनी कार्यशैली का स्वाभाविक हिस्सा बनाने का संकल्प लें। यही हमारी संस्था की मजबूती, लाभप्रदता और ग्राहक विश्वास का आधार है।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

**शालिनी कुमारी**  
मुख्य प्रबन्धक

## संपादकीय : एक दिन शाखा में

सुबह शाखा समय से कुछ पहले खुल गई थी। शटर आधा उठा हुआ था और भीतर की रोशनी बाहर तक फैल रही थी। काउंटर के पास बैठा एक युवा कर्मचारी कंप्यूटर चालू कर रहा था, स्क्रीन पर धीरे-धीरे बैंक का लोगो उभर रहा था—मानो दिन की गतिविधियों का मौन शुभारंभ कर रहा हो। मशीनों की हल्की-सी आवाज़, फाइलों की सधी हुई गंध और चाय के पहले घूंट के साथ शाखा एक नए दिन के लिए स्वयं को तैयार कर रही थी।



थोड़ी देर में पहला ग्राहक आया। हाथ में पासबुक थी, चेहरे पर झिझक और आँखों में सवाल।

“बेटा, मोबाइल से पैसा कैसे भेजते हैं?”

कर्मचारी ने मुस्कराकर कुर्सी आगे खिसका दी।

“बैठिए, आज सीख लीजिए, फिर किसी पर निर्भर नहीं रहेंगे।”

यह कोई बड़ी घटना नहीं थी, पर यहीं से बैंकिंग की असली कहानी शुरू होती है—जहाँ भरोसा तकनीक से मिलता है और सेवा इंसानियत से। शाखा धीरे-धीरे भरने लगी। कहीं किसान अपने खेत के लिए ऋण की बात कर रहा था, कहीं छोटा व्यवसायी अगले विस्तार की योजना साझा कर रहा था। कागज, स्क्रीन, अंगूठे के निशान और हस्ताक्षर—सब मिलकर एक जीवंत दृश्य रच रहे थे। हर लेन-देन के पीछे कोई न कोई सपना था और बैंक उन सपनों का मौन सहभागी बनकर खड़ा था।

दोपहर के आसपास एक वरिष्ठ नागरिक आए। उन्होंने मुस्कराकर कहा—“पहले बैंक मतलब लाइन, अब बैंक मतलब सुविधा।” यह एक वाक्य था, पर इसमें वर्षों का परिवर्तन छिपा था। शाम होते-होते शाखा का शोर कम हो गया। कर्मचारी थके थे, पर संतुष्ट। काउंटर और कंप्यूटर बंद हो रहे थे, पर काम का असर बाहर तक जा चुका था—खेतों में, दुकानों में, घरों में।

उसी समय यह पत्रिका हमारे हाथों में आती है। यह केवल छपे हुए पत्रों का संग्रह नहीं, बल्कि उन्हीं दिनों की गूँज है। हर लेख किसी शाखा की सुबह है, हर अनुभव किसी कर्मचारी की कोशिश और हर विचार उस भरोसे का प्रतिबिंब है, जो ग्राहक बैंक पर करता है। यह संपादकीय किसी दिशा-निर्देश की तरह नहीं, बल्कि एक निमंत्रण है—सोचने का, समझने का और आगे बढ़ने का। डिजिटल बैंकिंग की नई राह हो या परंपरागत सेवा की सुदृढ़ नींव—दोनों के बीच संतुलन ही हमारी पहचान है।

जब हम हिंदी में लिखते हैं, तो केवल भाषा का प्रयोग नहीं करते, बल्कि अपने ग्राहकों से सीधा संवाद स्थापित करते हैं। जब हम तकनीक अपनाते हैं, तो सुविधा के साथ विश्वास भी देते हैं और जब हम टीम के रूप में काम करते हैं, तो बैंक केवल संस्था नहीं रहता—वह समाज का साथी बन जाता है। यह पत्रिका उसी साथीपन की कहानी है। शाखा की सुबह से लेकर ग्राहक की मुस्कान तक की यात्रा और हम सब हैं उसके पात्र।

अंत में, मैं सभी लेखकों, पाठकों और संपादकीय सहयोगियों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इस अंक को आकार देने में अपना समय, श्रम और रचनात्मक ऊर्जा समर्पित की। आशा है कि यह विशेषांक पाठकों को न केवल जानकारी देगा, बल्कि उन्हें उस भरोसे और सेवा की अनुभूति भी कराएगा, जो हमारी बैंकिंग की मूल आत्मा है।

सप्रेम,

श्रवण कुमार मिश्रा,

वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)

# बिहार सरकार और बैंकों के बीच ऐतिहासिक एमओयू

सरकारी कर्मचारियों को उन्नत बैंकिंग सुविधाओं का विस्तार

दिनांक 7 जुलाई, 2025 को बिहार सरकार ने अपने कर्मचारियों और मंत्रिपरिषद के सदस्यों को बेहतर, सुरक्षित और आधुनिक बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए राष्ट्रीयकृत बैंकों के साथ एक व्यापक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह पहल राज्य के लाखों कर्मचारियों के वित्तीय सशक्तिकरण, सुरक्षा तथा सुविधाजनक बैंकिंग सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से की गई है।

इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की अध्यक्षता बिहार के उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री श्री सम्राट चौधरी ने की। कार्यक्रम में राज्य सरकार के वित्त विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

इस अवसर पर यूको बैंक के प्रधान कार्यालय से महाप्रबंधक श्री अमित श्रीवास्तव जी विशेष रूप से उपस्थित रहे। यूको बैंक ने राज्य के कर्मचारियों को विशेष बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इस एमओयू पर हस्ताक्षर करते हुए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।



इस पहल का उद्देश्य केवल वेतन वितरण की प्रक्रिया को सुगम बनाना नहीं है, बल्कि कर्मचारियों और उनके परिवारों को व्यापक वित्तीय सुरक्षा, ऋण सुविधाएँ, बीमा कवर तथा डिजिटल बैंकिंग सेवाओं का समग्र पैकेज उपलब्ध कराना भी है। वित्त मंत्री श्री सम्राट चौधरी ने कहा कि यह समझौता कर्मचारियों की आर्थिक सुरक्षा और वित्तीय सशक्तिकरण की दिशा में एक ठोस और दूरदर्शी कदम है। उन्होंने यह भी कहा कि कर्मचारी अपनी सुविधा और पसंद के अनुसार इनमें से किसी भी बैंक का चयन कर सकते हैं, जिससे प्रतिस्पर्धी और ग्राहक-केंद्रित सेवाओं को बढ़ावा मिलेगा।

यूको बैंक की ओर से इस महत्वपूर्ण एमओयू पर पटना अंचल के अंचल प्रबंधक श्री मोतीलाल बानोत ने हस्ताक्षर किए। यह साझेदारी यूको बैंक की राज्य सरकार के कर्मचारियों को उच्च स्तरीय बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अधिकारियों ने इस पहल को राज्य के कर्मचारियों के लिए अत्यंत लाभकारी बताते हुए इसकी सराहना की।

यूको बैंक द्वारा प्रदान किए जा रहे विशेष वेतन खाते 'यूको सुविधा सैलरी अकाउंट' के अंतर्गत कर्मचारियों को शून्य शेष पर खाता खोलने की सुविधा दी जा रही है। कर्मचारियों को एक करोड़ रुपये तक का निःशुल्क व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा कवर उपलब्ध कराया जा रहा है, जो आकस्मिक परिस्थितियों में आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करेगा। इसके अतिरिक्त, गृह ऋण एवं वाहन ऋण पर प्रोसेसिंग शुल्क में पूर्ण छूट तथा ब्याज दरों में रियायत की सुविधा भी दी जा रही है। वेतन के आधार पर तीन लाख रुपये तक की ओवरड्राफ्ट सुविधा, निःशुल्क अंतरराष्ट्रीय डेबिट कार्ड, असीमित चेकबुक, मुफ्त एसएमएस अलर्ट और ऑनलाइन फंड ट्रांसफर जैसी सुविधाएँ भी कर्मचारियों को उपलब्ध कराई जाएंगी। एमओयू के अंतर्गत कर्मचारियों के लिए व्यापक बीमा सुरक्षा का प्रावधान किया गया है।

सामान्य दुर्घटना बीमा चालीस लाख से एक करोड़ रुपये तक तथा हवाई यात्रा दुर्घटना बीमा भी प्रदान किया जाएगा।

डिजिटल परिवर्तन विशेषांक के परिप्रेक्ष्य में यह एमओयू केवल प्रशासनिक औपचारिकता नहीं, बल्कि सुशासन और तकनीकी नवाचार की दिशा में एक दूरदर्शी पहल के रूप में देखा जाना चाहिए। वर्तमान युग में जब शासन व्यवस्था का केंद्रबिंदु पारदर्शिता, त्वरित सेवा और डिजिटल दक्षता बन चुका है, तब इस प्रकार के समझौते राज्य सरकार और बैंक के बीच एक सशक्त डिजिटल साझेदारी को स्थापित करते हैं।

राज्य सरकार के साथ संपन्न एमओयू केवल सेवा विस्तार का माध्यम नहीं, बल्कि बैंक के लिए दीर्घकालिक व्यावसायिक सुदृढ़ता और ग्राहक आधार विस्तार का महत्वपूर्ण अवसर है। यह समझौता बैंक के लिए यह बहुआयामी लाभ का द्वार खोलता है। सरकारी विभागों के वेतनभोगी कर्मचारी बैंक के लिए एक विश्वसनीय और नियमित आय वाले ग्राहक वर्ग होते हैं। उनके वेतन खाते बैंक में नियमित मासिक जमा सुनिश्चित करते हैं, जिससे कासा जमा में स्वाभाविक वृद्धि होती है। यह बैंक की कम लागत वाली निधि को सुदृढ़ करता है और समग्र लाभप्रदता में सहायक होता है। वेतनभोगी ग्राहक बैंक के लिए क्रॉस सेलिंग के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। नियमित आय और स्थिर सेवा प्रोफ़ाइल के कारण उन्हें विभिन्न उत्पादों की पेशकश सरल एवं प्रभावी ढंग से की जा सकती है। इस प्रकार, एक वेतन खाता केवल जमा खाता न रहकर बहुआयामी बैंकिंग संबंध का आधार बन जाता है।

**“जब शासन की नीतियाँ और बैंकिंग की तकनीक एक साथ कदम बढ़ाती हैं, तब डिजिटल परिवर्तन केवल लक्ष्य नहीं रहता—वह जनविश्वास, पारदर्शिता और समावेशी विकास का सशक्त माध्यम बन जाता है।”**

जब किसी राज्य सरकार के साथ बैंक की औपचारिक साझेदारी होती है, तो इससे बैंक की विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। सरकारी कर्मचारियों एवं लाभार्थियों के माध्यम से बैंक की सकारात्मक छवि समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचती है। यह अप्रत्यक्ष रूप से नए खातों के उद्घाटन और व्यवसाय वृद्धि में सहायक होता है।

वेतनभोगी ग्राहकों को प्रदान किए गए ऋण सामान्यतः कम जोखिम वाले माने जाते हैं, क्योंकि उनकी आय नियमित और स्थाई होती है। इससे बैंक का एनपीए अनुपात नियंत्रित रखने में सहायता मिलती है तथा सुरक्षित ऋण वृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है।

इस प्रकार, राज्य सरकार के साथ किया गया एमओयू बैंक के लिए केवल प्रशासनिक दायित्व नहीं, बल्कि रणनीतिक व्यावसायिक अवसर है। यह ग्राहक आधार विस्तार, क्रॉस सेलिंग, डिजिटल सक्रियता, कम लागत वाली जमा वृद्धि तथा गुणवत्तापूर्ण ऋण पोर्टफोलियो—इन सभी आयामों में बैंक को सशक्त बनाता है। यह न केवल प्रशासनिक कार्यप्रणाली को आधुनिक बनाएगा, बल्कि राज्य के समावेशी और सतत विकास की आधारशिला को भी सुदृढ़ करेगा।

समग्र रूप से यह एमओयू राज्य सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के बीच सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इससे कर्मचारियों को आधुनिक बैंकिंग सेवाओं तक आसान पहुँच मिलेगी, साथ ही वित्तीय समावेशन और आर्थिक सुरक्षा को भी मजबूती मिलेगी। यूको बैंक की सक्रिय भागीदारी और नेतृत्व इस पहल को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह समझौता राज्य के कर्मचारियों के लिए एक सशक्त और सुरक्षित वित्तीय भविष्य की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध होगा तथा बैंकिंग सेवाओं के विस्तार और गुणवत्तापूर्ण वितरण में भी नई ऊर्जा का संचार करेगा।

सही साझेदारी जब रणनीतिक दृष्टि से की जाए, तो वह सेवा से आगे बढ़कर स्थायी व्यावसायिक विकास का आधार बन जाती है।

# चनपटिया में यूको बैंक की नई शाखा का शुभारंभ

## वित्तीय समावेशन और स्थानीय विकास को नई गति

दिनांक 14 अगस्त, 2025 को पश्चिम चंपारण जिला के चनपटिया में यूको बैंक की नई शाखा का विधिवत उद्घाटन किया गया। यह अवसर क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है, क्योंकि नई शाखा के खुलने से स्थानीय नागरिकों, छोटे व्यापारियों, किसानों तथा स्वयं सहायता समूहों को सुलभ बैंकिंग सेवाएँ प्राप्त होंगी और वित्तीय समावेशन को नई गति मिलेगी।

शाखा का उद्घाटन बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अश्वनी कुमार द्वारा आभासी माध्यम से किया गया। अपने संदेश में उन्होंने कहा कि यूको बैंक अपने स्थापना वर्ष 1943 से ही देशभर में विश्वसनीय बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करते हुए राष्ट्र की आर्थिक प्रगति में सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि चनपटिया में नई शाखा के प्रारंभ होने से बैंक की सेवाएँ अधिकाधिक लोगों तक पहुँचेंगी और क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिलेगा।



इस अवसर पर बैंक के पटना अंचल के अंचल प्रमुख श्री मोतीलाल बानोत, बैंक के अधिकारी एवं कर्मचारी, स्थानीय व्यापारी, उद्यमी तथा क्षेत्र के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने नई शाखा के उद्घाटन का स्वागत करते हुए इसे क्षेत्र के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए अंचल प्रमुख श्री बानोत ने कहा कि बैंक देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और बदलते आर्थिक परिवेश में बैंकिंग सेवाओं की पहुँच को गाँव-गाँव और कस्बों तक विस्तारित करना समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि छोटे व्यापार, सूक्ष्म उद्योग, कृषि और स्वरोजगार को सशक्त बनाने में बैंकिंग प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस दृष्टि से चनपटिया में नई शाखा का खुलना न केवल ग्राहकों की सुविधा बढ़ाएगा, बल्कि स्थानीय उद्यमिता को भी प्रोत्साहित करेगा।

उन्होंने उपस्थित कारोबारियों, स्वयं सहायता समूहों, युवाओं और आम नागरिकों से आग्रह किया कि वे बैंक से जुड़कर बचत खाते, ऋण सुविधाएँ, डिजिटल बैंकिंग, बीमा तथा अन्य वित्तीय सेवाओं का लाभ उठाएँ। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि बैंक डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न आधुनिक सेवाएँ उपलब्ध करा रहा है, जिससे ग्राहकों को सुरक्षित, त्वरित और सुविधाजनक बैंकिंग अनुभव प्राप्त हो सकेगा।

नई शाखा के प्रारंभ होने से क्षेत्र में वित्तीय समावेशन को बल मिलेगा और उन लोगों तक भी बैंकिंग सेवाएँ पहुँच सकेंगी, जो अब तक औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था से दूर थे। यह शाखा स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने, बचत की संस्कृति को प्रोत्साहित करने तथा रोजगार और उद्यम के नए अवसरों को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होगी।

कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों और उपस्थित नागरिकों ने बैंक को शुभकामनाएँ दीं तथा आशा व्यक्त की कि नई शाखा क्षेत्र के विकास और जनसुविधा के लिए महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में कार्य करेगी।

# अंचल कार्यालय में आरबीआई नामित निदेशक डॉ. एस. पी. मोहंती का प्रेरक दौरा

## “एआई और आधुनिक बैंकिंग पर सार्थक संवाद”

दिनांक 22 जुलाई 2025 को यूको बैंक के पटना अंचल कार्यालय में एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें बैंक के निदेशक मंडल में भारतीय रिज़र्व बैंक के नामित निदेशक के रूप में कार्यरत डॉ. एस. पी. मोहंती मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। उनका यह दौरा अंचल कार्यालय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, क्योंकि इस अवसर पर बैंकिंग के वर्तमान परिदृश्य, तकनीकी परिवर्तन और भविष्य की चुनौतियों पर सार्थक विचार-विमर्श हुआ।



डॉ. मोहंती के आगमन पर अंचल प्रबंधक श्री मोतीलाल बानोत ने उनका पारंपरिक एवं गरिमामय स्वागत किया। उन्हें सजीव पौधा भेंट कर पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास का संदेश दिया गया, वहीं मिथिला पेंटिंग से सुसज्जित शाल ओढ़ाकर स्थानीय कला-संस्कृति का सम्मान प्रदर्शित किया गया। इस स्वागत ने कार्यक्रम को एक सांस्कृतिक और आत्मीय स्वरूप प्रदान किया। स्वागत संबोधन में अंचल प्रमुख श्री बानोत ने मुख्य अतिथि के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके व्यापक बैंकिंग अनुभव, नीतिगत दृष्टि और नेतृत्व क्षमता की सराहना की। उन्होंने कहा कि डॉ. मोहंती जैसे अनुभवी मार्गदर्शकों की उपस्थिति बैंक के लिए प्रेरणास्रोत है और उनके विचार कर्मचारियों को बदलते बैंकिंग परिवेश में बेहतर कार्य करने के लिए नई दिशा प्रदान करते हैं।

इसके उपरांत डॉ. एस. पी. मोहंती का मुख्य संबोधन हुआ। उन्होंने अपने विचार रखते हुए कहा कि वर्तमान समय में बैंकिंग क्षेत्र तीव्र तकनीकी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग बैंकिंग सेवाओं को अधिक प्रभावी, सुरक्षित और ग्राहक-केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने बताया कि इन तकनीकों के माध्यम से जोखिम प्रबंधन, धोखाधड़ी की पहचान, ग्राहक सेवा में सुधार और डेटा विश्लेषण जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हो रही है। डॉ. मोहंती ने यह भी कहा कि तकनीक केवल सुविधा का माध्यम नहीं है, बल्कि यह बैंकिंग के भविष्य को दिशा देने वाला प्रमुख उपकरण बन चुकी है। इसलिए बैंक कर्मचारियों को डिजिटल कौशल, डेटा की समझ और नई तकनीकों के उपयोग में दक्ष होना समय की आवश्यकता है। उन्होंने कर्मचारियों को निरंतर सीखने, नवाचार को अपनाने और ग्राहकों की बदलती अपेक्षाओं के अनुरूप सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि डॉ. मोहंती ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संवादात्मक शैली में चर्चा की। उन्होंने सभी से उनके सुझाव, अनुभव और शंकाएँ साझा करने का आग्रह किया। कर्मचारियों ने भी खुले मन से अपने विचार रखे और विभिन्न परिचालन तथा तकनीकी विषयों पर प्रश्न पूछे। डॉ. मोहंती ने सभी प्रश्नों का धैर्यपूर्वक उत्तर देते हुए व्यावहारिक समाधान सुझाए और टीम भावना के साथ कार्य करने पर बल दिया।

कार्यक्रम के अंत में उप-अंचल प्रमुख श्री श्रीकांत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। उन्होंने मुख्य अतिथि का मार्गदर्शन एवं समय देने के लिए आभार व्यक्त किया तथा कहा कि इस प्रकार के संवादात्मक कार्यक्रम कर्मचारियों के ज्ञान और दृष्टिकोण को व्यापक बनाते हैं। उन्होंने अंचल कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए भी धन्यवाद दिया। समग्र रूप से यह कार्यक्रम ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी और सहभागितापूर्ण रहा।

## स्वतन्त्रता दिवस समारोह

यूको बैंक के अंचल कार्यालय, पटना में प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्वतंत्रता दिवस का गरिमामय आयोजन किया गया। दिनांक 15.08.2025 को पटना अंचल कार्यालय परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह उत्साह, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति के वातावरण में संपन्न हुआ। प्रातः नौ बजे अंचल कार्यालय भवन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया, जिसके साथ उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने राष्ट्रगान के माध्यम से मातृभूमि को नमन किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पटना अंचल के अंचल प्रमुख श्री मोतीलाल बानोत जी उपस्थित रहे, जिन्होंने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर समारोह का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में

अंचल कार्यालय तथा स्थानीय शाखाओं में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारीगण की सक्रिय सहभागिता रही। ध्वजारोहण के पश्चात अंचल प्रमुख महोदय ने सभी को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ दीं और राष्ट्रनिर्माण में बैंकिंग संस्थाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला।

स्वतंत्रता दिवस भारत का सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है, जो प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को मनाया जाता है। इसी दिन वर्ष 1947 में भारत ने लगभग दो सौ वर्षों की विदेशी दासता के पश्चात स्वतंत्रता प्राप्त की थी। स्वतंत्रता केवल राजनीतिक सत्ता के हस्तांतरण का दिन नहीं था, बल्कि यह आत्मसम्मान, स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता की यात्रा का प्रारंभ भी था। इस दिन हम उन असंख्य वीरों, स्वतंत्रता सेनानियों और महापुरुषों को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं, जिनके त्याग, बलिदान और संघर्ष के कारण आज हम स्वतंत्र भारत में साँस ले पा रहे हैं।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद सहित अनेक क्रांतिकारियों और जननेताओं का अतुलनीय योगदान रहा। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 तक का कालखंड भारत के इतिहास में साहस, त्याग और राष्ट्रीय चेतना का स्वर्णिम अध्याय रहा है। अहिंसात्मक आंदोलनों, सत्याग्रह और जनभागीदारी ने स्वतंत्रता आंदोलन को जन-आंदोलन का रूप दिया।

इस अवसर पर यह भी स्मरण किया गया कि स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, बल्कि कर्तव्यों की जिम्मेदारी भी है। आज जब देश विकास, तकनीक और डिजिटल परिवर्तन के नए युग में प्रवेश कर चुका है, तब प्रत्येक नागरिक और प्रत्येक संस्था का यह दायित्व है कि वह ईमानदारी, अनुशासन और समर्पण के साथ राष्ट्रहित में कार्य करे। यूको बैंक जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की संस्था, वित्तीय समावेशन, डिजिटल बैंकिंग और समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक सेवाएँ पहुँचाने के माध्यम से स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्र के प्रति समर्पण, एकता और अखंडता बनाए रखने के संकल्प के साथ हुआ। स्वतंत्रता दिवस का यह आयोजन सभी उपस्थितजनों के लिए प्रेरणास्रोत बना और यह संदेश देकर गया कि स्वतंत्रता की रक्षा और उसका सशक्त भविष्य निर्माण हम सभी की साझा जिम्मेदारी है।

# 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : भविष्य का बैंकर'

21<sup>वीं</sup> सदी के तीसरे दशक में हम एक ऐसी क्रांति के साक्षी बन रहे हैं, जिसकी कल्पना कभी विज्ञान फंतासी फिल्मों में की जाती थी। 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने बैंकिंग की पूरी परिभाषा बदल दी है। आज बैंकिंग केवल लेन-देन का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह 'हाइपर-पर्सनलाइज्ड' और 'प्रेडिक्टिव' अनुभव बन चुकी है। इसे क्रमवार समझने का प्रयास करते हैं -



## 1. बैंकिंग में 'एआई' का उदय: एक आवश्यकता

पारंपरिक बैंकिंग में मानव श्रम और समय की अपनी सीमाएँ थीं। डेटा के विशाल भंडार का विश्लेषण करना मानव मस्तिष्क के लिए कठिन था। यहीं 'एआई' ने प्रवेश किया। 'एआई' एल्गोरिदम सेकंड के हजारवें हिस्से में करोड़ों डेटा पॉइंट्स को प्रोसेस कर सकते हैं, जिससे बैंकिंग सेवाएं तेज, सटीक और त्रुटिहीन हो गई हैं।

## 2. ग्राहकों के लिए 'एआई': 'योर बैंक, योर वे'

- चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट: अब ग्राहकों को बैलेंस जानने या चेकबुक रिक्वेस्ट के लिए बैंक आने की जरूरत नहीं है। बैंक के डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध 'एआई' संचालित चैटबॉट्स 24/7 ग्राहकों की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं।
- निजीकृत वित्तीय सलाह: 'एआई' ग्राहक के खर्च करने के पैटर्न का विश्लेषण करता है और उसे निवेश की ऐसी सलाह देता है जो केवल उसी के लिए बनी हो। यह 'मास बैंकिंग' से 'क्लास बैंकिंग' की ओर एक बड़ा कदम है।

## 3. परिचालन दक्षता में सुधार

- ऋण मूल्यांकन : पहले ऋण देने की प्रक्रिया में हफ्तों लगते थे। अब 'एआई' संचालित सिस्टम ग्राहक की 'क्रेडिट हिस्ट्री' के साथ-साथ उसके सोशल और डिजिटल व्यवहार का विश्लेषण कर तुरंत ऋण पात्रता बता देते हैं।
- धोखाधड़ी का पता लगाना : 'एआई' एक सजग प्रहरी की तरह काम करता है। यदि किसी खाते में अचानक कोई असामान्य गतिविधि होती है (जैसे अचानक बड़ा ट्रांजैक्शन), तो 'एआई' सिस्टम उसे तुरंत ब्लॉक कर देता है और अलर्ट भेजता है।

## 4. बैंक कर्मचारियों के लिए 'एआई' : चुनौती या अवसर?

एक आम डर यह है कि 'एआई' नौकरियों को खत्म कर देगा। लेकिन वास्तविकता इसके विपरीत है। 'एआई' बैंकरों का 'प्रतिस्थापन' नहीं बल्कि 'सशक्तिकरण' करेगा। डेटा एंट्री जैसे दोहराव वाले काम मशीनें करेगी, जिससे बैंक स्टाफ को 'रिलेशनशिप मैनेजमेंट' और जटिल वित्तीय रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करने का समय मिलेगा। निर्णय लेने में सहायक: 'एआई' द्वारा प्रदान किए गए डेटा एनालिटिक्स से शाखा प्रबंधकों को सही व्यावसायिक निर्णय लेने में मदद मिलती है।

## 5. भविष्य की राह: 'जनरेटिव एआई'

आने वाले समय में बैंकिंग और भी सहज होगी। 'जेन-एआई' बैंकिंग दस्तावेजों का सारांश तैयार कर सकेगा, ग्राहकों के लिए जटिल कानूनी शर्तों को उनकी स्थानीय भाषा में समझा सकेगा और बैंक के लिए भविष्य के बाजार रुझानों की सटीक भविष्यवाणी कर सकेगा।

डिजिटल बैंकिंग और 'एआई' का मेल केवल तकनीक का विकास नहीं, बल्कि विश्वास और सुविधा का नया संगम है। बैंक के लिए भविष्य की बैंकिंग का अर्थ है—"तकनीक की शक्ति और मानवीय संवेदनाओं का संतुलन।" हमें इस तकनीक को भय से नहीं, बल्कि एक अवसर के रूप में अपनाना होगा ताकि हम 'विकसित भारत' के निर्माण में वित्तीय स्तंभ बन सकें।

रणवीर कुमार  
वरिष्ठ प्रबन्धक  
अंचल कार्यालय, पटना

## जब बैंक 'बादलों' (क्लाउड) पर चला गया!

वह दिन दूर नहीं जब बैंक की शाखाएँ केवल ऐतिहासिक पर्यटन स्थल मानी जाएंगी और लोग वहां जैसे ही घूमने आएंगे जैसे आज लाल किला देखने जाते हैं।

पिछले दिनों हमारे एक पुराने ग्राहक, बाबूजी, शाखा में पधारें। हाथ में पासबुक थी और चेहरे पर वही पुरानी 'एंटी' वाली बेचैनी। मैंने मुस्कुराकर कहा, "बाबूजी, अब पासबुक की जरूरत नहीं है, मोबाइल पर 'एम-बैंकिंग' देख लीजिए।"

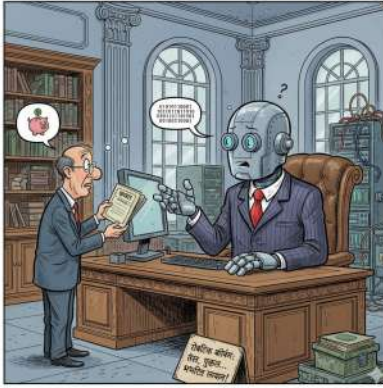
बाबूजी ने चश्मा नाक पर टिकाते हुए कहा, "बेटा, ये मोबाइल-वोबाइल तो ठीक है, पर जब तक ये लोहे की मशीन पत्रे पर नीली स्याही से 'खट-खट-खट' करके तारीख न छाप दे, तब तक हमें नहीं लगता कि पैसा बैंक में सुरक्षित है। मोबाइल का क्या है, गिर जाए तो लक्ष्मी जी भी गायब!"

मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की, "बाबूजी, अब सारा डेटा 'क्लाउड' पर रहता है।"

बाबूजी चौंक गए! बोले, "बादलों पर? बेटा, कल को ज़ोर की बारिश हुई और मेरा डेटा बह गया तो? या बिजली गिरी और मेरा बैलेंस भस्म हो गया तो? तुम लोग भी गजब करते हो, कल तक कहते थे कि पैसा 'तिजोरी' में है, आज कहते हो 'आसमान' में है!"

मैंने स्मिर पकड़ लिया। मैंने कहा, "अरे नहीं बाबूजी, ये वो बादल नहीं हैं। ये तो सर्वर है।"

बाबूजी बोले, "देखो बेटा, हमें ये सर्वर-वरवर मत समझाओ। पहले बैंक में कम से कम चार 'बाबू' दिखते थे। एक टोकन देता था, एक लेजर पलटता था, एक नोट गिनता था और एक साहब सिगरेट पीते हुए घूरते थे। तब लगता था कि बैंकिंग हो रही है। अब तो तुम्हारा ये बैंक मोबाइल में घुस गया है। न कोई घूरने वाला, न कोई कतार में धक्का देने वाला। वो 'बैंकिंग वाला फील' ही खत्म हो गया है!"



इतने में बगल के काउंटर पर एक नौजवान आया। उसने बिना किसी से बात किए दीवार पर लगे क्यूआर कोड को ऐसे स्कैन किया जैसे कोई जादुई मंत्र पढ़ रहा हो। पलक झपकते ही उसका काम हो गया।

बाबूजी उसे देखकर बोले, "ये देखो! ये नई पीढ़ी है। न दुआ, न सलाम, बस फोटो खींची और पैसा गया। अरे भाई, कम से कम मैनेजर साहब से दो बातें ही कर लेते, चाय ही पूछ लेते! अब तो भविष्य ऐसा आ रहा है कि बैंक मैनेजर भी रोबोट होगा। तुम उसे अपनी समस्या बताओगे और वो अपनी लाल आंखें चमकाकर कहेगा—'सर्वर डाउन है, कृपया कल रिबूट होकर आएँ!'"

मैं बस मुस्कुरा सका। डिजिटल बैंकिंग ने दूरियां तो कम कर दी हैं, लेकिन बाबूजी जैसे लोगों के लिए वह 'मानवीय स्पर्श' अब बादलों में कहीं खो गया है। खैर, जाते-जाते बाबूजी ने एक बड़ा गहरा सवाल पूछा— "बेटा, ये डिजिटल-डिजिटल तो ठीक है, पर ये बताओ, अगर मुझे बैंक से 'पेन' चुराना हो, तो डिजिटल बैंकिंग में उसका क्या प्रावधान है?"

मैंने कहा, "बाबूजी, डिजिटल बैंकिंग में पेन की जरूरत ही नहीं पड़ती।"

बाबूजी उदास होकर बोले, "धिक्कार है ऐसी बैंकिंग पर! जहाँ एक बैंकर का पेन न चुरा सके, वो भविष्य हमें नहीं चाहिए!"

यह व्यंग्य केवल मनोरंजन के लिए है। इसका उद्देश्य तकनीक और मानवीय संवेदनाओं के बीच के बारीक अंतर को हंसी-मजाक के माध्यम से उजागर करना है।

श्रवण कुमार मिश्रा  
वरिष्ठ प्रबन्धक  
अंचल कार्यालय, पटना

वह ज़माना गया जब बैंक जाने का मतलब होता था—एक लंबी कतार, हाथ में पसीने से भीगी पासबुक और काउंटर के उस पार 'लंच के बाद आना' कहने वाले बैंक बाबू का वह राजसी अंदाज़। आज का 'बैंक बाबू' न कुर्सी पर बैठता है, न चाय पीता है और न ही लंच ब्रेक लेता है। वह चुपचाप आपकी जेब में, यानी आपके मोबाइल फोन में दुबका रहता है।

पिछले सोमवार की बात है, हमारी शाखा में सन्नाटा ऐसा था कि घड़ी की टिक-टिक भी 'डिजिटल फ़ॉड' जैसी सुनाई दे रही थी। तभी अचानक हमारे पुराने ग्राहक, 'दुखीराम जी' ने प्रवेश किया। उनके आने से शाखा में वैसी ही रौनक आ गई जैसी किसी पुराने खंडहर में कोई पुरातत्व विभाग का अधिकारी आ जाता है। दुखीराम जी ने काउंटर पर जाकर चिल्लाकर पूछा, "अरे भाई, ये बैंक है या कोई लाइब्रेरी? न कोई शोर, न कोई धक्का-मुक्की! क्या सबने वीआरएस ले लिया?" मैंने मुस्कराकर कहा, "नहीं चाचा, सब 'डिजिटल' हो गए हैं। अब लोग घर बैठे-बैठे मोबाइल से ही अपना काम कर लेते हैं। बैंक में फुटफॉल कम हो गई है।"

दुखीराम जी भड़क गए। बोले, "यही तो समस्या है! अब ये मोबाइल ही 'बैंक बाबू' बन गया है। पहले बैंक बाबू कम से कम चेहरा तो दिखाता था, कभी डाँटता था तो कभी हंसकर बात भी कर लेता था। अब इस मोबाइल बाबू को देखो—पासवर्ड डालो तो खुलता है, उंगली लगाओ तो बात मानता है और अगर गलती से तीन बार गलत पिन डाल दिया, तो ऐसा 'मुंह फुलाकर' बैठ जाता है कि कई घंटे तक पहचानता ही नहीं!"

मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की, "चाचा, मोबाइल बैंकिंग से आपका समय बचता है। अब आपको कैश निकालने के लिए लाइन में नहीं लगना पड़ता।" वे और भी चिढ़ गए। बोले, "समय बचाकर क्या करें? पहले बैंक आना एक सामाजिक उत्सव होता था। लाइन में खड़े-खड़े शर्मा जी से बिटिया की शादी की बात हो जाती थी, वर्मा जी से राजनीति पर चर्चा हो जाती थी और कभी-कभी तो कैश काउंटर वाले बाबू से बहस करके ब्लड प्रेशर भी चेक हो जाता था। अब इस मोबाइल बैंकिंग ने सबको 'अकेला' कर दिया है। लोग कोने में बैठकर अंगूठा घिस रहे हैं, जैसे अलादीन का चिराग रगड़ रहे हों कि कहीं से बैलेंस प्रकट हो जाए!"

यह व्यंग्य बदलते समय के साथ बैंकिंग के मानवीय और तकनीकी पहलुओं के संघर्ष को दर्शाता है। डिजिटल होना अनिवार्य है, लेकिन ग्राहकों के प्रति हमारा जुड़ाव हमेशा जीवंत रहना चाहिए।

इतने में हमारे युवा सहयोगी ने कहा, "लेकिन चाचा, अब तो 'चेक' भी डिजिटली जमा हो जाता है!" दुखीराम जी ने लंबी सांस ली और बोले, "यही तो दुःख है बेटा। वो दिन याद हैं जब चेक बुक खत्म होने पर हमें 'पर्ची' भरनी पड़ती थी, फिर साहब के साइन होते थे, तब जाकर चेक बुक मिलती थी। उस चेक बुक की खुशबू में एक रसूख होता था। अब तो मोबाइल पर एक बटन दबाओ और काम खत्म! न कोई गवाह, न कोई सबूत। मुझे तो डर है कि कहीं भविष्य में ये मोबाइल ही मैनेजर न बन जाए और जब हम लोन मांगने जाएं, तो मोबाइल वाइब्रेट होकर कह दे—'सॉरी, आपकी शक्ल हमारे डेटाबेस से मैच नहीं हो रही, कृपया अपना चेहरा अपडेट करके आएं।"

पूरा स्टाफ हंस पड़ा। सच तो यह है कि मोबाइल बैंकिंग ने हमारे काम को आसान बना दिया है, लेकिन दुखीराम जी जैसे ग्राहकों के लिए बैंक केवल पैसों का लेन-देन नहीं, बल्कि भावनाओं का केंद्र था।

आज जब मैं खाली पड़ी कुर्सियों को देखता हूँ, तो सोचता हूँ कि तकनीक ने हमें 'स्प्रीड' तो दे दी, पर वो 'अठन्नी' के लिए बाबू से लड़ने का रोमांच छीन लिया। अब 'बैंक बाबू' शर्ट-पैट पहनकर नहीं, बल्कि 'सिलिकॉन चिप' और 'बैटरी' पहनकर घूमता है। बस दुआ यही है कि यह नया 'मोबाइल बाबू' कभी हैंग न हो जाए, वरना दुखीराम जी का वह डायलॉग अमर हो जाएगा— "बेटा, इससे अच्छा तो वो लंच ब्रेक वाला बाबू ही था, कम से कम समोसा खाते हुए सुन तो लेता था!"

आदित्य आनंद

प्रबन्धक

अंचल कार्यालय, पटना

## साइबर अपराध

वर्तमान डिजिटल युग में, इंटरनेट और स्मार्टफोन ने हमारे जीवन को सरल और सुविधाजनक बना दिया है। लेकिन इसके साथ ही, साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ गया है। साइबर अपराध ऐसे अवैध गतिविधियाँ हैं जो इंटरनेट या कंप्यूटर नेटवर्क के माध्यम से की जाती हैं। ये अपराध व्यक्तिगत, व्यावसायिक और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरे का कारण बन सकते हैं।

### साइबर अपराध का वर्गीकरण

साइबर अपराधों को मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

1. व्यक्ति विशेष के विरुद्ध अपराध: इनमें ऑनलाइन उत्पीड़न, पहचान की चोरी, साइबर बुलिंग, चाइल्ड पोर्नोग्राफी, और डेटिंग धोखाधड़ी शामिल हैं।
2. संपत्ति विशेष के विरुद्ध अपराध: इस श्रेणी में हैकिंग, वायरस हमले, रैनसमवेयर, और बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन शामिल हैं।
3. सरकार विशेष के विरुद्ध अपराध: यह सबसे गंभीर श्रेणी है, जिसमें सरकारी वेबसाइटों या सैन्य नेटवर्कों पर साइबर हमले, साइबर आतंकवाद, और राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित उल्लंघन शामिल हैं।

### साइबर अपराध के प्रमुख प्रकार

1. फिशिंग: इसमें धोखेबाज उपयोगकर्ताओं को नकली वेबसाइटों या ईमेल के माध्यम से संवेदनशील जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।
2. मैलवेयर: यह एक प्रकार का सॉफ्टवेयर है जो कंप्यूटर सिस्टम में घुसकर डेटा चुराता है या सिस्टम को नुकसान पहुँचाता है।
3. रैनसमवेयर: इसमें अपराधी उपयोगकर्ता की फाइलों को एन्क्रिप्ट कर देते हैं और उसे फिर से प्राप्त करने के लिए धन की मांग करते हैं।
4. साइबर बुलिंग: यह ऑनलाइन उत्पीड़न का एक रूप है, जिसमें किसी व्यक्ति को मानसिक या भावनात्मक रूप से नुकसान पहुँचाया जाता है।
5. बिजनेस ईमेल समझौता : इसमें अपराधी वैध व्यापारिक ईमेल अकाउंट का उपयोग करके वित्तीय धोखाधड़ी करते हैं।
6. डेटिंग धोखाधड़ी: इसमें अपराधी ऑनलाइन डेटिंग साइट्स का उपयोग करके लोगों से पैसे ठगते हैं।

#### साइबर सतर्कता के पाँच स्वर्णिम नियम

- किसी भी अज्ञात लिंक, कॉल या संदेश पर तुरंत भरोसा न करें।
- ओटीपी, पासवर्ड या कार्ड विवरण कभी साझा न करें।
- केवल आधिकारिक ऐप और वेबसाइट का ही उपयोग करें।
- नियमित रूप से पासवर्ड बदलें और मजबूत पासवर्ड रखें।
- संदिग्ध गतिविधि दिखते ही तुरंत बैंक/प्राधिकरण को सूचित करें।

### साइबर अपराध के प्रभाव

1. व्यक्तिगत स्तर पर: साइबर अपराधों के कारण व्यक्तिगत जानकारी की चोरी, वित्तीय नुकसान, मानसिक तनाव, और गोपनीयता का उल्लंघन हो सकता है।
2. व्यावसायिक स्तर पर: कंपनियों को वित्तीय नुकसान, प्रतिष्ठा की हानि, और कानूनी दंड का सामना करना पड़ सकता है।

## भारत में साइबर अपराध की स्थिति

भारत में साइबर अपराधों की संख्या में वृद्धि हो रही है। सरकार ने इस दिशा में कई कदम उठाए हैं, जैसे कि सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000, और राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति, 2013। इसके अलावा, भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) और राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (cybercrime.gov.in) जैसे प्लेटफॉर्म स्थापित किए गए हैं, ताकि नागरिक साइबर अपराधों की रिपोर्ट कर सकें।

## साइबर अपराध से बचाव के उपाय

1. सुरक्षित पासवर्ड का उपयोग: मजबूत और अद्वितीय पासवर्ड का चयन करें और उन्हें नियमित रूप से बदलें।
2. सॉफ्टवेयर अपडेट: अपने ऑपरेटिंग सिस्टम और एप्लिकेशनों को नियमित रूप से अपडेट करें, ताकि सुरक्षा खामियों को दूर किया जा सके।
3. एंटीवायरस सॉफ्टवेयर: विश्वसनीय एंटीवायरस सॉफ्टवेयर का उपयोग करें और उसे नियमित रूप से अपडेट करें।
4. संदिग्ध लिंक से बचाव: अज्ञात स्रोतों से प्राप्त ईमेल या संदेशों में दिए गए लिंक पर क्लिक करने से बचें।
5. दो-चरणीय प्रमाणीकरण: अपने ऑनलाइन खातों में दो-चरणीय प्रमाणीकरण सक्षम करें, ताकि अतिरिक्त सुरक्षा मिल सके।
6. सामाजिक मीडिया पर सतर्कता: सामाजिक मीडिया पर अपनी व्यक्तिगत जानकारी साझा करते समय सतर्क रहें और गोपनीयता सेटिंग्स का उपयोग करें।

### बैंक कर्मियों के लिए विशेष ध्यान

- ग्राहक डेटा की गोपनीयता सर्वोपरि रखें।
- आधिकारिक सिस्टम और नेटवर्क का ही उपयोग करें।
- संदिग्ध ई-मेल या अटैचमेंट तुरंत रिपोर्ट करें।
- साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण में नियमित भाग लें।
- “पहचानें-रोकें-सूचित करें” की प्रक्रिया अपनाएँ।

साइबर अपराध एक गंभीर समस्या बन चुकी है, जो व्यक्तिगत, व्यावसायिक और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरे का कारण बन सकती है। इससे निपटने के लिए सरकार, नागरिक और निजी क्षेत्र को मिलकर काम करना होगा। साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता और सतर्कता ही इस समस्या का समाधान है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि साइबर सुरक्षा केवल आईटी विभाग की जिम्मेदारी नहीं है। यह संस्था के प्रत्येक कर्मचारी और प्रत्येक ग्राहक की साझा जिम्मेदारी है। किसी संदिग्ध कॉल, ई-मेल या संदेश को पहचानना, गोपनीय जानकारी साझा करने से बचना, और समय पर सूचना देना—ये छोटे-छोटे कदम बड़े जोखिमों को रोक सकते हैं। यदि किसी ग्राहक के साथ धोखाधड़ी की आशंका हो, तो उसे संवेदनशीलता के साथ मार्गदर्शन देना और त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करना भी बैंक की विश्वसनीयता को मजबूत करता है।

आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि डिजिटल सुविधा के साथ डिजिटल सुरक्षा को भी समान महत्व देंगे। हर संदिग्ध गतिविधि पर ध्यान देंगे, हर ग्राहक को जागरूक बनाएंगे और हर प्रक्रिया में सावधानी बरतेंगे। यही सामूहिक प्रयास हमें एक सुरक्षित, विश्वसनीय और सुदृढ़ डिजिटल बैंकिंग वातावरण की ओर ले जाएगा—जहाँ तकनीक प्रगति का साधन बने और सुरक्षा उसकी मजबूत आधारशिला।

अमृत रंजन

प्रबन्धक

अंचल कार्यालय, पटना

## स्क्रीन के उस पार छिपा अपराध

आज का युग डिजिटल है—जहाँ एक क्लिक पर जानकारी उपलब्ध है और एक स्पर्श से दुनिया से जुड़ना संभव हो गया है। इंटरनेट और स्मार्टफोन ने जीवन को तेज़, सरल और सुविधाजनक बनाया है। लेकिन इस सुविधा की चकाचौंध के पीछे एक गहराता खतरा भी छिपा है—साइबर अपराध। विशेषकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, जो संवाद का सशक्त माध्यम बने, अब अपराधियों के लिए भी अनुकूल ज़मीन बनते जा रहे हैं।

### साइबर अपराध: अदृश्य लेकिन घातक

साइबर अपराध वे अवैध गतिविधियाँ हैं, जो कंप्यूटर, मोबाइल या इंटरनेट नेटवर्क के माध्यम से की जाती हैं। इनमें अपराधी अक्सर भौतिक रूप से सामने नहीं होते, जिससे पीड़ित को अपराध का आभास देर से होता है और अपराधी आसानी से बच निकलते हैं।



### अपराध के तीन चेहरे

साइबर अपराधों को उनके प्रभाव के आधार पर तीन व्यापक वर्गों में समझा जा सकता है—

#### 1. व्यक्ति को निशाना बनाने वाले अपराध

इस श्रेणी में ऑनलाइन उत्पीड़न, साइबर बुलिंग, पहचान की चोरी, डेटिंग फ्रॉड और बाल अश्लील सामग्री जैसे गंभीर अपराध आते हैं। सोशल मीडिया पर फर्जी प्रोफाइल बनाकर लोगों को भावनात्मक या आर्थिक रूप से ठगा जाता है।

#### 2. डिजिटल संपत्ति पर हमले

हैकिंग, रैनसमवेयर, वायरस अटैक और बौद्धिक संपदा की चोरी जैसे अपराध इस वर्ग में आते हैं। इनका सीधा असर संस्थानों, व्यवसायों और व्यक्तिगत डेटा सुरक्षा पर पड़ता है।

#### 3. राष्ट्र के विरुद्ध साइबर हमले

सरकारी वेबसाइटों को निशाना बनाना, संवेदनशील डाटाबेस में सेंध लगाना और साइबर आतंकवाद इस श्रेणी में आते हैं। यह केवल तकनीकी नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा गंभीर विषय है।

### सोशल मीडिया: सुविधा या जोखिम?

फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और टेलीग्राम जैसे मंचों ने अभिव्यक्ति को आवाज़ दी है, लेकिन इन्हीं प्लेटफॉर्मों का दुरुपयोग कर अपराधी नकली विज्ञापन, फिशिंग लिंक और फर्जी ऑफ़र के ज़रिए लोगों को जाल में फँसाते हैं। गृह मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, साइबर अपराधियों ने गूगल सेवाओं—विशेष रूप से गूगल ऐड्स—का इस्तेमाल कर लक्षित धोखाधड़ी को नई ऊँचाई दी है।

## भारत में बढ़ता साइबर खतरा

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आँकड़े चिंताजनक तस्वीर पेश करते हैं। साल-दर-साल साइबर अपराधों में वृद्धि दर्ज की गई। विशेषज्ञों का मानना है कि सोशल मीडिया आधारित अपराधों में लगभग 6.5 गुना बढ़ोतरी हुई है, जिनमें फेसबुक, ट्विटर और व्हाट्सएप प्रमुख माध्यम रहे हैं।

## महिलाएँ और बच्चे: सबसे संवेदनशील वर्ग

डिजिटल दुनिया में महिलाएँ और बच्चे साइबर अपराधों के प्रति अधिक असुरक्षित हैं। ऑनलाइन हिंसा, ट्रोलिंग, साइबर स्टॉकिंग और पहचान की चोरी जैसी घटनाएँ उनके मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालती हैं। फेमिनिज़म इन इंडिया की रिपोर्ट बताती है कि युवा लड़कियाँ सोशल मीडिया पर लगातार ऑनलाइन उत्पीड़न का सामना कर रही हैं। मासूम बच्चे ऑनलाइन गेमिंग के जाल में फंस रहे हैं।



## सरकारी पहल और संस्थागत प्रयास

साइबर अपराध से निपटने के लिए भारत सरकार ने निम्नलिखित ठोस कदम उठाए हैं।

- भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र की स्थापना।
- राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल, जहाँ नागरिक सीधे शिकायत दर्ज कर सकते हैं।

ये पहल न केवल अपराधों की निगरानी करती हैं, बल्कि जागरूकता फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता और सतर्कता ही इस समस्या का समाधान है।

राम बिलाश बैठा  
प्रबन्धक (सुरक्षा)  
अंचल कार्यालय, पटना

### सबसे आम खतरे

- फर्जी लिंक या मैसेज से ठगी
- सोशल मीडिया प्रोफाइल हैकिंग
- ओटीपी/पासवर्ड मांगने वाली कॉल
- नकली लोन या इनाम का लालच



### बचाव के आसान उपाय

- ओटीपी, पिन, पासवर्ड ककरो संग साझा न करें
- अनजान लिंक पर क्लिक करने से बचें
- मजबूत पासवर्ड और टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन का प्रयोग करें
- संदिग्ध गतिविधि तुरंत बैंक या संबंधित प्लेटफॉर्म को बताएं

## डिजिटल अरेस्ट: भय की अदृश्य हथकड़ियाँ

मोबाइल की स्क्रीन पर अचानक उभरा वह कॉल किसी साधारण सुबह को असाधारण बना देने के लिए काफी था। “साइबर क्राइम सेल, नई दिल्ली से बोल रहे हैं। आप अभी डिजिटल अरेस्ट में हैं।”



आवाज़ कठोर थी, शब्द आदेशात्मक, और लहजा ऐसा मानो सामने कोई अपराधी खड़ा हो। अनिल वर्मा के हाथ से मोबाइल फिसलते-फिसलते बचा। वह एक राष्ट्रीयकृत बैंक की शाखा में कार्यरत था, नियम-कानून की भाषा उसका रोज़ का काम थी, इसलिए ‘अरेस्ट’ शब्द उसके भीतर डर नहीं, बल्कि भ्रम भर रहा था। अनिल को बताया गया कि उसके आधार और बैंक खाते का इस्तेमाल एक अंतरराष्ट्रीय मनी लॉन्ड्रिंग नेटवर्क में हुआ है। जाँच पूरी होने तक उसे “डिजिटल निगरानी” में रहना होगा। इसका अर्थ था—फोन बंद नहीं करना, किसी से बात नहीं करना, और हर निर्देश का पालन करना। वीडियो कॉल चालू करवाई गई, जहाँ वर्दी जैसी दिखने वाली पोशाक पहने एक व्यक्ति बैठा था। पीछे दीवार पर सरकारी प्रतीक जैसा कुछ चिपका था। दृश्य विश्वसनीय था, और यही इस अपराध की पहली चाल थी। अनिल को निर्देश मिला कि वह अपनी शाखा से “तुरंत सहयोग” करे। भय और बदनामी के डर ने उसकी विवेकशीलता पर परदा डाल दिया। उसे बताया गया कि यदि वह जाँच में बाधा डालेगा, तो उसके परिवार को भी पूछताछ के लिए बुलाया जाएगा। पत्नी और बच्चों का खयाल आते ही उसका आत्मविश्वास टूटने लगा। उसे एक सुरक्षित लिंक भेजा गया—कथित तौर पर “केस पोर्टल”—जहाँ उससे दस्तावेज़ अपलोड करवाए गए, और फिर “वेरिफिकेशन चार्ज” के नाम पर धनराशि स्थानांतरित करने को कहा गया।

घंटे बीतते गए। अनिल अपने ही घर में बैठा था, पर उसे लग रहा था जैसे वह किसी अदृश्य सलाखों के भीतर कैद हो। हर पाँच मिनट में कॉल आता—“आप अभी भी हमारे नियंत्रण में हैं।” यह डिजिटल अरेस्ट था—बिना हथकड़ी, बिना थाने, पर पूरी मानसिक गिरफ्त।

उसी शाम, अनिल की बेटी—जो साइबर सुरक्षा पर एक कार्यशाला में भाग ले चुकी थी—ने पिता के चेहरे पर भय देखा। उसने मोबाइल स्क्रीन पर चल रही वीडियो कॉल पर एक नज़र डाली और धीमे से बोली, “पापा, असली एजेंसियाँ कभी ऐसे पैसे नहीं माँगतीं।” पहली बार उस दिन अनिल ने कॉल म्यूट किया। दिल धड़क रहा था, पर उसने साइबर हेल्पलाइन नंबर डायल किया। सच सामने आते ही जैसे अंधेरा छूट गया। यह एक सुनियोजित साइबर ठगी थी—डिजिटल अरेस्ट—जहाँ डर, तकनीक और नकली अधिकार का इस्तेमाल कर लोगों को मानसिक रूप से कैद कर लिया जाता है। अनिल ने तुरंत ट्रॉज़ैक्शन रोकने की प्रक्रिया शुरू की। पूरी राशि तो नहीं बच सकी, पर सबसे बड़ी जीत थी—स्वतंत्रता की वापसी।

कुछ दिनों बाद अनिल ने अपनी शाखा में एक छोटी-सी जागरूकता बैठक रखी। उसने अपने अनुभव को कहानी की तरह सुनाया—बिना शर्म, बिना भय। वह जान चुका था कि चुप्पी अपराधियों की सबसे बड़ी ताकत होती है। आज भी जब उसका फोन बजता है, वह डरता नहीं—वह जाँचता है। क्योंकि उसने समझ लिया है कि डिजिटल दुनिया में सबसे जरूरी सुरक्षा तकनीक नहीं, बल्कि जागरूकता है।

डिजिटल अरेस्ट कोई कानूनी प्रक्रिया नहीं, बल्कि भय के सहारे रचा गया एक जाल है। और इस जाल से निकलने की पहली चाबी है—सवाल पूछने का साहस। **कहानी यहीं समाप्त होती है, पर चेतावनी जारी रहती है।**

राज कुनाल

वरिष्ठ प्रबन्धक

अंचल कार्यालय, पटना

## शब्दों से स्क्रीन तक: साहित्य का बदलता सफर

पढ़ना केवल एक आदत नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और बौद्धिक विकास का आधार है। साहित्य मनुष्य को नए दृष्टिकोण देता है, संवेदनशील बनाता है और सोचने-समझने की क्षमता को गहराई प्रदान करता है। किंतु डिजिटल युग के आगमन ने पढ़ने की शैली और उसकी प्राथमिकताओं को बदल दिया है। विशेषकर युवा पीढ़ी के लिये अब साहित्य से जुड़ाव का माध्यम और स्वरूप पहले जैसा नहीं रहा। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और त्वरित सूचना के दौर में संक्षिप्त और दृश्य सामग्री ने गहन वाचन की जगह लेनी शुरू कर दी है। ऐसे में साहित्य के सामने यह चुनौती है कि वह इस तेज़ रफ्तार डिजिटल वातावरण में अपनी प्रासंगिकता कैसे बनाए रखे।

यह परिवर्तन केवल चुनौती ही नहीं, बल्कि अवसर भी है। आवश्यक है कि हम पढ़ने की बदलती प्रवृत्तियों को समझें, तकनीक की भूमिका को पहचानें और ऐसे उपाय खोजें जो नई पीढ़ी में वाचन के प्रति रुचि को पुनर्जीवित कर सकें।

### बदलती पढ़ने की दुनिया

पारंपरिक रूप से मुद्रित पुस्तकें पढ़ने का प्रमुख माध्यम रही हैं। पुस्तक को हाथ में लेकर पढ़ने का अनुभव—पन्ने पलटने की ध्वनि, कागज़ की महक और एकाग्रता का वातावरण—पाठक को गहरे रूप से कथा या विचारों में डूबने का अवसर देता है। यह अनुभव ध्यान, धैर्य और गहन संलग्नता को बढ़ाता है।

इसके विपरीत, डिजिटल माध्यमों ने पढ़ने को अधिक सुविधाजनक और त्वरित बना दिया है। ई-बुक, ऑडियोबुक और ऑनलाइन लेखों के माध्यम से पाठक अब कहीं भी और कभी भी पढ़ सकते हैं। एक छोटे से उपकरण में हजारों पुस्तकें साथ रखना संभव हो गया है। फॉन्ट का आकार बदलने, खोज सुविधा और तुरंत उपलब्धता जैसे लाभ डिजिटल वाचन को लोकप्रिय बना रहे हैं। फिर भी, इस सुविधा के साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं—जैसे ध्यान भंग होना, सतही पढ़ाई की प्रवृत्ति और निरंतर स्क्रीन से जुड़ाव।

### तकनीक: चुनौती भी, संभावना भी

प्रौद्योगिकी ने मनोरंजन के असंख्य विकल्प प्रस्तुत कर दिए हैं। सोशल मीडिया, वीडियो प्लेटफॉर्म और गेमिंग की त्वरित संतुष्टि के बीच किताब पढ़ना अपेक्षाकृत श्रमसाध्य प्रतीत होता है। परिणामस्वरूप गहन वाचन की आदत प्रभावित हुई है।

दूसरी ओर, तकनीक साहित्य को नए रूप में प्रस्तुत करने का अवसर भी देती है। इंटरैक्टिव स्टोरी ऐप्स, मल्टीमीडिया पुस्तकों और गेम आधारित कथाओं ने पढ़ने को अधिक रोचक बना दिया है। ऑडियोबुक, पॉडकास्ट और डिजिटल मंचों ने उन लोगों को भी साहित्य से जोड़ा है जो पारंपरिक रूप से पढ़ने के लिये समय नहीं निकाल पाते थे। यदि इन माध्यमों का संतुलित उपयोग किया जाए, तो तकनीक साहित्य के लिये एक सशक्त सहयोगी बन सकती है।

### डिजिटल युग की चुनौतियाँ

आज का पाठक त्वरित संतुष्टि का अभ्यस्त हो चुका है। स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म और सोशल नेटवर्किंग साइट्स कम समय में मनोरंजन प्रदान करते हैं, जबकि पुस्तक पढ़ना धैर्य और एकाग्रता की मांग करता है। यही कारण है कि साहित्य को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

इसके अलावा, डिजिटल सामग्री की अधिकता भी पाठकों को भ्रमित कर सकती है। एल्गोरिदम अक्सर लोकप्रिय और आकर्षक

सामग्री को प्राथमिकता देते हैं, जिससे गंभीर साहित्य पीछे छूट जाता है। 'मल्टीटास्किंग' संस्कृति और लगातार आने वाले नोटिफिकेशन भी ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। इससे गहन वाचन की परंपरा कमजोर पड़ती है।

## डिजिटल युग की चुनौतियाँ

आज का पाठक त्वरित संतुष्टि का अभ्यस्त हो चुका है। स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म और सोशल नेटवर्किंग साइट्स कम समय में मनोरंजन प्रदान करते हैं, जबकि पुस्तक पढ़ना धैर्य और एकाग्रता की मांग करता है। यही कारण है कि साहित्य को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

इसके अलावा, डिजिटल सामग्री की अधिकता भी पाठकों को भ्रमित कर सकती है। एल्गोरिदम अक्सर लोकप्रिय और आकर्षक सामग्री को प्राथमिकता देते हैं, जिससे गंभीर साहित्य पीछे छूट जाता है। 'मल्टीटास्किंग' संस्कृति और लगातार आने वाले नोटिफिकेशन भी ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। इससे गहन वाचन की परंपरा कमजोर पड़ती है।

## आगे की राह: अवसर और उपाय

नई पीढ़ी को साहित्य से जोड़ने के लिये तकनीक का रचनात्मक उपयोग किया जा सकता है। पढ़ने को खेल आधारित चुनौतियों, पुरस्कारों और इंटरैक्टिव अनुभवों से जोड़ना उन्हें प्रेरित कर सकता है। वर्चुअल और ऑगमेंटेड रियलिटी जैसी तकनीकें साहित्यिक अनुभव को जीवंत बना सकती हैं।

डिजिटल पुस्तकालय और ओपन एक्सेस मंच साहित्य को सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। बहुभाषी डिजिटल संग्रहों के माध्यम से स्थानीय और क्षेत्रीय साहित्य को भी व्यापक पाठक मिल सकते हैं।

साहित्य को फिल्मों, वेब सीरीज़ और ऑडियो माध्यमों से जोड़ना भी प्रभावी रणनीति है। इससे नई पीढ़ी को कथाओं से जुड़ने का सहज मार्ग मिलता है।

परिवार, शिक्षक और लेखक—तीनों की भूमिका भी निर्णायक है। माता-पिता यदि बच्चों में पढ़ने का वातावरण बनाएं, शिक्षक साहित्य को रोचक रूप में प्रस्तुत करें और लेखक समकालीन विषयों पर सहज भाषा में लिखें, तो पढ़ने की संस्कृति को पुनर्जीवित किया जा सकता है।

डिजिटल युग ने पढ़ने की आदतों को बदल दिया है, परंतु साहित्य की आवश्यकता और प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है। चुनौती यह नहीं कि तकनीक से बचा जाए, बल्कि यह है कि तकनीक के साथ साहित्य का संतुलित और रचनात्मक संबंध स्थापित किया जाए।

यदि समाज के सभी घटक—परिवार, विद्यालय, लेखक और तकनीकी विशेषज्ञ—मिलकर प्रयास करें, तो पढ़ने की संस्कृति को नए रूप में सशक्त किया जा सकता है। साहित्य की शक्ति शाश्वत है; आवश्यकता केवल इसे नई पीढ़ी तक पहुँचाने के लिये नए माध्यमों और नए दृष्टिकोण अपनाने की है।

नीरज कुमार

प्रबन्धक

अंचल कार्यालय, पटना

## “सुविधा से अति तक: स्मार्टफोन की कहानी”

डिजिटल क्रांति के इस समय में स्मार्टफोन केवल एक उपकरण नहीं, बल्कि जीवन का स्थायी साथी बन चुका है। संचार, जानकारी, बैंकिंग, मनोरंजन और कार्य—सब कुछ अब इसी छोटे से उपकरण में समाहित है। यह सुविधा मानव जीवन को सरल और त्वरित बनाती है, किंतु इसके निरंतर और अत्यधिक उपयोग ने हमारे स्वास्थ्य और जीवनशैली पर ऐसे प्रभाव डाले हैं, जिन्हें अक्सर हम अनदेखा कर देते हैं।



आज स्थिति यह है कि हममें से अधिकांश लोग बिना स्मार्टफोन के दिन की कल्पना भी नहीं कर सकते। यह हमारी दिनचर्या, व्यवहार और सोच का हिस्सा बन चुका है। हालांकि यह तकनीक हमें जोड़ती है, लेकिन इसके अत्यधिक उपयोग से हम स्वयं से, अपने शरीर से और कभी-कभी अपने आसपास के लोगों से भी दूर होने लगे हैं। इसलिए अब समय है कि हम इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करें—क्या हम स्मार्टफोन का उपयोग कर रहे हैं या स्मार्टफोन हमें नियंत्रित कर रहा है?

### उपयोगिता और आवश्यकता

स्मार्टफोन ने जीवन को कई स्तरों पर आसान बनाया है। स्वास्थ्य और फिटनेस से जुड़े ऐप्स हमें व्यायाम, आहार और स्वास्थ्य की निगरानी में मदद करते हैं। चिकित्सा परामर्श अब दूरस्थ रूप से भी संभव है, जिससे ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों के लोगों को विशेष लाभ मिलता है। आपातकालीन स्थितियों में यह तुरंत सहायता उपलब्ध कराने का माध्यम बनता है।

इसके साथ ही, इंटरनेट की उपलब्धता ने स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवनशैली से जुड़ी जानकारी तक त्वरित पहुँच सुनिश्चित की है। इन सभी कारणों से स्मार्टफोन आधुनिक जीवन की आवश्यकता बन गया है।

### जब सुविधा बन जाए समस्या

सुविधा के साथ-साथ इसका अतिरेक कई समस्याओं को जन्म देता है। लगातार स्क्रीन देखने से आँखों पर दबाव बढ़ता है, जिससे आँखों में जलन, सूखापन, सिरदर्द और दृष्टि संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। खराब रोशनी में लंबे समय तक मोबाइल उपयोग स्थिति को और गंभीर बना देता है।

रात में मोबाइल का उपयोग नींद की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी नींद के प्राकृतिक चक्र में बाधा डालती है, जिससे अनिद्रा और थकान जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं। पर्याप्त नींद न मिलना आगे चलकर कई दीर्घकालिक स्वास्थ्य जोखिमों का कारण बन सकता है।

शारीरिक स्तर पर भी इसका प्रभाव स्पष्ट है। लंबे समय तक झुककर मोबाइल देखने से गर्दन और पीठ पर दबाव बढ़ता है, जिसे सामान्य भाषा में “टेक्स्ट नेक” कहा जाने लगा है। इसके अतिरिक्त हाथों और कलाई में दर्द, कंधों में जकड़न और गलत बैठने की मुद्रा से जुड़ी समस्याएँ भी सामने आती हैं।

### स्मार्टफोन उपयोग – छोटे कदम, बड़ा लाभ

**20-20-20 नियम अपनाएँ :** हर 20 मिनट स्क्रीन देखने के बाद 20 सेकंड के लिए 20 फीट दूर देखें। इससे आँखों को आराम मिलता है।

- **“नो-फोन टाइम” तय करें :** सोने से कम-से-कम 1 घंटा पहले और सुबह उठते ही कुछ समय तक मोबाइल से दूरी रखें।
- **सही मुद्रा में उपयोग करें :** फोन को आँखों के स्तर तक उठाकर देखें। गर्दन झुकाकर लंबे समय तक उपयोग करने से “टेक्स्ट नेक” की समस्या हो सकती है।
- **स्क्रीन टाइम पर नियंत्रण :** प्रतिदिन का स्क्रीन-टाइम लक्ष्य तय करें। अनावश्यक ऐप्स की नोटिफिकेशन बंद रखें।
- **भोजन के समय मोबाइल से दूरी :** खाते समय मोबाइल उपयोग करने से अधिक भोजन और पाचन संबंधी समस्या हो सकती है।
- **डिजिटल ब्रेक लें :** हर 1-2 घंटे में 5-10 मिनट का ब्रेक लें और थोड़ी शारीरिक गतिविधि करें।
- **नीली रोशनी से बचाव :** रात में “ब्लू-लाइट फिल्टर” या “नाइट मोड” का उपयोग करें ताकि नींद प्रभावित न हो।
- **मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान :** सोशल मीडिया का सीमित उपयोग करें। वास्तविक संवाद और परिवार के साथ समय बिताना भी उतना ही आवश्यक है।

## मानसिक और सामाजिक प्रभाव

स्मार्टफोन और सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। लगातार तुलना, लाइक और प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा, तथा कुछ छूट जाने का भय (फोमो) तनाव, चिंता और आत्म-सम्मान में कमी का कारण बन सकते हैं।

दिनभर स्क्रीन पर व्यस्त रहने से वास्तविक जीवन के संबंधों पर भी प्रभाव पड़ता है। परिवार के साथ समय बिताने की जगह डिजिटल व्यस्तता ले लेती है। भोजन करते समय मोबाइल का उपयोग, शारीरिक गतिविधियों में कमी और बैठकर लंबे समय तक स्क्रीन देखना एक गतिहीन जीवनशैली को बढ़ावा देता है, जो मोटापा और अन्य रोगों का जोखिम बढ़ाता है। इसके साथ ही ध्यान और एकाग्रता पर भी प्रभाव पड़ता है। लगातार नोटिफिकेशन और संदेशों की आदत मस्तिष्क को छोटे-छोटे अंतराल पर उत्तेजना की अपेक्षा करने के लिए प्रेरित करती है। परिणामस्वरूप गहन अध्ययन, लंबे समय तक पढ़ना या किसी कार्य पर निरंतर ध्यान बनाए रखना कठिन हो जाता है। कई बार लोग बिना किसी विशेष कारण के भी बार-बार फोन चेक करने लगते हैं, जो डिजिटल निर्भरता का संकेत है।

सामाजिक स्तर पर भी बदलाव दिखता है। एक ही कमरे में बैठे लोग आपस में कम और स्क्रीन से अधिक संवाद करने लगे हैं। बातचीत की सहजता, धैर्य और आमने-सामने संवाद की कला धीरे-धीरे कम होती जा रही है। हालांकि स्मार्टफोन ने दूर बैठे लोगों को जोड़ने का काम किया है, पर निकट संबंधों में दूरी बढ़ने का जोखिम भी उत्पन्न हुआ है।

इस स्थिति का समाधान पूर्ण त्याग में नहीं, बल्कि संतुलित उपयोग में है। डिजिटल उपकरण हमारी सुविधा और प्रगति के साधन हैं, पर उनका विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। स्क्रीन टाइम निर्धारित करना, भोजन और पारिवारिक समय में मोबाइल से दूरी रखना, नियमित शारीरिक गतिविधि और प्रत्यक्ष संवाद को बढ़ावा देना—ये छोटे कदम संतुलन स्थापित कर सकते हैं।

## संतुलन की आवश्यकता

यह कहना उचित नहीं होगा कि तकनीक हानिकारक है; समस्या उसका असंतुलित उपयोग है। स्मार्टफोन का विवेकपूर्ण उपयोग जीवन को बेहतर बना सकता है, जबकि उसका अत्यधिक प्रयोग स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन दोनों को प्रभावित कर सकता है।

समाधान जागरूकता और अनुशासन में निहित है। स्क्रीन समय सीमित करना, सोने से पहले मोबाइल उपयोग कम करना, नियमित अंतराल पर ब्रेक लेना और शारीरिक गतिविधियों को दिनचर्या का हिस्सा बनाना आवश्यक है। परिवार और कार्यस्थल पर “नो-फोन” समय निर्धारित करना भी उपयोगी हो सकता है।

स्मार्टफोन आधुनिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन चुका है और इससे दूरी बनाना संभव नहीं है। किंतु इसके साथ संतुलन बनाना हमारे हाथ में है। तकनीक का उद्देश्य जीवन को सरल बनाना है, न कि हमें उसका दास बना देना।

यदि हम सजग होकर इसका उपयोग करें, तो यह हमारे लिये एक शक्तिशाली साधन बन सकता है। लेकिन यदि हम सीमाएँ तय न करें, तो यही साधन हमारे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम तकनीक से दूरी नहीं, बल्कि उसके साथ संतुलित संबंध स्थापित करें। स्मार्टफोन का “स्मार्ट” उपयोग ही स्वस्थ, संतुलित और जागरूक जीवन की कुंजी है।

रवि शंकर

वरिष्ठ प्रबन्धक

अंचल कार्यालय, पटना

तकनीक हमारे जीवन को सरल बनाती है, लेकिन संतुलित उपयोग ही हमें स्वस्थ और सक्रिय बनाए रखता है। स्मार्टफोन का **स्मार्ट उपयोग** ही सही दिशा है।

## राजभाषा ज्ञान प्रश्नावली

प्रश्न	उत्तर
केन्द्रीय हिन्दी समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं?	केन्द्रीय हिन्दी समिति
राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने का मुख्य उद्देश्य क्या है?	प्रशासन को जन-सुलभ, पारदर्शी और प्रभावी बनाना
राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक न्यूनतम कितनी बार होनी चाहिए?	प्रत्येक तिमाही में एक बार
सरकारी कार्यालयों में द्विभाषी नामपट्ट में ऊपर कौन-सी भाषा लिखी जाती है ?	हिन्दी
सरकारी वेबसाइटें किन भाषाओं में अनिवार्य रूप से उपलब्ध होनी चाहिए?	हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों में
8वीं अनुसूची में शामिल विदेशी भाषा ?	नेपाली
“पंजाब” राज्य राजभाषा के किस क्षेत्र में आता है ?	“ख” क्षेत्र में
केन्द्रीय लोक शिकायत प्रणाली में शिकायत किस भाषा में की जा सकती है?	हिन्दी या अंग्रेज़ी, दोनों में
सरकारी प्रपत्रों (फॉर्म) को किस रूप में जारी किया जाना चाहिए?	द्विभाषी रूप में
राजभाषा निरीक्षण का स्वरूप कैसा होता है?	मार्गदर्शक एवं सुधारात्मक, न कि दंडात्मक
संसदीय राजभाषा समिति का मुख्य कार्य क्या है?	संघ के शासकीय कार्यों में हिन्दी प्रयोग की प्रगति की समीक्षा करना।
संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट किसे प्रस्तुत की जाती है?	राष्ट्रपति को
राजभाषा निरीक्षण का अंतिम लक्ष्य क्या है?	राजभाषा नीति का प्रभावी एवं सतत कार्यान्वयन

# छवि संग्रह



# छवि संग्रह





**यूको बैंक : मुजफ्फरपुर में कार्निवल का आयोजन**

पटना. यूको बैंक ने सोमवार को मुजफ्फरपुर में एसएमइ व कृषि कार्निवल का आयोजन किया. इसमें 100 से अधिक उद्यमियों ने भाग लिया. कार्यक्रम का उद्देश्य उद्यमियों व किसानों को बैंकिंग सेवाओं, ऋण सुविधाओं व सरकारी योजनाओं की जानकारी देना व उन्हें प्रोत्साहित करना था. मौके पर यूको बैंक के उपमहाप्रबंधक रवि शंकर पाठक ने कहा कि एसएमइ व कृषि क्षेत्र की मजबूती देश की आर्थिक स्थिरता, रोजगार सृजन व ग्रामीण विकास की कुंजी है. यूको बैंक सदैव इनके साथ खड़ा है. कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के पटना अंचल के अंचल प्रमुख मोतीलाल बानोत ने की. उन्होंने उपस्थित उद्यमियों को आश्वासित किया कि बैंक उनकी जरूरतों को समझते हुए हर संभव ऋण सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है. मौके पर कई लाभार्थियों को ऋण स्वीकृति पत्र भी प्रदान किये गये.

**यूको बैंक : मुजफ्फरपुर में कार्निवल का आयोजन**

पटना. यूको बैंक ने सोमवार को मुजफ्फरपुर में एसएमइ व कृषि कार्निवल का आयोजन किया. इसमें 100 से अधिक उद्यमियों ने भाग लिया. कार्यक्रम का उद्देश्य उद्यमियों व किसानों को बैंकिंग सेवाओं, ऋण सुविधाओं व सरकारी योजनाओं की जानकारी देना व उन्हें प्रोत्साहित करना था. मौके पर यूको बैंक के उपमहाप्रबंधक रवि शंकर पाठक ने कहा कि एसएमइ व कृषि क्षेत्र की मजबूती देश की आर्थिक स्थिरता, रोजगार सृजन व ग्रामीण विकास की कुंजी है. यूको बैंक सदैव इनके साथ खड़ा है. कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के पटना अंचल के अंचल प्रमुख मोतीलाल बानोत ने की. उन्होंने उपस्थित उद्यमियों को आश्वासित किया कि बैंक उनकी जरूरतों को समझते हुए हर संभव ऋण सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है. मौके पर कई लाभार्थियों को ऋण स्वीकृति पत्र भी प्रदान किये गये.

**UCO Bank organized grand SME and Agriculture Carnival in Muzaffarpur**

OUR CORRESPONDENT

PATNA: UCO Bank organized grand SME (Micro, Small and Medium Enterprises) and Agriculture Carnival in Muzaffarpur on Monday, in which more than 100 entrepreneurs participated. The objective of this programme was to provide information about banking services, loan facilities and government schemes to local entrepreneurs and farmers and to encourage them.

will continue to provide strong support in the future as well.

The programme was chaired by Motilal Banot, Zonal Head of Patna Zone of UCO Bank. He assured the entrepreneurs present that the bank is committed to provide every possible loan facility by understanding their needs. He also said that the Bank's policy is based on "speed, transparency and cooperation."

During the program, loan sanction letters were also given to some beneficiaries. This instilled enthusiasm and confidence among the entrepreneurs present.

The entrepreneurs expressed their gratitude to UCO Bank for organizing this event and said that such programs are very helpful in promoting business at the local level. They appreciated the Bank's quick and cooperative process.

**यूको बैंक की नई शाखा का चनपिटिया में हुआ शुभारंभ**



patna@inext.co.in  
PATNA (14 Aug): भारत सरकार की अग्रणी बैंक यूको बैंक की नई शाखा का उद्घाटन पश्चिम चंपारण के चनपिटिया में हुआ. इस शाखा का उद्घाटन बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी अश्वनी कुमार ने आभासी माध्यम से किया. यूको बैंक 1943 से देशभर में अपनी सेवाएं दे रहा है और अब चनपिटिया में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है. इस अवसर पर पटना अंचल के अंचल प्रमुख मोतीलाल बानोत, बैंक के अन्य कर्मचारी, स्थानीय व्यापारी और नागरिक उपस्थित थे. बानोत ने कहा कि बैंकिंग प्रणाली भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और चेजिंग इकोनोमिक आवश्यकताओं को देखते हुए बैंकिंग सेवाओं की पहुंच को बढ़ाना आवश्यक है. उन्होंने नागरिकों से यूको बैंक से जुड़ने और उसकी सेवाओं का लाभ उठाने का आग्रह किया.

रिपोर्ट तम से बहुत ही अच्छा लगता है। बदती मान को देखते हुए उम्मीद है कि प्रतिदिन 350 हजार लोगों ने अपनी मजबूत पहचान बना रहेगी।

**यूको बैंक के अधिकारियों ने पौधरोपण किया**



पटना। यूको बैंक द्वारा 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक स्वच्छता पखवाड़े कार्यक्रम के तहत इंदिरा गांधी तारामंडल परिसर में पौधरोपण किया गया। मौके पर प्रबल कार्यालय, कोलकाता के महाप्रबंधक ने पौधा लगाया। पटना अंचल के अंचल प्रमुख मोतीलाल बानोत भी मौजूद रहे। महाप्रबंधक ने कहा कि पौधरोपण संप्रसारण और स्वच्छता का प्रतिबन्धन किया जा सकता है।

**रीपीएस कॉलेज में विज्ञान संगोष्ठी आयोजित**

**यूको बैंक UCO BANK**  
(A Govt. of India Undertaking)  
Honours Your Trust

अंचल कार्यालय: चौबा तल्ला, मौर्यालोक कॉम्प्लेक्स, न्यू डाकबंगला रोड, पटना-1 परिसर की आवश्यकता

यूको बैंक 800-1200 वर्ग फीट क्षेत्रफल वाला परिसर, अधिमानतः भूतल पर या प्रथम तल (यदि परिसर मॉल, शॉपिंग सेंटर में है, जहां लिफ्ट, चढ़ती सीढ़ी, एस्केलेटर जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हों), किराए पर बाजार क्षेत्र में लेना चाहता है। निम्नलिखित स्थानों पर शाखा के लिए परिसर की आवश्यकता है:-

क्रम संख्या	जिला	स्थान का नाम
1	पूर्वी चंपारण	छतौनी
2	पूर्वी चंपारण	रक्सौल
3	गोपालगंज	निररंज
4	मधुबनी	इंझारपुर
5	नालन्दा	राजगीर
6	पटना	बाढ़
7	पटना	अशोक राजघरा
8	पटना	रक्षा बजार
9	पश्चिमी चंपारण	बगहा

इस संबंध में विस्तृत जानकारी बैंक के अंचल कार्यालय (चौबी मॉडल, ए-ब्लॉक, मौर्यालोक कॉम्प्लेक्स, पटना-800001) अथवा क्री गार्जेंड कुरावाहा, मुख्य प्रबंधक मोबाइल संख्या 9451579700 से प्राप्त किया जा सकता है या यूको बैंक की वेबसाइट: [www.ucobank.com/Notices](http://www.ucobank.com/Notices) से डाउनलोड किया जा सकता है। निर्धारित प्रारूप पर सोल्वेंड लिफाफे में आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि 04.08.2025 है।

स्थान: पटना  
दिनांक: 20.07.2025  
उप अंचल प्रमुख

**यूको बैंक का स्वच्छता पखवाड़े के तहत पौधरोपण**



पटना। यूको बैंक द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत गुरुवार को इंदिरा गांधी तारामंडल परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बैंक मुख्यालय, कोलकाता से पधार महाप्रबंधक ने किया। इस अवसर पर पटना अंचल प्रमुख मोतीलाल बानोत भी उपस्थित रहे। महाप्रबंधक ने स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण को नागरिकों की जिम्मेदारी बताते हुए कहा कि यूको बैंक सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने में हमेशा अग्रणी रहा है। यह पखवाड़ा 2 अक्टूबर तक चलेगा।

पटना। यूको बैंक द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत गुरुवार को इंदिरा गांधी तारामंडल परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बैंक मुख्यालय, कोलकाता से पधार महाप्रबंधक ने किया। इस अवसर पर पटना अंचल प्रमुख मोतीलाल बानोत भी उपस्थित रहे। महाप्रबंधक ने स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण को नागरिकों की जिम्मेदारी बताते हुए कहा कि यूको बैंक सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने में हमेशा अग्रणी रहा है। यह पखवाड़ा 2 अक्टूबर तक चलेगा।

**यूको बैंक UCO BANK**  
(A Govt. of India Undertaking)  
Honours Your Trust

अंचल कार्यालय: चौबा तल्ला, मौर्यालोक कॉम्प्लेक्स, न्यू डाकबंगला रोड, पटना-1 परिसर की आवश्यकता

यूको बैंक 800-1000 वर्ग फीट क्षेत्रफल वाला परिसर, अधिमानतः भूतल पर या यदि परिसर मॉल, शॉपिंग सेंटर में है, जहां लिफ्ट, चढ़ती सीढ़ी (एस्केलेटर) जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हों, तो प्रथम तल पर, किराए पर लेना चाहता है। हमारी मौजूदा जगहों में, जो स्थानांतरित करने के लिए प्राथमिकता जगहों में बाजार क्षेत्र/बाजार के पास परिसर की आवश्यकता है।

इस संबंध में विस्तृत जानकारी हेतु यूको बैंक की जगहों पर शाखा, या यूको बैंक के अंचल कार्यालय (चौबी मॉडल, ए-ब्लॉक, मौर्यालोक कॉम्प्लेक्स, पटना-800001) से प्राप्त किया जा सकता है या यूको बैंक की वेबसाइट [www.ucobank.com](http://www.ucobank.com) से डाउनलोड किया जा सकता है। निर्धारित प्रारूप पर सोल्वेंड लिफाफे में आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि 05.07.2025 है। आवेदन जगहों शाखा या पटना अंचल कार्यालय में जमा करें।  
स्थान: पटना  
दिनांक: 20.06.2025  
उप अंचल प्रमुख

# यूको बैंक :: समाचार पत्रों में

आवेदन दर्ज हान क एक सप्ताह क अंदर कार्या का निम्नान किया जाएगा।



**यूको बैंक**  
(भारत सरकार का उपक्रम)  
समाधान आपकी विचाराता का



**UCO BANK**  
(A Govt. of India Undertaking)  
Honours Your Trust

**अंचल कार्यालय, पटना**

चौथा तल्ला, ब्लॉक-ए, मौर्या लोक कॉम्प्लेक्स, न्यू डाकबंगला रोड, पटना-800001  
फोन-0612-2201119 मेल आईडी: zopatna.gad@ucobank.co.in

**पैनल में शामिल करने के लिए आवेदन आमंत्रित करने का नोटिस**

यूको बैंक बिहार में विभिन्न वित्तीय श्रेणियों (आर्किटेक्ट/ फर्निचिंग/ इलेक्ट्रिकल/ सिविल) में बैंक के पैनल में शामिल होने के लिए प्रतिष्ठित विक्रेताओं/ ठेकेदारों और आर्किटेक्ट्स से सीलबंद कोटेसन आमंत्रित करता है। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 31.07.2025 को दोपहर 3:00 बजे तक है। अधिक जानकारी और आवेदन दस्तावेज डाउनलोड करने के लिए हमारी वेबसाइट देखें: [www.ucobank.com/notices](http://www.ucobank.com/notices)

स्थान: पटना  
दिनांक: 16.07.2025

अंचल प्रबंधक  
यूको बैंक, अंचल कार्यालय

## यूको बैंक ने एसएमई एवं कृषि कार्निवल का आयोजन

पटना | यूको बैंक द्वारा मुजफ्फरपुर में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम एवं कृषि कार्निवल का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्थानीय उद्यमियों एवं किसानों को बैंकिंग सेवाओं, ऋण सुविधाओं एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान कर प्रोत्साहित करना था। उपमहाप्रबंधक रवि शंकर पाठक ने भारतीय अर्थव्यवस्था में SME एवं कृषि क्षेत्र की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इन दोनों क्षेत्रों की मजबूती देश की आर्थिक स्थिरता, रोजगार सृजन एवं ग्रामीण विकास की कुंजी है। बैंक हमेशा इनके साथ खड़ा रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता यूको बैंक के पटना अंचल के अंचल प्रमुख मोतीलाल बानोत ने की।



**यूको बैंक**  
(भारत सरकार का उपक्रम)



**UCO BANK**  
(A Govt. of India Undertaking)  
Honours Your Trust

**अंचल कार्यालय**  
चौथा तल्ला, मौलिक कॉम्प्लेक्स  
न्यू डाकबंगला रोड, पटना-800 001

**ई-ऑक्शन**  
विक्री सूचना

**अंचल सम्पत्तियों की विक्री के लिए विक्री सूचना 'अपडिन्ड-IV-A (नियम 8 (6) के विषय देखें)**

विक्री सूचना का प्रतिकारण और पुष्टिकरण और प्रकाशित अतिरिक्त 2025 के पास अंचल कार्यालय की वेबसाइट पर नियम 8 (6) के विषय देखें।

क्र. सं.	विक्रेता और विक्रेता का नाम एवं पता	क्र. सं.	विक्री सूचना (नियम 8 (6) के विषय देखें)	विक्री का विवरण
1.	उपरोक्त सूचना के अनुसार	1.	अंचल कार्यालय (नियम 8 (6) के विषय देखें)	अंचल कार्यालय का पूरा स्थान और भूखंड
2.	उपरोक्त सूचना के अनुसार	2.	अंचल कार्यालय (नियम 8 (6) के विषय देखें)	अंचल कार्यालय का पूरा स्थान और भूखंड

ई-ऑक्शन विक्री की तिथि और समय: 24 अगस्त, 2025 को सुबह 11:00 बजे से सुबह 02:00 बजे तक।  
(अधिक 10 मिनट के अतिरिक्त अंतिम एंटर के साथ और अधिकतर 10 इन्कर तक के गारंटी में करेंगे)  
एंटरों के पास बसने वाले बैंक की अंतिम तिथि और समय: 25 अगस्त, 2025, सुबह 10:00 बजे तक।

जानकारी के लिए: (फोन) 0612-2201119  
जानकारी के लिए: (ईमेल) zopatna.gad@ucobank.com  
जानकारी के लिए: (वेबसाइट) [www.ucobank.com](http://www.ucobank.com)

दैनिक भास्कर 22-06-2025



**यूको कार्निवल**  
संसाधन | एमएसएमई | कृषि | खदरा  
23-24 जून, 2025  
(संपूर्ण देश में)

**उद्यम से समृद्धि**

एमएसएमई  
यूको अधिवहन  
एमएसएमई प्रोत्सायन  
यूको कॉन्सल्ट  
यूको ईए प्रमोशन  
यूको उद्यमपरिचय

**कृषि से उन्नति**

यूको एसाईक  
यूको खदरा पैकेज  
यूको एफएमडीसीपीक  
यूको कृषिपरिचय  
यूको यौवसमयकर्म

**संचय से वृद्धि**

यूको सुविधा पैकेज  
यूको क्लिअर  
यूको जय लक्ष्मी  
यूको 4+4  
यूको संचयिका

उपमहाप्रबंधक: 10, बी.टी.एच. रोड, मुजफ्फरपुर-700 001  
अधिक जानकारी हेतु हमारी क्लबकी शाखा में जाए / संपर्क करें: 08042310369

**यूको बैंक**  
(भारत सरकार का उपक्रम)  
Honours Your Trust

www.ucobank.com | UCOBankOfficial | official.ucobank | official.ucobank | UCO Bank  
UCO Bank Official | @Official.UCOBank | 1800-102-9123 | 7666399400 | 8334001234



**यूको बैंक**  
(भारत सरकार का उपक्रम)



**UCO BANK**  
(A Govt. of India Undertaking)

**ZONAL OFFICE**  
4th Floor, Mauryalok Complex  
New Dak Bunglow Road, Patna-800 001

**E-AUCTION**  
SALE NOTICE

**SALE NOTICE FOR SALE OF IMMovable PROPERTIES 'APPENDIX-IV-A (see proviso to Rule 8(6))**

Auctioneers/See Notice for Sale of Immovable Assets under Sequestration and the Receivables of the Financial Assets and Enforcement of Securities Interest Act 2002 read with proviso to rule 8(6) of the Securitization and Enforcement of Securities Interest Act 2002.

S. No.	Name of the Borrower(s) & Guarantor(s) alongwith their respective address	Date of Demand Notice & Amount Due	Date of Possession & Title of Possession	Reserve Price (in Lakhs) & EMD (in Lakhs) & Bid Increase amount (in Lakhs)	Recoverable Amount	Description of Property(ies)
1.	1. Immovable Raju Kumar, Anil Up Singh, Narayan Prasad, Sampatnaha, Galsitnaha, Patna-800007 2. Immovable Sarwanand Devi, Jai W/o Raju Kumar, Sampatnaha, Galsitnaha, Patna-800007	14.02.2025 (Rs. 75,85,200.07/-) Calculated up to 31.03.2025 @14% annualized interest, charge, cost and expenses etc.	30.06.2025 (i) Sample Possession	(a) Rs. 36.27 (bids) (b) Rs. 20 Lakhs (c) Rs. 0.20 (bids)	Rs. 20,00,000.00/- (Rupees Twenty Two Lakhs Twenty Thousand Two Hundred & Eighty Seven Rupees only) Fifty Three Thousand Two Hundred & Eighty Seven Rupees only 11.01.2025 plus unpaid interest, charges, cost and expenses etc.	All three part and parcel of Land & building owned by Mr. Raju Kumar Up Singh Narayan Prasad located at Mauryalok Road (Patna) House No. 1275, House No. 14, Road No. 228, Phase No. 227, House No. 1275, Apartment, within the SDC Patna City District Patna-800043, H. No. 10 (Dwellable) 8th floor 2000000000

DATE & TIME OF AUCTION SALE: 26th day of August, 2025 between 11.00 am to 02.00 pm.  
(with unlimited auto-extension of 10 minutes each and bids shall be in multiples of Rs. 10,000/-)  
Last date & time of Submission of Bid along with EMD: 25th day of August, 2025 at 02.00 PM.

Details of immovable circumstances: (W/L)  
Terms and Conditions: 1. The sale shall be subject to the terms & conditions as prescribed in the Securitization and Enforcement of Securities Interest Act 2002. Detailed terms and conditions of the sale is available at [www.ucobank.com](http://www.ucobank.com)  
2. The property to be sold is titled as 'W/L' and 'W/L' & 'Wholesale' items as listed.  
3. The particulars of the assets specified in the 'Description of the Property' herein above have been stated to the best of the information of the Auctioneer. But the Auctioneer Officer shall not be responsible for any error, misstatement or omission in this proclamation.  
4. The sale will be done for the unsecured (free) and secured (with mortgage) of the property with the UCO Bank and start at 11.00 am on 26.08.2025.  
5. It is open to the Bidders to appoint a representative for placing bid in order to participate in the auction.

Place: Patna  
Date: 22.07.2025

Authorized Officer  
UCO BANK

## ग्रामीणों को दी गई बैंकिंग सेवा की जानकारी



कजरा। बुधवार को यूको बैंक की शाखा पीरी बाजार ने कजरा क्षेत्र के श्रीकिशुन कोड़ासी, श्रीधना, नरोत्तमपुर, मंडियामा आदि गांव पहुंचकर केसीसी ऋणधारियों से मिलकर ऋण भुगतान करने को कहा गया। ऋण वसूली अभियान में यूको बैंक मुख्य प्रबंधक राजेन्द्र कुशावाहा, सीनियर मैनेजर रणवीर कुमार, शाखा प्रबंधक विजय कुमार, बीसी धर्मदेव कुमार, गौतम कुमार, निवास यादव आदि कर्मी मौजूद थे। यूको बैंक शाखा पीरी बाजार के बैंक प्रबंधक विजय कुमार ने कहा कि क्षेत्र के किसानों की आय दोगुना हो इसके लिए बैंक आगे बढ़ चढ़कर कार्य कर रही है। किसान इसका लाभ उठाए। साथ ही किसान कर्ज माफी की सोच को बदलें और ऋण चुकता कर नया ऋण प्राप्त करें। मुख्य प्रबंधक राजेन्द्र कुशावाहा, सीनियर मैनेजर रणवीर कुमार ने संयुक्त रूप से कजरा नरोत्तमपुर गांव में लोगों के बीच प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, जीवन ज्योति योजना और एल पेंशन योजना की जानकारी दी गयी।

## बैंकिंग सेवाओं व योजनाओं की दी जानकारी

पटना। यूको बैंक द्वारा सोमवार को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) एवं कृषि कार्निवल का आयोजन मुजफ्फरपुर में किया गया। इसमें सी स ज्योती उद्यमियों ने भाग लिया। इसका उद्देश्य उद्यमियों व किसानों को बैंकिंग सेवाओं, कर्ज सुविधाओं व सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान करना है। बैंक के उप महाप्रबंधक रविशंकर पाठक ने संबोधित किया। अध्यक्षता पटना अंचल के अंचल प्रमुख मोतीलाल बानोत ने की।

## साइबर सुरक्षा: डिजिटल बैंकिंग युग की अनिवार्य ढाल

डिजिटल क्रांति और सुरक्षा का द्वंद्व

आज हम उस दौर में हैं जहाँ बैंकिंग शाखाओं की दीवारों से निकलकर हमारे स्मार्टफोन और 'वियरेबल गैजेट्स' में समा गई है। डिजिटल बैंकिंग ने न केवल लेन-देन को सुगम बनाया है, बल्कि वित्तीय समावेशन को भी नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया है। हालाँकि, इस सुविधा के साथ-साथ एक काला पक्ष भी उभरकर सामने आया है— 'साइबर अपराध'। जैसे-जैसे तकनीक उन्नत हुई है, वैसे-वैसे साइबर अपराधियों के हमले भी अधिक परिष्कृत और घातक हो गए हैं। इस डिजिटल युग में साइबर सुरक्षा अब केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि हमारी वित्तीय जीवनरेखा की सुरक्षा हेतु एक अनिवार्य ढाल है। आज साइबर अपराधी तकनीक का उपयोग उतनी ही चतुराई से कर रहे हैं जितनी हम सुविधा के लिए करते हैं। इसलिए साइबर सुरक्षा केवल तकनीकी व्यवस्था नहीं, बल्कि एक सतत अभ्यास है—एक ऐसी आदत जिसे हर उपयोगकर्ता और हर बैंक कर्मचारी को अपने दैनिक व्यवहार का हिस्सा बनाना होगा।

### साइबर खतरों के नए आयाम

आधुनिक युग में साइबर अपराधी केवल तकनीकी खामियों का फायदा नहीं उठाते, बल्कि वे 'मानवीय मनोविज्ञान' के साथ खेलते हैं। वर्तमान में प्रमुख खतरे इस प्रकार हैं:

1. जेनरेटिव एआई और डीपफेक : अपराधी अब एआई का उपयोग करके बैंक अधिकारियों या परिवार के सदस्यों की हूबहू आवाज और वीडियो बना रहे हैं। इसे 'वॉयस क्लोनिंग' कहा जाता है, जिसके जरिए ग्राहकों को भ्रमित कर आपातकालीन फंड ट्रांसफर करवाया जाता है।
2. रैंसमवेयर हमले : यह एक ऐसा सॉफ्टवेयर है जो आपके डिवाइस के डेटा को 'लॉक' कर देता है और उसे खोलने के बदले में फिरौती की मांग की जाती है। बैंकिंग क्षेत्र में यह व्यक्तिगत और व्यावसायिक डेटा के लिए बड़ा खतरा है।
3. स्मिशिंग और विशिंग : एसएमएस के माध्यम से फर्जी लिंक भेजना या फोन कॉल पर डरा-धमकाकर (जैसे: "आपका खाता बंद होने वाला है") जानकारी मांगना आज भी सबसे सफल साइबर हथकंडा बना हुआ है।
4. सर्च इंजन फिशिंग: हैकर्स गूगल या अन्य सर्च इंजन पर बैंक की फर्जी हेल्पलाइन नंबर वाली वेबसाइट को विज्ञापन के जरिए सबसे ऊपर दिखाते हैं। ग्राहक अनजाने में इन नंबरों पर कॉल कर अपनी गोपनीय जानकारी साझा कर देते हैं।

### सुरक्षा प्रोटोकॉल : सुरक्षा के अभेद्य स्तर

डिजिटल बैंकिंग को सुरक्षित बनाने के लिए त्रि-स्तरीय सुरक्षा ढांचे को समझना आवश्यक है:

1. प्रथम स्तर (व्यक्तिगत सतर्कता): पासवर्ड प्रबंधन सबसे बुनियादी सुरक्षा है। '123456' या अपनी जन्मतिथि जैसे सरल पासवर्ड के स्थान पर जटिल अल्फ़ान्यूमेरिक पासवर्ड का उपयोग करें। साथ ही, समय-समय पर अपना ट्रांजेक्शन पिन बदलें।

"सतर्क बैंकर, सुरक्षित ग्राहक"

बैंक कर्मचारी के रूप में हमारी जिम्मेदारी केवल लेनदेन तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्राहकों को सुरक्षा के प्रति शिक्षित करना भी है। हर ग्राहक को यह बताना न भूलें

2. द्वितीय स्तर (तकनीकी सुरक्षा): 'मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन' को सक्रिय करें। इसमें पासवर्ड के बाद बायोमेट्रिक और फिर अंत में एक डायनेमिक ओटीपी की आवश्यकता होती है। यह प्रक्रिया हैकर्स के लिए सेंध लगाना असंभव बना देती है।
3. तृतीय स्तर (नेटवर्क सुरक्षा): बैंकिंग लेनदेन के लिए कभी भी 'पब्लिक वाई-फाई' का उपयोग न करें। यदि अनिवार्य हो, तो हमेशा एक विश्वसनीय वीपीएन का उपयोग करें ताकि आपका डेटा एन्क्रिप्टेड रहे।

### यदि धोखाधड़ी हो जाए, तो क्या करें?

सतर्कता के बावजूद यदि कोई अप्रिय घटना घटती है, तो समय ही सबसे बड़ा कारक होता है:

1. तुरंत रिपोर्ट : भारत सरकार की साइबर हेल्पलाइन 1930 पर तुरंत कॉल करें या National Cyber Crime Reporting Portal पर शिकायत दर्ज करें।
2. बैंक को सूचना : तुरंत अपने बैंक की नजदीकी शाखा या टोल-फ्री नंबर पर कॉल कर अपने खाते और कार्ड को ब्लॉक करवाएं।
3. कानूनी प्रक्रिया : स्थानीय पुलिस स्टेशन में ई-एफआईआर दर्ज करवाएं।

#### "सुरक्षा के 5 'न'"

अनजान कॉल पर 'न' कहें।

ओटीपी साझा करने को 'न' कहें।

संदिग्ध लिंक क्लिक करने को 'न' कहें।

अनजान ऐप डाउनलोड करने को 'न' कहें।

असुरक्षित वाई-फाई उपयोग को 'न' कहें।

सुरक्षा की पहली परत जागरूकता है। यदि उपयोगकर्ता सतर्क है, तो अधिकांश साइबर ठगी के प्रयास प्रारंभिक स्तर पर ही विफल हो सकते हैं। संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करना, अज्ञात कॉल पर जानकारी साझा न करना और आधिकारिक माध्यमों से ही लेन-देन करना—ये सरल उपाय बड़े नुकसान से बचा सकते हैं। बैंक कर्मचारियों के लिए भी यह आवश्यक है कि वे ग्राहकों को समय-समय पर जागरूक करें और उन्हें सुरक्षित डिजिटल व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित करें। साथ ही, संस्थागत स्तर पर भी साइबर सुरक्षा को प्राथमिकता देना अनिवार्य है। मजबूत पासवर्ड नीति, दो-स्तरीय प्रमाणीकरण, नियमित सिस्टम अपडेट, सुरक्षित नेटवर्क और डेटा एन्क्रिप्शन जैसे उपाय सुरक्षा को सुदृढ़ बनाते हैं। कर्मचारियों का नियमित प्रशिक्षण, मॉक ड्रिल और संदिग्ध गतिविधियों की रिपोर्टिंग की स्पष्ट व्यवस्था साइबर जोखिमों को कम करने में सहायक होती है। तकनीक जितनी उन्नत होगी, सुरक्षा उपाय भी उतने ही सक्रिय और अद्यतन होने चाहिए। यह भी महत्वपूर्ण है कि किसी घटना की स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया दी जाए। यदि धोखाधड़ी की आशंका हो, तो तुरंत संबंधित बैंक शाखा, साइबर हेल्पलाइन या प्राधिकरण को सूचित करना चाहिए। समय पर की गई कार्रवाई कई बार नुकसान को सीमित कर सकती है। ग्राहक और बैंक के बीच त्वरित संवाद और पारदर्शिता विश्वास को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

डिजिटल बैंकिंग का भविष्य 'कैशलेस' और 'पेपरलेस' समाज की ओर बढ़ रहा है। इस यात्रा को सफल बनाने के लिए विश्वास सबसे महत्वपूर्ण है, और यह विश्वास केवल 'साइबर सुरक्षा' के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। हम एक बैंकर और एक सजग नागरिक के रूप में 'डिजिटल साक्षरता' का प्रसार करें। याद रखें, तकनीक कितनी भी उन्नत क्यों न हो जाए, एक जागरूक और सतर्क मानव मस्तिष्क ही साइबर अपराध के खिलाफ सबसे सशक्त हथियार है। साइबर सुरक्षा को बोझ नहीं, बल्कि सुरक्षा कवच के रूप में अपनाएँ—तभी डिजिटल बैंकिंग का यह युग वास्तव में सुरक्षित, सशक्त और विश्वसनीय बन सकेगा।

✍ कुमार चिरंजीव राय  
वरिष्ठ प्रबन्धक  
अंचल कार्यालय, पटना

दीवाली की दोपहर थी। पूरा घर गेंदे के फूलों और बिजली की लड़ियों से जगमगा रहा था। 75 वर्षीया सावित्री देवी अपनी पुरानी डायरी और चश्मा लेकर सोफे पर बैठी थीं। डायरी में उन सभी बच्चों और नाती-पोतों के नाम लिखे थे, जिन्हें उन्हें दीवाली का 'शगुन' भेजना था।

सावित्री देवी ने अपने पोते आर्यन को आवाज दी, "अरे ओ आर्यन! ज़रा बैंक तक हो आ। कैश खत्म हो गया है, बच्चों के लिफाफे तैयार करने हैं।"

आर्यन, जो सोफे पर बैठा अपने मोबाइल में व्यस्त था, मुस्कराते हुए बोला, "दादी, अब धूप में बैंक जाने की क्या जरूरत? बैंक तो अब आपके हाथ में है।"

सावित्री देवी ने ठुनक कर कहा, "रहने दे अपनी ये बड़ी-बड़ी बातें! वो मोबाइल वाला बैंक मुझे समझ नहीं आता। और फिर, शगुन तो हाथ से देने में ही अच्छा लगता है। ये तेरा 'डिजिटल' प्यार मुझे फीका लगता है।"

आर्यन दादी के पास आकर बैठ गया। उसने प्यार से उनका हाथ पकड़ा और बोला, "दादी, प्यार फीका नहीं होता, बस तरीका बदल जाता है। अच्छा ये बताइए, छोटी बुआ इस बार दीवाली पर नहीं आ पा रही हैं न? आप उन्हें शगुन कैसे भेजेंगे?"

सावित्री देवी उदास होकर बोलीं, "वही तो सोच रही हूँ। मनीऑर्डर में तो हफ्तों लग जाएंगे।"

"यही तो जादू है दादी!" आर्यन ने अपना फोन निकाला और मोबाइल बैंकिंग ऐप खोला। उसने दादी को दिखाया, "देखो, यह आपके बैंक का ऐप है। यहाँ बुआ का मोबाइल नंबर डालिए और यह देखिए... मैंने 'शगुन' के 2100 रुपये लिखे। अब बस आप अपना वो सीक्रेट पिन डाल दीजिए।"

सावित्री देवी ने झिझकते हुए अपनी उँगलियों से पिन दबाया। अगले ही पल 'टिन-टिन' की आवाज हुई। आर्यन ने तुरंत बुआ को वीडियो कॉल किया। बुआ का चेहरा खुशी से दमक रहा था। उन्होंने अपना फोन दिखाते हुए कहा, "माँ! मिल गया दीवाली का शगुन! अभी-अभी मैसेज आया। आपने तो कमाल कर दिया, इस उम्र में भी आप इतनी 'स्मार्ट' हो गईं!"

सावित्री देवी की आंखों में खुशी के आंसू थे। उन्होंने देखा कि कैसे मीलों दूर बैठी बेटे के चेहरे पर उनकी एक छोटी सी कोशिश ने मुस्कान बिखेर दी थी।

आर्यन ने शरारत से पूछा, "क्यों दादी, अब भी बैंक जाना है?"

दादी ने हंसते हुए आर्यन के सिर पर हाथ फेरा और बोलीं, "नहीं रे! अब तो मेरा यूको बैंक मेरी जेब में है। इस बार की दीवाली सच में 'डिजिटल दीवाली' है। चल, अब ज़रा पड़ोस वाली काकी को भी सिखा दें, वो भी बेचारी शगुन के लिए परेशान हो रही थीं।"

उस दिन सावित्री देवी ने न केवल शगुन भेजा, बल्कि तकनीक के डर को जीतकर अपने परिवार से जुड़ने का एक नया जरिया भी पा लिया था।

भवानी शंकर

प्रबन्धक

अंचल कार्यालय, पटना

तकनीक उम्र की मोहताज नहीं होती; यह केवल दूरियों को मिटाने और अपनों के करीब आने का एक आधुनिक माध्यम है।



भारत के छोटे कस्बों में हजारों हुनरमंद कलाकार रहते हैं, जिनकी आँखों में आसमान छूने के सपने तो होते हैं, पर पैरों में संसाधनों की बेड़ियाँ होती हैं। दरभंगा जिला के एक छोटे से गाँव के रहने वाले राघव पारंपरिक लकड़ी के खिलौने बनाते थे। उनकी कला में जादू था, लेकिन उनका व्यापार केवल स्थानीय बाजारों तक सीमित था। वे अक्सर सोचते थे कि काश उनके पास बड़ी मशीनें और कच्चा माल खरीदने की पूंजी होती, तो वे भी अपने खिलौने विदेशों में भेज पाते।

अक्टूबर, 2024 का महीना राघव के जीवन में एक बड़ी परीक्षा लेकर आया। एक अंतरराष्ट्रीय ई-कॉमर्स पोर्टल ने उनकी कला को सराहा और उन्हें 'हस्तशिल्प उत्सव' के लिए 5,000 खिलौनों का एक बड़ा ऑर्डर दिया। शर्त यह थी कि माल 30 दिनों के भीतर तैयार होना चाहिए। राघव के लिए यह जीवन का सबसे बड़ा अवसर था, लेकिन उनके पास कच्चा माल खरीदने के लिए ₹5 लाख की तत्काल आवश्यकता थी। राघव के मन में डर था। उन्हें लगा कि बैंक जाने पर ढेरों कागजात मांगे जाएंगे, गारंटर की जरूरत होगी और जब तक लोन मंजूर होगा, तब तक ऑर्डर की समय-सीमा निकल जाएगी।

एक शाम, राघव हताश होकर अपनी दुकान पर बैठे थे। उन्होंने अपनी पासबुक अपडेट करने और कुछ लेन-देन देखने के लिए अपना मोबाइल निकाला और मोबाइल बैंकिंग ऐप खोला। ऐप के होम स्क्रीन पर एक चमकता हुआ विकल्प दिखा— "तत्काल डिजिटल ऋण"। राघव ने कौतूहलवश उस पर क्लिक किया। सिस्टम ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से राघव के पिछले दो वर्षों के अनुशासित लेन-देन के रिकॉर्ड और उनके शानदार क्रेडिट स्कोर का विश्लेषण मात्र कुछ सेकंड में कर लिया। स्क्रीन पर संदेश दिखा: "प्रिय राघव, आपकी साख और विश्वास के आधार पर, आप ₹5,00,000 के 'प्री-एप्रूव्ड' ऋण के लिए पात्र हैं। क्या आप आगे बढ़ना चाहते हैं?"

राघव को अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था। उन्होंने 'हाँ' पर क्लिक किया। इसके बाद की प्रक्रिया बिजली की गति से हुई:

1. ई-केवाईसी : आधार कार्ड के माध्यम से उनकी पहचान की तुरंत पुष्टि हो गई।
2. डिजिटल हस्ताक्षर : उन्होंने अपने मोबाइल पर ही ऋण दस्तावेजों पर डिजिटल हस्ताक्षर किए।
3. संवितरण : जैसे ही उन्होंने अंतिम सबमिट बटन दबाया, उनके फोन पर मैसेज आया - "आपके खाते में ₹5.00 लाख की राशि जमा कर दी गई है।"
4. पूरी प्रक्रिया में मात्र 15 मिनट लगे। न कोई फाइल, न कोई चक्कर, न किसी बाबू की सिफारिश।

#### डिजिटल ऋण के लाभ

- शून्य कागजी कार्रवाई: कोई भौतिक दस्तावेज जमा करने की आवश्यकता नहीं।
- त्वरित निर्णय: एआई-आधारित मूल्यांकन से तुरंत पात्रता का पता चलना।
- 24x7 उपलब्धता: ऋण के लिए किसी भी समय, कहीं से भी आवेदन।
- पारदर्शिता: कोई छिपा हुआ शुल्क नहीं, सीधे खाते में पैसा।

उस ऋण राशि से राघव ने तत्काल कच्चा माल खरीदा, दो आधुनिक मशीनें लगाई और अतिरिक्त कारीगरों को काम पर रखा। उन्होंने न केवल समय पर ऑर्डर पूरा किया, बल्कि उनके खिलौनों की गुणवत्ता इतनी शानदार थी कि उन्हें अमेरिका और यूरोप से भी ऑर्डर मिलने लगे। आज राघव की छोटी सी वर्कशॉप एक 'स्मार्ट मैनुफैक्चरिंग यूनिट' में बदल चुकी है। वे अब अपने गाँव के 15 अन्य परिवारों को रोजगार दे रहे हैं। राघव गर्व से कहते हैं— "पहले बैंक जाने के लिए मुझे पूरा दिन निकालना पड़ता था, अब बैंक खुद मेरी जेब में रहता है। बैंक के एक डिजिटल 'क्लिक' ने न केवल मेरा व्यापार बचाया, बल्कि मेरी किस्मत ही बदल दी।"

✍ अरविंद कुमार

प्रबन्धक

अंचल कार्यालय, पटना

राघव की यह कहानी सिद्ध करती है कि डिजिटल बैंकिंग केवल समय बचाने का साधन नहीं है, बल्कि यह सपनों को हकीकत में बदलने का एक सशक्त माध्यम है। बैंक का 'डिजिटल ऋण' तंत्र आज राघव जैसे हजारों उद्यमियों के लिए 'कामधेनु' साबित हो रहा है।

क्र.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिन्दी अर्थ	सरल परिभाषा
1	Phishing	छद्म जाल / फिशिंग	फर्जी ईमेल या लिंक भेजकर ग्राहकों की निजी जानकारी (पासवर्ड आदि) चुराने का प्रयास।
2	Encryption	कूटलेखन	डेटा को एक गुप्त कोड में बदलना ताकि अनधिकृत व्यक्ति उसे पढ़ न सके।
3	Cloud Computing	मेघ संगणना	डेटा को स्थानीय कंप्यूटर के बजाय इंटरनेट पर स्थित सुरक्षित सर्वर पर स्टोर करना।
4	Blockchain	ब्लॉकचेन	एक सुरक्षित और पारदर्शी डिजिटल बहीखाता जिसमें रिकॉर्ड को बदलना लगभग असंभव है।
5	Artificial Intelligence	कृत्रिम मेधा	मशीनों द्वारा मानव जैसी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करना (जैसे- चैटबॉट्स)।
6	Biometric Authentication	जैव-मितीय प्रमाणीकरण	उंगलियों के निशान (Fingerprint) या चेहरे की पहचान से सुरक्षा की पुष्टि करना।
7	Two-Factor Authentication	द्वि-चरणीय प्रमाणीकरण	सुरक्षा के दो स्तर (जैसे- पासवर्ड और फिर ओटीपी)।
8	Digital Wallet	डिजिटल बटुआ	मोबाइल ऐप में पैसे सुरक्षित रखने और भुगतान करने की इलेक्ट्रॉनिक सुविधा।
9	Cyber Security	साइबर सुरक्षा	इंटरनेट से जुड़े सिस्टम, नेटवर्क और डेटा को डिजिटल हमलों से बचाना।
10	Fintech	वित्तीय प्रौद्योगिकी	वित्तीय सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग।
11	E-KYC	इलेक्ट्रॉनिक 'अपने ग्राहक को जानें'	आधार या वीडियो के माध्यम से ग्राहक की पहचान का डिजिटल सत्यापन।
12	Virtual Card	आभासी कार्ड	एक डिजिटल डेबिट/क्रेडिट कार्ड जो केवल मोबाइल ऐप पर दिखता है, भौतिक रूप में नहीं।
13	API	अनुप्रयोग प्रोग्रामिंग इंटरफेस	दो अलग-अलग सॉफ्टवेयर प्रोग्रामों के बीच संचार का एक तकनीकी माध्यम/सेतु।
14	Digital Footprint	डिजिटल पदचिह्न	इंटरनेट का उपयोग करते समय आपके द्वारा छोड़े गए डेटा के निशान।
15	Real-Time Settlement	तत्काल निपटान	वह प्रक्रिया जिसमें पैसा भेजते ही तुरंत दूसरे के खाते में जमा हो जाए।
16	Contactless Payment	संपर्क रहित भुगतान	कार्ड को मशीन में डाले बिना, केवल पास लाकर (NFC तकनीक से) भुगतान करना।
17	Data Privacy	डेटा गोपनीयता	ग्राहक की व्यक्तिगत जानकारी को सुरक्षित रखने और उसके दुरुपयोग को रोकने का अधिकार।
18	Malware	दुर्भावनापूर्ण सॉफ्टवेयर	कंप्यूटर या मोबाइल को नुकसान पहुंचाने या डेटा चोरी करने के लिए बनाया गया वायरस।
19	Tokenization	टोकन व्यवस्था	कार्ड के वास्तविक नंबर को एक 'यूनिक कोड' (टोकन) से बदल देना ताकि डेटा सुरक्षित रहे।
20	Neobank	नियो बैंक	ऐसे बैंक जो केवल डिजिटल रूप में मौजूद हैं और जिनकी कोई भौतिक शाखा नहीं होती।

वह दिसंबर की एक सर्द शाम थी। बिहार के एक छोटे से कस्बे में स्थित बैंक की शाखा के भीतर कीमती एलईडी लाइटों की चमक फाइलों के ढेर पर पड़ रही थी। शाखा प्रबंधक राघव अपनी कुर्सी पर झुके हुए लैपटॉप की स्क्रीन को एकटक निहार रहे थे। स्क्रीन पर 'डिजिटल ट्रांजैक्शन' का ग्राफ उम्मीद से थोड़ा नीचे था।

राघव को इस शाखा में आए अभी तीन महीने ही हुए थे। शहर की चकाचौंध से आए राघव के लिए इस कस्बे की धीमी जिंदगी और ग्राहकों की 'कागज वाली बैंकिंग' की जिद एक बड़ी चुनौती थी। यहाँ लोग आज भी पासबुक की एंट्री को ही अंतिम सत्य मानते थे और मोबाइल बैंकिंग को 'जादू-टोना' या 'धोखाधड़ी का अड्डा' समझते थे।

तभी दरवाजे पर एक हल्की सी दस्तक हुई। सत्तर वर्षीय दीनदयाल जी अंदर आए। उनके हाथ में एक फटी हुई थैली थी और चेहरे पर गहरी चिंता। "साहब, बिटिया की शादी अगले हफ्ते है। शहर से गहने वाले का फोन आया है, उसे आज ही पचास हजार भेजने हैं। पर बाबू कह रहे हैं कि कैश खत्म हो गया है और चेक क्लियर होने में समय लगेगा। मैं क्या करूँ?" दीनदयाल जी की आवाज कांप रही थी।

राघव खड़े हुए। उन्होंने देखा कि दीनदयाल जी के पास एक पुराना स्मार्टफोन तो है, पर वे उसका उपयोग केवल फोन सुनने के लिए करते थे। राघव ने मन ही मन एक निर्णय लिया।

"दीनदयाल जी, आप फिक्र न करें। आप बस पाँच मिनट मेरे पास बैठिए।"

राघव ने उनका फोन लिया और उसमें मोबाइल बैंकिंग सक्रिय करने की प्रक्रिया शुरू की। आसपास खड़े कुछ अन्य ग्राहक उत्सुकता और थोड़े संदेह से देख रहे थे। राघव उन्हें समझाते जा रहे थे, "देखिए, यह ऐप हमारे बैंक की तरह ही सुरक्षित है। इसमें आपका पैसा आपकी उंगलियों के इशारे पर चलता है।" जब पिन सेट हो गया, तो राघव ने दीनदयाल जी से कहा, "अब आप खुद अपनी उंगली से उस दुकानदार का नंबर डालिए और यह राशि भेजिए।"

दीनदयाल जी के हाथ कांप रहे थे। उन्होंने राघव के भरोसे पर बटन दबाया। अगले ही पल 'बीप' की आवाज हुई और उधर शहर से दुकानदार का फोन आ गया— "चाचा, पैसे मिल गए! गहने पैक कर रहा हूँ।" दीनदयाल जी की आंखों में जो चमक थी, वह राघव के लिए किसी भी 'टारगेट अचीवमेंट' से बड़ी थी। उस एक घटना ने पूरी शाखा का माहौल बदल दिया। जो लोग डिजिटल बैंकिंग से डरते थे, वे अब राघव के इर्द-गिर्द जमा थे।

उस रात जब राघव घर लौटे, तो वे थके जरूर थे, पर उनके मन में एक अजीब सी संतुष्टि थी। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा— "एक बैंकर की जिंदगी केवल पैसे के हिसाब-किताब तक सीमित नहीं है। हम केवल कर्ज नहीं बांटते, हम विश्वास बांटते हैं। डिजिटल बैंकिंग केवल एक तकनीक नहीं है, यह उस बूढ़े पिता के लिए एक 'सेतु' है जो अपनी बेटी की खुशियों के लिए समय से लड़ रहा है।"

अगले दिन, राघव ने शाखा के बाहर एक नया बोर्ड लगवाया— "तकनीक हमारी, भरोसा आपका।"

धीरे-धीरे शाखा का ग्राफ ऊपर चढ़ने लगा। अब वहाँ शोर कम और काम ज्यादा होता था। राघव समझ चुके थे कि भविष्य की बैंकिंग केवल मशीनों से नहीं, बल्कि ग्राहकों के साथ बने उस डिजिटल और मानवीय रिश्ते से चलेगी, जिसकी नींव उन्होंने उस शाम दीनदयाल जी के भरोसे के साथ रखी थी।

भारत विविधता सँ भरल देश अछि। एहि विविधता में भाषा सभक महत्वपूर्ण स्थान अछि। हर भाषा अपन संग संस्कृति, परंपरा आ जीवन-दृष्टि केँ समेटने रहैत अछि। एहि भाषा सभ में मैथिली एक एहन भाषा अछि, जे केवल संवादक माध्यम नहि, बल्कि मिथिला क्षेत्रक संपूर्ण सांस्कृतिक विरासतक प्रतीक अछि।

मैथिली भाषा अत्यंत प्राचीन अछि। एकर मूल वैदिक आ उत्तर-वैदिक काल सँ जुड़ल मानल जाइत अछि। समयक संग अपभ्रंश सँ विकसित होइत मैथिली अपन स्वतंत्र पहचान बनौने अछि। सन् 2003 में भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूची में मैथिली के स्थान मिलनाय एकर ऐतिहासिक आ साहित्यिक महत्ता के आधिकारिक मान्यता देलक।

मैथिली साहित्य एकर आत्मा छी। महाकवि विद्यापति मैथिली साहित्यक सबसऽ उज्ज्वल नक्षत्र छथि। हुनकर पदावली में प्रेम, भक्ति, मानवीय संवेदना आ जीवनक गूढ़ भाव अत्यंत सहज आ मधुर रूप में अभिव्यक्त भेल अछि। लोकगीत, विवाह गीत, ऋतु गीत, मांगलिक गीत आ लोककथा सभ मिथिला समाजक जीवन के जीवंत रूप सँ प्रस्तुत करैत अछि। मैथिली साहित्य पढ़ल नहि जाइत, बल्कि अनुभव कएल जाइत अछि।

मैथिली भाषा मिथिला क्षेत्रक सामाजिक जीवन सँ गहिर संबंध रखैत अछि। पारिवारिक व्यवहार, सामाजिक मर्यादा, संस्कार आ लोकविश्वास सभ में मैथिली स्वाभाविक रूप सँ प्रवाहित होइत अछि। एहि भाषाक माधुर्य आ शालीनता संवाद के आत्मीय बनबैत अछि। मैथिली में कहल गेल बात सीधा हृदय धरि पहुँचैत अछि।

आधुनिक युग में मैथिली अपन समयक संग चलबाक क्षमता सिद्ध कए रहल अछि। शिक्षा, मीडिया, रंगमंच, साहित्य आ डिजिटल प्लेटफॉर्म सभ पर मैथिली भाषा दिनानुदिन मजबूत होइत जा रहल अछि। सोशल मीडिया, ऑनलाइन लेखन आ डिजिटल सामग्री सँ नव पीढ़ी मैथिली सँ फेर जुईइ रहल अछि। ई स्पष्ट करैत अछि जे मैथिली केवल अतीत नहि, बल्कि वर्तमान आ भविष्यक भाषा सेहो अछि।

भाषा केवल संस्कृति नहि, बल्कि समावेशनक साधन सेहो अछि। जँ सेवा क्षेत्र, प्रशासन आ बैंकिंग जेकाँ संस्थान स्थानीय भाषा में संवाद करैत अछि, तऽ आम जनता के अपनापन आ विश्वासक अनुभव होइत अछि। मिथिला क्षेत्र में मैथिली भाषा में बैंकिंग आ प्रशासनिक संवाद सेवा के सहज, प्रभावी आ विश्वसनीय बनबैत अछि।

आई आवश्यकता अछि जे मैथिली के केवल सांस्कृतिक धरोहर मानि कए सीमित नहि राखल जाय, बल्कि व्यवहारिक जीवनक हर क्षेत्र में एकर प्रयोग बढ़ाओल जाय। शिक्षा, तकनीक, प्रशासन आ जनसंचार में मैथिली के स्थान देनाय समयक मांग अछि। भाषा तखनहि जीवंत रहैत अछि, जखन ओ दैनिक जीवनक हिस्सा बनैत अछि।

अंततः कईह सकैत छी जे मैथिली एक जीवंत विरासत अछि—जे पीढ़ी के जोड़ैत अछि, संस्कार के संजोड़ैत अछि आ संवाद के मानवीय बनबैत अछि। मैथिली भाषा के संरक्षित आ प्रोत्साहित करनाय केवल मिथिला क्षेत्रक दायित्व नहि, बल्कि अप्पन सभहक साझा सांस्कृतिक जिम्मेदारी छी। मैथिली जते समृद्ध रहत, ओतबे मजबूत अप्पन सभहक सांस्कृतिक जईइ होयत।

✍ निखिल कुमार झा  
प्रबन्धक  
शाखा - बेलायाकूब

मैथिली केवल अतीतक विरासत नहि, बल्कि भविष्यक सशक्त भाषा अछि।  
जते प्रयोग बढ़त, ओतबे ई जीवंत रहत।

भोरक नरम उजास जखन खिड़की सँ भीतर आबि रहल होइत अछि, ओही समय घर-आँगन में एकटा नब तरहक चहल-पहल देखाइ पड़ैत अछि। हाथ में किताब कम आ मोबाइल फोन बेसी देखाइ दैत अछि। ई समय डिजिटल युगक समय अछि—जतय ज्ञान, मनोरंजन आ संवाद सब किछु एकटा छोट स्क्रीन में समाहित भ' गेल अछि। मुदा एहि बदलैत दौर में जरूरी अछि जे अपने सभ डिजिटल साधनक उपयोग बुद्धिमानी सँ करी आ अपन सांस्कृतिक जड़ि, भाषा आ पढ़बाक परंपरा के जीवित राखी।

बिहारक मैथिली क्षेत्र में साहित्य, लोकगीत, कथा-परंपरा आ वाचनक संस्कृति सदियों सँ जीवित रहल अछि। गामक चौपाल होअय, घरक आँगन होअय या स्कूलक कक्षा—लोकक बीच कथा-कहानी आ किताबक चर्चा आम बात रहल अछि। मुदा आब जखन स्मार्टफोन हर हाथ में पहुँचल अछि, तखन पढ़बाक तरीका बदलि रहल अछि। ई बदलाव खराब नहि, बल्कि अवसर सेहो अछि—बस जरूरत अछि सही दिशा देबाक।

डिजिटल साधनक सबसे पैघ लाभ ई अछि जे आब मैथिली भाषा आ साहित्य के विश्व भर में पहुँचाबय संभव भ' रहल अछि। जे किताब पहिने केवल पुस्तकालय में भेटैत छल, ओ आब ई-बुक आ डिजिटल लाइब्रेरीक माध्यम सँ मोबाइल पर उपलब्ध अछि। युवा पीढ़ी यदि चाहय त' ओ अपन मातृभाषा मैथिली में कविता, कहानी आ लेख सहज रूपेँ पढ़ि सकैत अछि। एतबे नहि, सोशल मीडिया आ ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म पर नव-नव लेखक अपन रचना साझा क' रहल छथि, जाहि सँ भाषा आ साहित्यक दायरा विस्तृत भ' रहल अछि।

मुदा दोसरा पक्ष सेहो अछि। अत्यधिक मोबाइल उपयोग सँ पढ़बाक आदत कम होइत जा रहल अछि। आँखिक थकान, ध्यानक कमी आ समयक अपव्यय सेहो एकटा चुनौती बनि गेल अछि। एहि कारण जरूरी अछि जे डिजिटल साधनक उपयोग संतुलित रूपेँ कयल जाए। यदि दिनक एक निश्चित समय पढ़ाइ, लेखन या अध्ययन लेल निर्धारित क' देल जाए, त' तकनीक सहयोगी बनि सकैत अछि, बाधा नहि।

अभिभावक आ शिक्षकक भूमिका एतय बहुत महत्वपूर्ण अछि। यदि घर में बच्चा केँ मैथिली कहानी सुनाओल जाए, किताब पढ़बाक आदत डालल जाए आ डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सेहो मैथिली सामग्री देखाओल जाए, त' ओ अपन भाषा सँ जुड़ल रहत। स्कूल में जौ शिक्षक स्थानीय भाषा आ साहित्य पर चर्चा करथि, नाटक या वाचन प्रतियोगिता कराबथि, त' बच्चा में भाषा प्रति अपनत्व बढ़त।

लेखक आ संपादक सभक सेहो जिम्मेदारी अछि जे ओ मैथिली में समसामयिक विषय पर लिखथि। डिजिटल बैंकिंग, स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण सन विषय यदि क्षेत्रीय भाषा में प्रस्तुत होय, त' पाठक सभ आसानी सँ समझि सकैत छथि। पत्रिका या समाचार-पत्र में मैथिली लेख शामिल कयल जाए, त' पाठक-वर्ग सेहो विविध आ समृद्ध बनत।

डिजिटल युग अपना सभ केँ एकटा मौका देलक अछि—अपन भाषा आ संस्कृति केँ नया रूप में जीवित रखबाक। यदि अपने सभ गेटे तकनीक आ परंपराक बीच संतुलन बना सकी, त' मैथिली भाषा केवल घर-आँगन में नहि, बल्कि वैश्विक मंच पर सेहो अपन पहचान बना सकैत अछि।

अंत में कहि सकैत छी जे डिजिटल साधन शत्रु नहि, बल्कि साधन अछि। जरूरी केवल एतबे अछि जे अपने सभ ओकर उपयोग सोच-समझि क' करी। जखन मोबाइल हाथ में होय, त' ओ केवल मनोरंजनक माध्यम नहि, बल्कि ज्ञान आ साहित्यक द्वार सेहो बनय। एहि संतुलन सँ अपन भाषा, संस्कृति आ स्वास्थ्य—तीनों के सुरक्षित राइख सकैत छी।

डिजिटल युग में मैथिली साहित्यक उज्ज्वल भविष्य संभव अछि, बस जरूरत अछि—जागरूकता, प्रेम आ सतत प्रयासक।

✍ श्रवण कुमार मिश्रा

वरिष्ठ प्रबन्धक

अंचल कार्यालय, पटना

डिजिटल युग में तकनीक के साथ-साथ मातृभाषा और वाचन संस्कृति को जीवित रखना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

कबहूँ-कबहूँ सोचल जाए त अचरज लागेला कि बैंक अब केतना बदल गइल बा। पहिले बैंक मतलब—लंबा लाइन, मोट फाइल, पासबुक, आ पूरा दिन बरबाद। शाखा पहुँचे में समय, कर्मचारी से मिलला में देर आ काम पूरा होखे में कई घंटा लग जात रहल। बाकिर आज मोबाइल हाथ में बा आ बैंक जेब में समा गइल बा। ई बदलाव के नाँव ह—डिजिटल बैंकिंग। डिजिटल बैंकिंग मतलब बैंकिंग सेवा के इंटरनेट आ मोबाइल के माध्यम से उपयोग। अब खाता देखल हो, पैसा भेजल हो, बिल भुगतान हो, एफडी बनावल हो, लोन के जानकारी लेवे के हो चाहे पेंशन के स्थिति जाने के हो—सब कुछ घर बइठे संभव बा। ई सुविधा खास तौर पर ओ लोग खातिर वरदान साबित भइल बा जे दूर-दराज इलाका में रहेला, जहाँ बैंक शाखा पहुँचल आजो आसान नइखे।

गाँव के रामलाल पहिले बैंक जाए खातिर आधा दिन छुट्टी लेत रहलें। लाइन में खड़ा रहल, कागज भरल आ फिर काम अधूरा रह जाला—ई उनकर रोज के अनुभव रहल। अब ऊ मोबाइल ऐप से ही पेंशन देख लेत बा, बिजली के बिल भर देत बा आ बेटा के फीस भेज देत बा। डिजिटल बैंकिंग रामलाल जइसन लाखों आदमी के समय आ मेहनत दुनो बचावत बा।

डिजिटल बैंकिंग के विस्तार से बैंक आ ग्राहक के संबंध में भी सकारात्मक बदलाव आइल बा। पहिले ग्राहक बैंक के काउंटर पर निर्भर रहल करत रहलें, अब बैंक ग्राहक के हाथ में पहुँच गइल बा। मोबाइल ऐप, इंटरनेट बैंकिंग आ यूपीआई जइसन सुविधा से ग्राहक खुद अपना खाता के मालिक बन गइल बा। ई आत्मनिर्भरता डिजिटल इंडिया के असली पहचान ह। डिजिटल बैंकिंग के सबसे बड़ फायदा ह—पारदर्शिता। हर लेन-देन के तुरंत जानकारी मिल जाला। एसएमएस आ नोटिफिकेशन से ग्राहक हमेशा अपडेट रहलें। गलत लेन-देन के संभावना कम भइल बा आ शिकायत के समाधान भी अब ऑनलाइन संभव बा। बैंकिंग प्रक्रिया तेज भइल बा, जवना से ग्राहक के भरोसा अउरी मजबूत भइल बा।

महिला ग्राहकन खातिर डिजिटल बैंकिंग खास तौर पर उपयोगी साबित भइल बा। स्वयं सहायता समूह, जनधन खाता, डीबीटी आ मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से अब महिला लोग सीधे बैंक से जुड़ रहल बा। घर से बाहर निकले के परेशानी कम भइल बा आ आर्थिक फैसला में उनकर भागीदारी बढ़ल बा। ई बदलाव सामाजिक सशक्तिकरण के दिशा में एक मजबूत कदम ह।

छोट व्यापारी आ किसानन खातिर भी डिजिटल बैंकिंग फायदेमंद साबित भइल बा। सब्जी बेचे वाला, दूध वाला चाहे किराना दुकानदार—यूपीआई से भुगतान लेके ऊ भी औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था से जुड़ रहल बा। किसान मोबाइल से लोन के जानकारी ले सकेला, सब्सिडी के स्थिति देख सकेला आ बीमा प्रीमियम जमा कर सकेला। डिजिटल बैंकिंग से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गति आ स्थिरता आइल बा।

हालाँकि, सुविधा के साथ-साथ सावधानी भी जरूरी बा। डिजिटल बैंकिंग में ठगी आ साइबर अपराध के खतरा भी बढ़ल बा। फर्जी कॉल, ओटीपी मांगल, लिंक भेजल आ डिजिटल अरेस्ट जइसन तरीका से ठग लोग ग्राहक के डरावे ला। एहसे जरूरी बा कि ग्राहक जागरूक बने, कबहूँ भी ओटीपी, पिन आ पासवर्ड साझा ना करे आ संदेह होखे त तुरंत बैंक या साइबर हेल्पलाइन से संपर्क करे। बैंक सभ भी एह दिशा में लगातार प्रयास कर रहल बा। जागरूकता शिविर, एसएमएस अलर्ट, मोबाइल ऐप पर सुरक्षा संदेश, पोस्टर आ प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से ग्राहकन के सतर्क कइल जा रहल बा। डिजिटल तकनीक त साधन ह, असली ताकत जागरूक ग्राहक में बा।

निष्कर्ष रूप में कह सकतानी कि डिजिटल बैंकिंग खाली तकनीकी बदलाव ना, बल्कि सोच के बदलाव ह। ई बदलाव बैंक, ग्राहक आ समाज—तीनों के साथ आगे बढ़ावे के रास्ता खोल रहल बा। डिजिटल बैंकिंग जदि सही समझ आ सावधानी के साथ अपनावल जाए, त ई हर नागरिक के आर्थिक जीवन आसान, सुरक्षित आ सशक्त बना सकेला।

## अनुशासन और ज़िम्मेदारी : सशक्त संस्था की आधारशिला

किसी भी संगठन की सफलता केवल उसकी नीतियों, योजनाओं या लक्ष्यों से निर्धारित नहीं होती, बल्कि उन नीतियों को धरातल पर उतारने वाले मानव संसाधन की कार्यशैली, प्रतिबद्धता और नैतिक दृष्टिकोण से तय होती है। बैंकिंग जैसी विश्वास-आधारित और संवेदनशील व्यवस्था में अनुशासन और ज़िम्मेदारी केवल प्रशासनिक शब्द नहीं, बल्कि संस्थागत अस्तित्व की मूल धुरी हैं। जब कर्मचारी अपने कार्य को केवल दायित्व नहीं, बल्कि सेवा-भाव और उत्तरदायित्व के साथ निभाते हैं, तभी संस्था सुदृढ़ और विश्वसनीय बनती है।

अनुशासन का अर्थ केवल समय पर कार्यालय आना या नियमों का औपचारिक पालन करना नहीं है। यह कार्यस्थल पर समग्र व्यवहार, सोच और कार्य-प्रणाली का संयोजन है। समयपालन, प्रक्रिया-पालन, वेश-भूषा, अभिलेख प्रबंधन, ग्राहक सेवा, कार्यालयीन मर्यादा और संवाद की शालीनता—ये सभी अनुशासन के अंग हैं। जब एक कर्मचारी इन सभी पहलुओं को गंभीरता से अपनाता है, तो वह न केवल अपनी व्यक्तिगत कार्यक्षमता को बढ़ाता है, बल्कि संस्था की छवि को भी सुदृढ़ करता है। ग्राहक का विश्वास केवल उत्पादों और सेवाओं से नहीं, बल्कि कर्मचारियों के व्यवहार और कार्य-संस्कृति से निर्मित होता है।

बैंकिंग क्षेत्र में अनुशासन का एक और महत्वपूर्ण आयाम है—प्रक्रियाओं के प्रति सजगता। प्रत्येक लेन-देन, प्रत्येक अभिलेख और प्रत्येक निर्णय एक व्यापक प्रणाली का हिस्सा होता है। यदि किसी एक स्तर पर लापरवाही होती है, तो उसका प्रभाव पूरे तंत्र पर पड़ सकता है। इसलिए निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि जोखिम-नियंत्रण का सशक्त माध्यम है। अनुशासित कार्य-प्रणाली त्रुटियों की संभावना को कम करती है और कार्य में पारदर्शिता तथा विश्वसनीयता को बढ़ाती है। ज़िम्मेदारी का दायरा भी केवल कार्य निष्पादन तक सीमित नहीं है। यह अपने निर्णयों, आचरण और कार्य-परिणामों के प्रति सजग और उत्तरदायी रहने की भावना है। बैंकिंग कार्य में छोटी-सी चूक भी वित्तीय और प्रतिष्ठागत जोखिम का कारण बन सकती है। ऐसे में प्रत्येक कर्मचारी का यह दायित्व है कि वह हर कार्य को सावधानी, सतर्कता और व्यावसायिक विवेक के साथ संपन्न करे। आंतरिक नियंत्रण, जोखिम प्रबंधन, नियामकीय अनुपालन और ऑडिट प्रक्रिया—इन सभी में व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जब कर्मचारी अपने कार्य को केवल आदेश या दायित्व के रूप में नहीं, बल्कि संस्था के प्रति विश्वास और उत्तरदायित्व के रूप में देखते हैं, तो कार्य की गुणवत्ता स्वतः बढ़ जाती है। यही दृष्टिकोण एक साधारण कार्यस्थल को उत्कृष्ट कार्य-संस्कृति में परिवर्तित करता है। ज़िम्मेदारी की भावना टीम वर्क को सशक्त बनाती है, पारस्परिक सहयोग को बढ़ाती है और कार्यस्थल पर सकारात्मक वातावरण का निर्माण करती है।

अनुशासन को प्रायः दंड या नियंत्रण के संदर्भ में देखा जाता है, जबकि वास्तव में यह संगठनात्मक संस्कृति का सकारात्मक तत्व है। यह वह आधार है जिस पर पारस्परिक सम्मान, विश्वास और समन्वय का निर्माण होता है। वरिष्ठ अधिकारी अपने आचरण और नेतृत्व के माध्यम से अनुशासन का आदर्श प्रस्तुत करते हैं, वहीं कनिष्ठ कर्मचारी उससे प्रेरणा लेकर अपने कार्य में उत्कृष्टता लाने का प्रयास करते हैं। डिजिटल युग में कार्यशैली और प्रक्रियाएँ तेजी से बदल रही हैं। तकनीक ने कार्य को सरल, त्वरित और पारदर्शी बनाया है, पर इसके साथ ज़िम्मेदारी का दायरा भी बढ़ा है। किसी भी प्रकार की लापरवाही न केवल तकनीकी जोखिम उत्पन्न कर सकती है, बल्कि संस्था की साख को भी प्रभावित कर सकती है। अतः प्रत्येक कर्मचारी का यह दायित्व है कि वह तकनीक का उपयोग सुविधा के साथ-साथ सावधानी और संवेदनशीलता के साथ करे। आइए, हम सब मिलकर अनुशासन को अपनी पहचान और ज़िम्मेदारी को अपनी शक्ति बनाएं। आइए, हम सब मिलकर अनुशासन को अपनी पहचान और ज़िम्मेदारी को अपनी शक्ति बनाएं, ताकि हमारी संस्था न केवल लक्ष्य प्राप्ति में सफल हो, बल्कि विश्वास, विश्वसनीयता और उत्कृष्टता की दृष्टि से भी अग्रणी बनी रहे।

राहुल सिंह

वरिष्ठ प्रबन्धक

अंचल कार्यालय, पटना

गाँव की उस पगडंडी पर धूल उड़ाती बस जब रुकी, तो ईशान का मन भारी था। शहर की चकाचौंध, बैंक की नौकरी और फाइलों के अंबार के बीच वह कहीं भूल ही गया था कि गाँव की मिट्टी की खुशबू कैसी होती है। ईशान, जिसे अब लोग 'मिस्टर ईशान, ब्रांच मैनेजर' कहकर पुकारते थे, आज अपने पुराने 'ईशान' को ढूँढने आया था।

बचपन की गर्मियों की छुट्टियाँ ईशान के लिए सिर्फ एक शब्द थी— 'मामाजी'। मामाजी, जो गाँव की छोटी सी डिस्पेंसरी में कंपाउंडर थे, लेकिन ईशान के लिए वे दुनिया के सबसे बड़े जादूगर थे।

ईशान को याद आया, जब वह छोटा था और जिद करता था, तो मामाजी उसे अपनी पुरानी साइकिल पर बिठाकर मीलों दूर वाली दुकान से बर्फ का गोला खिलाने ले जाते थे। मामाजी की साइकिल की वह 'टिन-टिन' घंटी ईशान के लिए किसी मधुर संगीत से कम नहीं थी।



एक बार ईशान ने रोते हुए कहा था, "मामाजी, मुझे शहर जाकर बड़ा अफसर बनना है, पर माँ कहती है कि हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं।"

तब मामाजी ने ईशान के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा था, "ईशान, तू बस पढ़ने का हौसला रख, तेरे मामा का 'बैंक' कभी खाली नहीं होगा।"

उस दिन के बाद मामाजी ने अपनी फटी हुई जेबों और पुरानी साइकिल को कभी नहीं बदला, लेकिन ईशान की हर किताब, हर फॉर्म की फीस समय पर पहुँचती रही। ईशान को लगता था कि मामाजी के पास कोई गुप्त खजाना है।

सालों बाद, जब ईशान बैंक में बड़ा अफसर बन गया, तो वह काम में ऐसा उलझा कि मामाजी से बात सिर्फ 'महीने के खर्च' भेजने तक सीमित रह गई। उसे लगा कि वह अपना कर्ज चुका रहा है।

आज मामाजी के घर पहुँचते ही ईशान का सामना उस पुरानी चारपाई से हुआ, जहाँ मामाजी लेटे हुए थे। आँखें कमजोर हो चुकी थीं, पर चेहरे की मुस्कान वही पुरानी थी।

"आ गया मेरा ईशान?" मामाजी की कांपती आवाज ने ईशान के भीतर के 'मैनेजर' को एक पल में ढहा दिया।

रात को जब मामाजी सो गए, तो ईशान की नजर कोने में रखे उस पुराने लकड़ी के संदूक पर पड़ी। उसने उसे खोला, तो दंग रह गया। उसमें कोई खजाना नहीं था, बल्कि ईशान के बचपन से लेकर अब तक के हर खत, उसकी पहली सैलरी की रसीद और उसकी फोटो के वो अखबार के कतरन थे, जब उसने टॉप किया था।

संदूक के सबसे नीचे एक छोटी सी डायरी मिली। उसमें मामाजी ने लिखा था— 'आज ईशान ने पहली बार पैसे भेजे। मैंने खर्च नहीं किए, उसके नाम की एफडी कर दी है। पता नहीं शहर में कब उसे जरूरत पड़ जाए। मेरा भांजा अफसर बन गया, मेरे लिए यही सबसे बड़ा डिविडेंड है।'



ईशान की आँखों से आँसू छलक पड़े। वह जिसे 'कर्ज' समझकर पैसे भेज रहा था, मामाजी उसे 'प्यार' समझकर सहेज रहे थे। जिस बैंक का वह मैनेजर था, उससे कहीं बड़ा और अमीर बैंक तो मामाजी के उस छोटे से संदूक में था।

अगली सुबह जब ईशान जाने लगा, तो उसने मामाजी के पैर छुए। मामाजी ने हमेशा की तरह अपनी जेब से एक मुड़ा हुआ दस का नोट निकाला और ईशान की हथेली पर रख दिया।

"मामाजी, अब इसकी जरूरत नहीं है, मैं बहुत कमाता हूँ," ईशान ने रुंधे गले से कहा।

मामाजी ने हँसते हुए कहा, "पगले, यह तेरा मैनेजर वाला बैंक नहीं है। यह मामा का बैंक है, यहाँ से 'शगुन' लिए बिना कोई भांजा खाली हाथ नहीं जाता।"

ईशान बस में बैठा, तो हाथ में वह दस का नोट था और आँखों में समंदर। उसे अहसास हुआ कि जिंदगी के सबसे कीमती 'इन्वेस्टमेंट' पैसों के नहीं, बल्कि उन रिश्तों के होते हैं जो बिना किसी ब्याज की उम्मीद के हमें सींचते हैं। बस की खिड़की से पीछे छूटता गाँव धुंधला रहा था, पर ईशान का दिल आज अपने मामा के 'प्यार वाले बैंक' की अमीरी से भरा हुआ था।

यह कहानी हर उस भांजे के लिए है जो सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उन हाथों को भूल जाता है जिन्होंने उसे पहला कदम चलना सिखाया था। मामा और भांजे का रिश्ता वह पवित्र डोर है, जहाँ बड़े से बड़ा अफसर भी एक छोटा 'ईशान' बन जाता है।

✍ विलम कुमार झा  
सहायक प्रबन्धक  
शाखा - मधुवनी

कोयल अपनी भाषा  
बोलती है, इसलिए  
आज़ाद रहती हैं पर  
तोता दूसरे की भाषा  
बोलता है, इसलिए  
पिंजरे में जीवन भर  
गुलाम रहता है।

हिन्दी  
विचार

## जब बैंक बोलता है — डिजिटल युग में एक आत्मकथा



मैं एक बैंक हूँ। ईंट-सीमेंट से बनी इमारत नहीं, बल्कि विश्वास से गढ़ी गई एक व्यवस्था। मेरी पहचान कभी मोटी फाइलों, भारी तिजोरियों और काउंटर के पीछे बैठे चेहरों से होती थी। लोग मुझे सम्मान से देखते थे, पर थोड़ा संकोच भी रखते थे। समय बदला, लोग बदले और मैं भी बदला।

पहले लोग मेरे पास आते थे। अब मैं उनके पास पहुँच गया हूँ—मोबाइल की स्क्रीन में, उँगलियों के स्पर्श में, एक साधारण-से ऐप के भीतर। यह बदलाव अचानक नहीं हुआ। इसके पीछे वर्षों का अनुभव, सीख और आत्मसंयम छिपा है। डिजिटल होने का अर्थ मेरे लिए तेज़ होना नहीं, बल्कि ज्यादा भरोसेमंद बनना था।

जब कोई किसान खेत में खड़ा होकर भुगतान प्राप्त करता है, जब कोई छोटा दुकानदार देर रात अपने खाते की स्थिति देख लेता है, या जब कोई वरिष्ठ नागरिक बिना कतार में लगे लेन-देन कर पाता है—तब मुझे लगता है कि मेरा बदलना सार्थक था। तकनीक ने मुझे सुविधा दी, पर मेरी आत्मा आज भी सेवा में ही बसती है।

पर मैं यह भी जानता हूँ कि हर बदलाव के साथ भय आता है। डिजिटल दुनिया में खतरे हैं—साइबर धोखाधड़ी, डेटा की चोरी, अनजानी गलियाँ। इसलिए मैंने अपने कर्मचारियों को केवल सिस्टम नहीं सिखाया, बल्कि सतर्कता और जिम्मेदारी भी सिखाई। क्योंकि मुझे पता है, मेरी सबसे मजबूत सुरक्षा कोई फायरवॉल नहीं, बल्कि जागरूक इंसान है।

आज मेरी शाखाएँ शांत नहीं हुई हैं, वे परिपक्व हुई हैं। वहाँ अब सिर्फ लेन-देन नहीं होता, वहाँ समझ बनती है। कोई पहली बार मोबाइल बैंकिंग सीखता है, कोई ओटीपी का अर्थ समझता है। उस क्षण मैं केवल बैंक नहीं रहता—मैं शिक्षक बन जाता हूँ।

डिजिटल युग में मुझसे अपेक्षाएँ बढ़ी हैं। मुझसे पारदर्शिता चाहिए, गति चाहिए, और साथ ही संवेदनशीलता भी। मैं कोशिश करता हूँ कि स्क्रीन के इस पार भी इंसानियत ज़िंदा रहे। क्योंकि अगर तकनीक से भरोसा टूट गया, तो प्रगति अर्थहीन हो जाएगी।

मैं आज भी वही हूँ—जनता का बैंक। बस माध्यम बदल गया है।

मेरी भाषा अब कोड में है, पर मेरा संदेश वही है — मैं आपके साथ हूँ।

डिजिटल बैंकिंग मेरे लिए भविष्य नहीं, वर्तमान है और इस वर्तमान में भी मेरी सबसे बड़ी पूँजी विश्वास ही है।

मैंने लंबा सफर तय किया है—रजिस्ट्रों की खड़खड़ाहट से लेकर सर्वर की हल्की-सी ध्वनि तक।

हर दिन मेरे भीतर लाखों लेन-देन होते हैं, पर सबसे मूल्यवान वही रहता है जो दिखता नहीं—विश्वास।

तकनीक ने मुझे तेज़ बनाया है, पर मानवीय स्पर्श ने मुझे अर्थ दिया है।

मैं चाहता हूँ कि जो भी मेरे पास आए, वह केवल सेवा ही नहीं, भरोसा भी लेकर जाए।

स्क्रीन की रोशनी में भी रिश्तों की गरमाहट बनी रहे, यही मेरी कोशिश है।

समय आगे बढ़ेगा, साधन बदलेंगे, पर मेरा उद्देश्य नहीं बदलेगा—सुरक्षित, सरल और संवेदनशील सेवा।

मैं चलता रहूँगा, सीखता रहूँगा और बदलते समय के साथ खुद को ढालता रहूँगा।

क्योंकि अंततः मैं एक व्यवस्था नहीं, एक विश्वास हूँ—और विश्वास ही मेरी असली पहचान है।

### डिजिटल युग के पाँच संदेश

- मैं केवल इमारत नहीं, विश्वास की व्यवस्था हूँ; तकनीक ने मेरी आवाज़ को और स्पष्ट किया है।
- अब मेरी खिड़कियाँ शाखा तक सीमित नहीं—मोबाइल, ऐप और स्क्रीन पर भी मैं उपस्थित हूँ।
- हर लेन-देन के पीछे डेटा है, पर हर ग्राहक के पीछे एक कहानी भी है।
- डिजिटल ने मेरी गति बढ़ाई है, पर मेरा आधार अब भी भरोसा और पारदर्शिता है।
- मैं बदलते समय के साथ आगे बढ़ रहा हूँ—सुरक्षा, सुविधा और संवेदनशीलता के संतुलन के साथ।

## डिजिटल बैंकिंग : विश्वास के साथ बदलाव

डिजिटल बैंकिंग को अक्सर एक तकनीकी परिवर्तन के रूप में देखा जाता है—नई मशीनें, नए ऐप, नई प्रक्रियाएँ। पर वास्तव में यह परिवर्तन केवल तकनीक का नहीं, बल्कि सोच, व्यवहार और कार्यसंस्कृति का है। बैंकिंग का मूल उद्देश्य सदैव रहा है—भरोसे के साथ सेवा। डिजिटल युग में यह उद्देश्य बदला नहीं है, बल्कि इसके साधन बदल गए हैं।



एक समय था जब बैंक की पहचान काउंटर, पासबुक और लंबी कतारों से होती थी। आज वही बैंक मोबाइल स्क्रीन, ओटीपी और डिजिटल डैशबोर्ड में सिमट आया है। पर इस बदलाव के बीच जो तत्व स्थिर रहा है, वह है ग्राहक का विश्वास। तकनीक तभी सार्थक होती है, जब वह इस विश्वास को और मजबूत करे।

डिजिटल बैंकिंग का सबसे बड़ा लाभ सुविधा है, लेकिन उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि समावेशन है। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने बैंकिंग को उन हाथों तक पहुँचाया है, जो कभी शाखा तक आने में संकोच करते थे। जनधन खाते, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, मोबाइल बैंकिंग और डिजिटल भुगतान—इन सबने बैंक को आम जनजीवन का अभिन्न हिस्सा बना दिया है। आज एक किसान, एक छोटा दुकानदार या एक गृहिणी—सभी अपने-अपने स्तर पर डिजिटल बैंकिंग का उपयोग कर रहे हैं। यह परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं, सामाजिक भी है।

हालाँकि, यह सच भी है कि डिजिटल परिवर्तन अपने साथ चुनौतियाँ लेकर आता है। तकनीकी समझ, साइबर सुरक्षा और डेटा गोपनीयता—ये ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं। डिजिटल बैंकिंग में छोटी-सी चूक भी बड़े जोखिम में बदल सकती है। इसलिए डिजिटल युग में अनुशासन और जिम्मेदारी का महत्व और बढ़ जाता है। प्रत्येक कर्मचारी और प्रत्येक ग्राहक, दोनों की सतर्कता इस व्यवस्था की सुरक्षा कवच है।

यहाँ बैंक शाखा की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। डिजिटल बैंकिंग के विस्तार के बावजूद शाखाएँ अप्रासंगिक नहीं हुई हैं; बल्कि वे डिजिटल मार्गदर्शक केंद्र के रूप में उभरी हैं। जब कोई वरिष्ठ नागरिक मोबाइल बैंकिंग सीखता है या कोई नया ग्राहक यूपीआई का पहला लेन-देन करता है, तो उसके पीछे शाखा कर्मचारी का धैर्य और सहयोग होता है। तकनीक सुविधा देती है, लेकिन विश्वास शाखा में ही जन्म लेता है।

डिजिटल युग में नेतृत्व की परिभाषा भी बदली है। आज नेतृत्व का अर्थ केवल लक्ष्य तय करना नहीं, बल्कि टीम को बदलाव के लिए मानसिक रूप से तैयार करना है। जब वरिष्ठ अधिकारी स्वयं डिजिटल प्रक्रियाएँ अपनाते हैं, साइबर अनुशासन का पालन करते हैं और सीखने की प्रवृत्ति दिखाते हैं, तभी संगठन में परिवर्तन सहज रूप से स्वीकार होता है। नेतृत्व का यह उदाहरण पूरे संगठन की कार्यसंस्कृति को दिशा देता है।

यूको बैंक जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की संस्था के लिए डिजिटल बैंकिंग केवल प्रतिस्पर्धा का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय दायित्व भी है। वित्तीय समावेशन, पारदर्शिता और सेवा की पहुँच—ये सभी लोकतांत्रिक मूल्यों को सशक्त करते हैं।

अंततः डिजिटल बैंकिंग का उद्देश्य केवल लेन-देन को तेज़ करना नहीं, बल्कि बैंक और ग्राहक के बीच संबंध को और मजबूत बनाना है। जब तकनीक मानवीय संवेदनशीलता से जुड़ती है, तब बैंकिंग केवल सेवा नहीं रहती—वह साझेदारी बन जाती है।

राजा बाबू यादव  
वरिष्ठ प्रबन्धक  
शाखा - दरभंगा

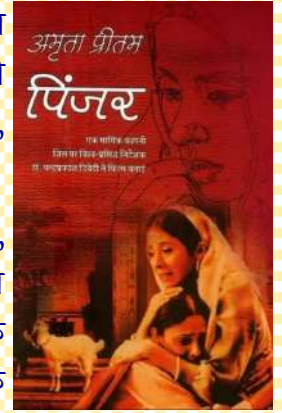
डिजिटल बैंकिंग का सार— भरोसे के साथ बदलाव

हिंदी-पंजाबी साहित्य में अमृता प्रीतम का नाम केवल एक लेखिका के रूप में नहीं, बल्कि संवेदना की सशक्त आवाज़ के रूप में प्रतिष्ठित है। उनका उपन्यास ‘पिंजर’ भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास के सबसे दर्दनाक अध्याय—विभाजन—की पृष्ठभूमि में रचा गया ऐसा साहित्यिक दस्तावेज है, जो मनुष्य, विशेषतः स्त्री, के अस्तित्व, पीड़ा और आत्मसम्मान पर गहन प्रश्न उठाता है।

‘पिंजर’ का कथानक विभाजन-पूर्व और विभाजनकालीन पंजाब के ग्रामीण परिवेश में घटित होता है। उपन्यास की नायिका ‘पूरी’ एक सामान्य, संवेदनशील युवती है, जिसका अपहरण कर उसे ‘रशीद’ के साथ रहने को विवश किया जाता है। यहीं से शुरू होती है एक स्त्री की वह यात्रा, जिसमें वह केवल सामाजिक बंधनों से नहीं, बल्कि अपने भीतर की टूटन और आत्मसंघर्ष से भी जूझती है। पूरी का जीवन ‘पिंजर’ बन जाता है—एक ऐसा ढाँचा, जिसमें साँस तो है, पर स्वतंत्रता नहीं।

अमृता प्रीतम ने इस उपन्यास में विभाजन की हिंसा को केवल दंगों और रक्तपात तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे मनुष्य की चेतना में उतरती हुई पीड़ा के रूप में प्रस्तुत किया है। पूरी की व्यथा किसी एक स्त्री की कहानी नहीं, बल्कि उस समय की असंख्य स्त्रियों का सामूहिक अनुभव है, जिन्हें समाज ने परिस्थितियों के हवाले कर दिया। उपन्यास यह प्रश्न उठाता है कि क्या स्त्री की पहचान केवल धर्म, परिवार और सामाजिक मर्यादा तक सीमित है, या वह स्वयं भी एक स्वतंत्र अस्तित्व रखती है?

‘पिंजर’ की सबसे बड़ी विशेषता इसका संयमित, परंतु अत्यंत प्रभावशाली भाषा-शिल्प है। अमृता प्रीतम की भाषा कहीं भी बनावटी नहीं लगती। संवाद छोटे हैं, पर अर्थ में गहरे। भावनाएँ मुखर नहीं, बल्कि मौन के भीतर बोलती हैं। यही मौन इस उपन्यास को और अधिक मार्मिक बनाता है। रशीद जैसे पात्र को भी लेखिका ने एकरेखीय खलनायक के रूप में चित्रित नहीं किया, बल्कि मानवीय अंतर्विरोधों के साथ प्रस्तुत किया है, जिससे कथा और अधिक यथार्थवादी बन जाती है।



यह उपन्यास स्त्री-विमर्श के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। पूरी का चरित्र धीरे-धीरे एक पीड़िता से एक स्वतंत्र निर्णय लेने वाली स्त्री में रूपांतरित होता है। अंत में उसका निर्णय—जो सामाजिक अपेक्षाओं के विपरीत है—पाठक को झकझोर देता है और यह सोचने पर विवश करता है कि सम्मान और मुक्ति की परिभाषा कौन तय करता है—समाज या स्वयं व्यक्ति।

जहाँ प्रेमचंद का ‘गोदान’ ग्रामीण भारत के आर्थिक-सामाजिक शोषण को उजागर करता है और ‘मैला आँचल’ स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद के सामाजिक यथार्थ को सामने लाता है, वहीं ‘पिंजर’ इतिहास के उस क्षण को पकड़ता है, जहाँ राजनीति, धर्म और समाज के निर्णयों का सबसे गहरा घाव स्त्री के जीवन पर पड़ता है। इस दृष्टि से ‘पिंजर’ इन दोनों उपन्यासों की परंपरा को एक नए, संवेदनशील आयाम में आगे बढ़ाता है।

आज के संदर्भ में भी ‘पिंजर’ की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। यह उपन्यास हमें याद दिलाता है कि विकास और प्रगति की हर कहानी के पीछे कुछ अनकही पीड़ाएँ छिपी होती हैं, जिन्हें समझना और स्वीकार करना आवश्यक है। यह केवल अतीत की कथा नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना की स्थायी पुकार है।

निष्कर्षतः, ‘पिंजर’ एक ऐसा उपन्यास है जिसे पढ़ना केवल साहित्यिक अनुभव नहीं, बल्कि एक नैतिक और मानवीय आत्ममंथन है। अमृता प्रीतम की यह कृति पाठक के भीतर करुणा, प्रश्न और संवेदना—तीनों को एक साथ जगाती है। कार्यालयीन पत्रिका के लिए यह समीक्षा न केवल साहित्यिक विविधता प्रदान करेगी, बल्कि पाठकों को गंभीर सामाजिक चिंतन की ओर भी प्रेरित करेगी।

## स्क्रीन के उस पार—ऋण वसूली का मानवीय पक्ष और डिजिटल की नई राह

सुबह के साढ़े नौ बजे हैं। शाखा खुलने से पहले ही एक बैंक कर्मचारी अपनी मेज पर बैठा है। सामने फाइलों का ढेर है—एनपीए खातों की सूची, नोटिस, फॉलो-अप कॉल की डायरी और आज की मीटिंग का एजेंडा। बाहर से देखने वाले को यह सिर्फ “ऋण वसूली” का काम लगता है; भीतर से यह संवेदनाओं, दबाव और उम्मीदों के बीच रोज़ का संतुलन है। बैंक के लिए यह वित्तीय अनुशासन है, लेकिन बैंक कर्मियों के लिए यह मन और मनुष्यता के बीच खिंची महीन रेखा है। डिजिटल बैंकिंग के इस विशेषांक में ऋण वसूली पर चर्चा इसलिए ज़रूरी है क्योंकि यह वह क्षेत्र है जहाँ तकनीक केवल सुविधा नहीं, सहारा बन सकती है—बैंक के लिए भी और उस कर्मचारी के लिए भी जो रोज़ कर्ज़दार और संस्थान के बीच पुल बनकर खड़ा रहता है।



*वसूली का चेहरा: आँकड़ों के पीछे का मनुष्य*

ऋण वसूली के लक्ष्य अक्सर प्रतिशत और तिथियों में मापे जाते हैं—कितनी रिकवरी, कितने खाते क्लोज़, कितनी कॉल्स। लेकिन हर खाते के पीछे एक कहानी होती है: किसी किसान की फसल बर्बाद हो गई, किसी छोटे व्यापारी का कारोबार मंदा पड़ गया, किसी परिवार पर अचानक चिकित्सा खर्च आ गया। इन कहानियों के बीच बैंक कर्मचारी को नियम और संवेदना, दोनों का संतुलन साधना होता है।

फोन मिलाते समय वह केवल “ग्राहक” को नहीं, एक व्यक्ति को कॉल करता है। कई बार सामने से नाराज़गी मिलती है, कई बार बेबसी। कुछ लोग फोन उठाना बंद कर देते हैं, कुछ वादे करते हैं और निभा नहीं पाते। कर्मचारी पर ऊपर से लक्ष्य का दबाव है, नीचे से ग्राहकों की स्थिति का बोझ। दिन के अंत में जब शाखा का शटर गिरता है, तो साथ में मन का बोझ भी घर जाता है।

ऐसे में यह सवाल उठता है—क्या तकनीक इस मानवीय दबाव को कम कर सकती है? क्या डिजिटल साधन वसूली को केवल तेज़ नहीं, अधिक संवेदनशील और व्यवस्थित बना सकते हैं?

पारंपरिक वसूली की चुनौतियाँ

पारंपरिक वसूली प्रक्रिया में कई स्तरों पर कठिनाइयाँ आती हैं:

डेटा का बिखराव – अलग-अलग रजिस्टर, एक्सेल शीट, नोटिस फाइलें। अद्यतन जानकारी जुटाने में समय लगता है।

मैनुअल फॉलो-अप – कॉल, विज़िट, नोटिस—सब कुछ कर्मचारी के व्यक्तिगत प्रयास पर निर्भर।

समय और दूरी – ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में ग्राहकों तक पहुँचने में यात्रा, समय और खर्च।

मानसिक दबाव – लक्ष्य का दबाव, ग्राहकों की नाराज़गी, और बीच में खड़ा कर्मचारी।

पारदर्शिता की कमी – कई बार ग्राहक को अपनी बकाया स्थिति स्पष्ट रूप से पता नहीं होती, जिससे संवाद कठिन होता है।

इन चुनौतियों के बीच कर्मचारी केवल बैंक का प्रतिनिधि नहीं, बल्कि एक मध्यस्थ बन जाता है—नियमों और वास्तविकताओं के बीच।

डिजिटल हस्तक्षेप: सहायक नहीं, सहभागी

डिजिटल तकनीक ऋण वसूली को मानवीय बना सकती है—यदि इसे केवल निगरानी के लिए नहीं, सहयोग के लिए अपनाया जाए। कुछ प्रमुख पहलू:

1. एकीकृत डैशबोर्ड : एक ऐसा डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म जहाँ कर्मचारी को हर खाते की अद्यतन स्थिति, भुगतान इतिहास, अगली किस्त की तिथि और ग्राहक की प्रोफ़ाइल एक ही स्क्रीन पर मिल जाए। इससे निर्णय तेज़ और सटीक होते हैं। कर्मचारी को बार-बार फाइलें खंगालने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

2. स्वचालित रिमाइंडर और संवाद : एसएमएस, व्हाट्सएप, ई-मेल और ऐप नोटिफिकेशन के माध्यम से ग्राहकों को समय पर किस्त की याद दिलाना। इससे कर्मचारी को बार-बार कॉल करने की आवश्यकता कम होती है और ग्राहक को भी समय रहते सूचना मिलती है। संवाद का स्वर औपचारिक और विनम्र बना रहता है।

3. डिजिटल भुगतान के सरल विकल्प : यूपीआई, नेट बैंकिंग, ऑटो-डेबिट, और मोबाइल ऐप के माध्यम से ग्राहक कहीं से भी भुगतान कर सकता है। कई बार ग्राहक भुगतान करना चाहता है, लेकिन प्रक्रिया कठिन होने से टालता रहता है। डिजिटल विकल्प इस दूरी को कम करते हैं।

4. डेटा-आधारित प्राथमिकता : एनालिटिक्स के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि कौन से खाते तुरंत ध्यान मांगते हैं, कौन से ग्राहक नियमित भुगतान कर सकते हैं, और कहाँ पुनर्गठन की ज़रूरत है। इससे कर्मचारी का प्रयास लक्षित होता है और अनावश्यक दबाव कम होता है।

5. डिजिटल दस्तावेज़ और नोटिस : ई-नोटिस, डिजिटल हस्ताक्षर और ऑनलाइन ट्रेडिंग से प्रक्रिया पारदर्शी और तेज़ होती है। ग्राहक भी अपनी स्थिति देख सकता है और समय रहते कदम उठा सकता है।

### कर्मचारी की पीड़ा में डिजिटल का मरहम

डिजिटल साधन केवल प्रक्रिया को तेज़ नहीं करते, वे कर्मचारी की मनःस्थिति को भी हल्का कर सकते हैं। जब सिस्टम स्वयं रिमाइंडर भेजता है, भुगतान का रिकॉर्ड स्वतः अपडेट होता है, और ग्राहक ऐप पर अपनी देनदारी देख सकता है, तब कर्मचारी “याद दिलाने वाले” से “समाधान सुझाने वाले” की भूमिका में आ जाता है।

अब उसका काम केवल कॉल करना नहीं, बल्कि ग्राहक को विकल्प बताना है—री-शेड्यूलिंग, आंशिक भुगतान, डिजिटल चैनल। संवाद का स्वर बदलता है। नाराज़गी कम होती है। कर्मचारी को भी लगता है कि वह केवल दबाव नहीं, सहायता दे रहा है।

### संवेदनशीलता और तकनीक का संतुलन

यह भी सच है कि तकनीक हर समस्या का समाधान नहीं। हर खाते के पीछे एक मानव परिस्थिति होती है जिसे समझना आवश्यक है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म कर्मचारी को जानकारी और उपकरण देता है, लेकिन निर्णय में मानवीय दृष्टि ही काम आती है।

इसलिए ज़रूरी है कि डिजिटल सिस्टम के साथ-साथ कर्मचारियों को प्रशिक्षण, मनोवैज्ञानिक सहयोग और स्पष्ट दिशानिर्देश भी मिलें। तकनीक तब ही प्रभावी होगी जब उसे सहायक की तरह देखा जाए, नियंत्रक की तरह नहीं।

डिजिटल बैंकिंग के इस दौर में ऋण वसूली को भी नई परिभाषा मिल रही है। यह अब केवल “वसूली” नहीं, बल्कि “समाधान प्रबंधन” बन सकती है—जहाँ ग्राहक, बैंक और कर्मचारी तीनों की भूमिका संतुलित हो। एक ऐसी व्यवस्था की कल्पना की जा सकती है जहाँ ग्राहक ऐप पर अपनी देनदारी और विकल्प देख सके, कर्मचारी डेटा-आधारित निर्णय ले सके, और बैंक को समय पर वसूली के साथ भरोसा भी मिले।

शाखा का शटर शाम को फिर गिरता है। कर्मचारी अपनी मेज समेटता है। आज कुछ भुगतान आए, कुछ वादे मिले, कुछ खाते अभी भी लंबित हैं। लेकिन फर्क यह है कि अब उसके पास एक स्क्रीन है जो बोझ नहीं, सहारा बन सकती है।

ऋण वसूली का काम हमेशा चुनौतीपूर्ण रहेगा, क्योंकि यह केवल पैसे का नहीं, परिस्थितियों का सवाल है। पर यदि डिजिटल साधन सही दृष्टि से अपनाए जाएँ, तो यह काम अधिक मानवीय, पारदर्शी और संतुलित हो सकता है।

बैंकिंग के इस नए अध्याय में तकनीक केवल दक्षता नहीं बढ़ाएगी—वह उस कर्मचारी की पीड़ा को भी समझेगी, जो हर दिन संस्थान और इंसान के बीच खड़ा होकर विश्वास की डोर थामे रहता है।

## फाइलों से फ़ोन और अब स्क्रीन तक

शाखा के पीछे वाले कमरे में रखी लोहे की पुरानी अलमारी आज भी वैसी ही थी—हल्की जंग लगी, किनारों पर उखड़ा हुआ पेंट और भीतर धूल से सने मोटे-मोटे रजिस्टर। अंचल कार्यालय में नई पोस्टिंग के बाद जब अरविंद कुमार उस कमरे में पहुँचे, तो उन्होंने अनायास ही एक रजिस्टर निकाल लिया। पत्रों को पलटते हुए उनकी उँगलियाँ ठिठक गई—साल था 2004, और नीचे नीली स्याही से लिखा था: “ऋण वसूली दौरा—ग्राम बहादुरपुर।”

वे मुस्करा दिए।

“कितना भागा हूँ इन रजिस्ट्रों के पीछे,” उन्होंने मन ही मन कहा।

अब वे क्षेत्रीय स्तर के अधिकारी थे। सामने लैपटॉप खुला था, स्क्रीन पर डैशबोर्ड चमक रहा था—किस खाते की किस्त लंबित है, किसे रिमाइंडर गया, कहाँ आंशिक भुगतान हुआ—सब कुछ एक क्लिक पर। पर स्क्रीन की इस सहजता के पीछे उन्हें अपने पुराने दिन साफ़ दिखाई दे रहे थे।

*पुराना समय: कंधे पर बैग, हाथ में फाइल*

तब वसूली का मतलब था—कंधे पर चमड़े का बैग, जिसमें नोटिस की कॉपियाँ, रसीद बुक और मोटी डायरी। सुबह शाखा से निकलते, बस पकड़ते, फिर साइकिल या पैदल गाँवों तक। हर घर तक पहुँचने में समय लगता था और हर दरवाज़े के पीछे एक कहानी होती थी।

एक बार की बात उन्हें आज भी याद थी। एक छोटे दुकानदार का खाता लंबे समय से बकाया था। शाखा से बार-बार निर्देश मिल रहे थे—“आज हर हाल में भुगतान की बात पक्की करके आना।”

वे गए। दुकान बंद थी। घर पहुँचे तो मालिक की पत्नी ने दरवाज़ा खोला। आँखों में झिझक और थकान थी।

“साहब, वे बाहर गए हैं काम की तलाश में... अभी स्थिति ठीक नहीं है,” उसने धीमे से कहा।

अरविंद के हाथ में नोटिस था, दिमाग में लक्ष्य का दबाव। पर सामने खड़ी उस महिला की आवाज़ में जो असहायता थी, वह कागज़ की भाषा से कहीं भारी थी। उन्होंने नोटिस दिया, तारीख समझाई और लौट आए। वापसी के रास्ते बस में बैठकर उन्होंने डायरी में लिखा—“ग्राहक की स्थिति कमजोर है। पुनर्गठन संभव।”

लेकिन शाखा में लौटते ही सवाल वही था—“कितना कलेक्शन हुआ?”

उस समय उन्हें लगता था कि वसूली केवल हिसाब-किताब नहीं, मन का भी काम है। हर कॉल, हर मुलाकात में थोड़ा-सा अपराधबोध, थोड़ा-सा दबाव साथ चलता था।

### तब और अब — वसूली की बदलती तस्वीर

#### तब

- कंधे पर फाइल और रजिस्टर, गाँव-गाँव दौरा
- नोटिस हाथ से देना, भुगतान का इंतज़ार
- रसीद बुक और डायरी पर निर्भरता
- हर कॉल में लक्ष्य का दबाव

#### अब

- डिजिटल डैशबोर्ड पर पूरी जानकारी
- ऑटो-रिमाइंडर और मोबाइल नोटिफिकेशन
- यूपीआई/ऑनलाइन भुगतान से त्वरित जमा
- बातचीत में दबाव कम, समाधान अधिक

बीच का समय: फोन और फॉलो-अप

धीरे-धीरे मोबाइल फोन आए। कॉल करना आसान हुआ, लेकिन काम कम नहीं हुआ। कई बार ग्राहक फोन नहीं उठाते, कई बार वादे पूरे नहीं होते। रजिस्टर से एक्सेल शीट तक का सफर शुरू हुआ, पर फॉलो-अप का बोझ अभी भी कर्मचारी के कंधों पर ही था।

अरविंद तब शाखा प्रबंधक थे। हर शाम सूची बनती—किसे कॉल करना है, किसे नोटिस भेजना है, कहाँ विज़िट करनी है। वे अक्सर सोचते—क्या कोई ऐसा तरीका नहीं जिससे ग्राहक खुद समय पर जान सके कि उसे कितना और कब चुकाना है?

आज का समय: स्क्रीन पर सिमटी दूरी

अब वही अरविंद एक नए दौर में खड़े थे। सामने डिजिटल डैशबोर्ड था। एक खाते पर क्लिक करते ही पूरा विवरण खुल जाता—कितनी बकाया राशि, कब आखिरी भुगतान, सिस्टम से भेजे गए रिमाइंडर और ग्राहक द्वारा किया गया आंशिक भुगतान।

उसी समय उनके मोबाइल पर एक नोटिफिकेशन आया— “ग्राहक रमेश यादव—आंशिक भुगतान प्राप्त।”

उन्होंने स्क्रीन पर देखा। यही वह खाता था, जिसके लिए पहले उन्हें तीन बार गाँव जाना पड़ा था। अब ग्राहक ने यूपीआई से भुगतान कर दिया था और ऐप पर अगली किस्त की तारीख देख ली थी।

थोड़ी देर बाद रमेश का फोन आया।

“सर, मैसेज आ गया था... जितना हो पाया, जमा कर दिया। अगले महीने और कर दूँगा।”

अरविंद ने सहजता से कहा, “ठीक है, ऐप में विकल्प देख लेना। अगर जरूरत हो तो किस्त का पुनर्निर्धारण कर देंगे।”

फोन रखते ही उन्हें एहसास हुआ—अब संवाद का स्वर बदल गया है। पहले वे याद दिलाते थे, अब विकल्प बताते हैं।

कर्मचारी का बदलता मन

दोपहर में अंचल कार्यालय की मीटिंग थी। युवा अधिकारी उत्साह से बता रहे थे कि किस तरह ऑटो-रिमाइंडर, व्हाट्सऐप नोटिस और डिजिटल भुगतान से वसूली बेहतर हो रही है।

एक ने पूछा, “सर, पहले के समय में आप लोग यह सब कैसे मैनेज करते थे?”

अरविंद कुछ क्षण चुप रहे। फिर बोले, “पहले हम सिस्टम थे। अब सिस्टम हमारे साथ है।”

कमरे में हल्की हंसी गूँज गई, लेकिन उनके शब्दों में एक गहराई थी।

उन्होंने आगे कहा—“पहले हर कॉल हमारे मन पर रहता था—किसी को परेशान तो नहीं कर रहे? अब ग्राहक खुद मैसेज देख लेता है, ऐप पर स्थिति समझ लेता है। हम बातचीत में समाधान पर ज्यादा ध्यान दे पाते हैं।”

### हर खाते के पीछे एक इंसान

- डिजिटल प्रक्रिया तेज़ है, पर संवेदनशीलता मानव की पहचान है।
- भुगतान में देरी के पीछे कई बार वास्तविक कठिनाई होती है।
- समाधान आधारित संवाद विश्वास बढ़ाता है।
- तकनीक सहायक है, निर्णय और व्यवहार मानवीय होने चाहिए।
- सफल वसूली वही है जिसमें संस्था और ग्राहक दोनों साथ आगे बढ़ें।

## एक छोटी-सी घटना

शाम को वे पुराने रजिस्टर वापस अलमारी में रखने गए। तभी एक युवा कर्मचारी ने पूछा,

“सर, इन रजिस्ट्रों का अब क्या काम?”

अरविंद ने रजिस्टर के पन्ने पर हाथ फेरा।

“काम तो अब कम है... पर याद दिलाते हैं कि हर खाते के पीछे एक इंसान होता है। डिजिटल हमें तेज़ बनाता है, पर संवेदनशील रहना हमें ही सीखना है।”

उन्होंने रजिस्टर वापस रखा और कमरे से बाहर निकल आए। सामने कॉरिडोर में वाई-फाई राउटर की नीली लाइट टिमटिमा रही थी—जैसे किसी नए युग का संकेत।

*अंत: आसान हुआ रास्ता, हल्का हुआ मन*

रात को घर लौटते समय अरविंद ने सोचा—वसूली का काम कभी आसान नहीं था और शायद पूरी तरह आसान कभी होगा भी नहीं। पर अब यह बोझ अकेले कर्मचारी के कंधों पर नहीं है। डिजिटल साधन बीच में आकर संवाद को सरल बना रहे हैं तथा दूरी कम कर रहे हैं।

अब वे किसी दरवाजे पर खड़े होकर संकोच से नोटिस नहीं देते; स्क्रीन पर स्थिति देख कर समाधान सुझाते हैं। अब उन्हें हर दिन बस और साइकिल से दौड़ना नहीं पड़ता; कई भुगतान एक क्लिक में हो जाते हैं। अब हर कॉल में तनाव नहीं होता; कई बार ग्राहक खुद पहले मैसेज कर देता है।

उन्होंने मन ही मन सोचा—

*समय बदल गया है। फाइलों से फोन तक और फोन से स्क्रीन तक का यह सफर केवल तकनीक का नहीं, मन का भी है।*

और शायद यही सबसे बड़ा बदलाव है—अब वसूली केवल लक्ष्य नहीं, सहयोग की प्रक्रिया बन रही है। डिजिटल ने रास्ता छोटा किया है, पर सबसे बड़ी राहत यह है कि इस रास्ते पर चलने वाले कर्मचारी का मन थोड़ा हल्का हो गया है।

रवि शंकर मिश्रा  
वरिष्ठ प्रबन्धक  
शाखा - फ्रेजर रोड



## “सुविधा से संतुलन तक: डिजिटल जीवन की नई समझ”

डिजिटल क्रांति के इस समय में स्मार्टफोन केवल एक उपकरण नहीं, बल्कि जीवन का स्थायी साथी बन चुका है। संचार, जानकारी, बैंकिंग, मनोरंजन और कार्य—सब कुछ अब इसी छोटे से उपकरण में समाहित है। यह सुविधा मानव जीवन को सरल और त्वरित बनाती है, किंतु इसके निरंतर और अत्यधिक उपयोग ने हमारे स्वास्थ्य और जीवनशैली पर ऐसे प्रभाव डाले हैं, जिन्हें अक्सर हम अनदेखा कर देते हैं। आज स्थिति यह है कि हममें से अधिकांश लोग बिना स्मार्टफोन के दिन की कल्पना भी नहीं कर सकते। यह हमारी दिनचर्या, व्यवहार और सोच का हिस्सा बन चुका है। हालांकि यह तकनीक हमें जोड़ती है, लेकिन इसके अत्यधिक उपयोग से हम स्वयं से, अपने शरीर से और कभी-कभी अपने आसपास के लोगों से भी दूर होने लगे हैं। इसलिए अब समय है कि हम इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करें—क्या हम स्मार्टफोन का उपयोग कर रहे हैं या स्मार्टफोन हमें नियंत्रित कर रहा है?

स्मार्टफोन ने जीवन को कई स्तरों पर आसान बनाया है। स्वास्थ्य और फिटनेस से जुड़े ऐप्स हमें व्यायाम, आहार और स्वास्थ्य की निगरानी में मदद करते हैं। चिकित्सा परामर्श अब दूरस्थ रूप से भी संभव है, जिससे ग्रामीण और दूरदराज़ क्षेत्रों के लोगों को विशेष लाभ मिलता है। आपातकालीन स्थितियों में यह तुरंत सहायता उपलब्ध कराने का माध्यम बनता है। डिजिटल बैंकिंग और ऑनलाइन सेवाओं ने वित्तीय लेन-देन को भी सरल बना दिया है। बिल भुगतान, धन हस्तांतरण, बीमा और निवेश जैसे कार्य अब कुछ ही मिनटों में पूरे हो जाते हैं। इससे समय की बचत होती है और पारदर्शिता भी बढ़ती है। इसके साथ ही, इंटरनेट की उपलब्धता ने स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवनशैली से जुड़ी जानकारी तक त्वरित पहुँच सुनिश्चित की है। इन सभी कारणों से स्मार्टफोन आधुनिक जीवन की आवश्यकता बन गया है।

सुविधा के साथ-साथ इसका अतिरेक कई समस्याओं को जन्म देता है। लगातार स्क्रीन देखने से आँखों पर दबाव बढ़ता है, जिससे आँखों में जलन, सूखापन, सिरदर्द और दृष्टि संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। खराब रोशनी में लंबे समय तक मोबाइल उपयोग स्थिति को और गंभीर बना देता है। रात में मोबाइल का उपयोग नींद की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी नींद के प्राकृतिक चक्र में बाधा डालती है, जिससे अनिद्रा और थकान जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं। पर्याप्त नींद न मिलना आगे चलकर कई दीर्घकालिक स्वास्थ्य जोखिमों का कारण बन सकता है। शारीरिक स्तर पर भी इसका प्रभाव स्पष्ट है। लंबे समय तक झुककर मोबाइल देखने से गर्दन और पीठ पर दबाव बढ़ता है, जिसे सामान्य भाषा में “टेक्स्ट नेक” कहा जाने लगा है। इसके अतिरिक्त हाथों और कलाई में दर्द, कंधों में जकड़न और गलत बैठने की मुद्रा से जुड़ी समस्याएँ भी सामने आती हैं।

स्मार्टफोन का अत्यधिक उपयोग केवल शरीर ही नहीं, मन और व्यवहार को भी प्रभावित करता है। लगातार नोटिफिकेशन और सोशल मीडिया अपडेट की आदत व्यक्ति की एकाग्रता को कम कर सकती है। लोग छोटी-छोटी सूचनाओं पर तुरंत प्रतिक्रिया देने के अभ्यस्त हो जाते हैं, जिससे गहन अध्ययन या शांत चिंतन के लिए समय कम रह जाता है।

जिस प्रकार वित्तीय अनुशासन और कार्य अनुशासन आवश्यक हैं, उसी प्रकार डिजिटल अनुशासन भी आज की आवश्यकता बन चुका है। तकनीक को साधन की तरह उपयोग करना चाहिए, न कि जीवन का केंद्र बना देना चाहिए। यदि हम सजग होकर स्मार्टफोन का उपयोग करें, तो यह हमारे जीवन को समृद्ध बना सकता है—ज्ञान बढ़ा सकता है, कार्य को सरल बना सकता है और लोगों को जोड़ सकता है। पर यदि इसका उपयोग बिना सीमा और विवेक के किया जाए, तो यह हमारी ऊर्जा, स्वास्थ्य और समय को धीरे-धीरे प्रभावित कर सकता है।

डॉ. इंद्र कुमार यादव  
प्रबन्धक  
शाखा - बहादुरपुर

# यूको राजभाषा मिशन

“ राजभाषा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट श्रेणी  
का बैंक बनने हेतु,

बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों को  
राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में,  
प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना द्वारा  
दृढ़तापूर्वक सक्रिय कर एवं

राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित कर,  
नवीनतम प्रौद्योगिकी को राजभाषा से जोड़कर,  
बैंकिंग को जन-उन्मुख बनाते हुए  
बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करना ”

यूको बैंक  
(भारत सरकार का उपक्रम)



UCO BANK

(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

# यूको राजभाषा प्रतिज्ञा

“हम, यूको बैंक के स्टाफ-सदस्य, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि हम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु निरंतर कार्य करेंगे।

हम अपने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने एवं उसकी स्थिति को उन्नत करने के प्रति सदैव सजग रहेंगे।

हम अपने सामूहिक प्रयास से राजभाषा के क्षेत्र में अपने बैंक को गौरवशाली बनाएंगे।

हम स्वयं राजभाषा में दृढ़तापूर्वक कार्य करेंगे एवं दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के उपबंधों एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करके

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी यूको बैंक को सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक बनाएंगे।”

यूको बैंक  
(भारत सरकार का उपक्रम)



UCO BANK  
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust